

नं. ३८५ ब

प्रबोधचन्द्रोदय भाषा

१६४ पत्र

कर्त्ता - गुलाबसिंह

सं. १८८०

5406

F. = 164.

Complete.

(प्रबोधचन्द्रोदय भाषाटीका (नाटकम्)
पत्राणि १६४ (सम्पूर्णम्)



ॐ सतिगुरप्रसादि ॥ ॐ श्रीगणेशायनमः

दोहा ॥ ॐ गौरीपुत्रंगणेसंपदंवंदौं·
वारंवार ॥ कारजकीजैसिधंममदेहु·
सुबुधउदार ॥ १ ॥ जाकेनामंप्रतापतैंज·
लप्रमैलनताहि ॥ वहिंगुनाइकेंदास·
केंसदावसैमनमाहिं ॥ २ ॥ दोहा ॥ गुरना
नकंगोविंदगुरंजासमंध्यांनंनकोइ ॥ अ
भिवंदनपदकमलंतिनंजोरंसदाकर
दोइ ॥ ३ ॥ दोहा ॥ भारतभूमंपुनीतनपदंत
पोंज्ञानअवतारं ॥ मानसिंघगुरकोंनमों
तारणकरणसार ॥ ४ ॥ नराजछंद ॥
प्रबोधचंद्रनाटकेंसवोधग्रंथमैंकरों ॥ अ

लैख साथ संग के विचार चित मैं धरो ॥ स
नै पढ़ै सुजे जन तै निवार मोह बंधनौ ॥ ल
है अपार मोष को टुटै समस्त फंधनौ ॥ ५
सवैया ॥ भूपन बोध सु बोध न दीप तिको
तिक माहि रहै लपटाए ॥ बोध बिना जग
मोष कहां है संसंतन मैं शुभ वेद बताए
अंत समै यम दीन करै तिन है रस हांक क
ढांइ सहाए ॥ बोध उपाव न है तन हैनो न र
नाहिन के य है ग्रंथ बनाए ॥ ६ ॥ सवैया ॥ भा
न मरीच सुनी रस मैं पुनि जांच अज्ञान जग
त बनायो ॥ वायु अकाश सु पावक नीर म
ही पुनि लोक सुती न उपायो ॥ जाहि पिषे

चे॰
प्र॰ प॰
ना॰
२

स्वर्गस्थापजिमेंजगफेरसभेंतितनम्ताहि
बिलायो॥ उज्जलध्यानमबोधमोहेहंसथा
नंदसोउरमांहिध्यायो॥७॥ सवैया॥ प्रति॰
कोजेतनसनातनजोजगबयापरहींसभ
मांहिहसाईं॥ बिदमांतिबिषेश्रुतिभास
तहैहतसंयमकोजिहमानंदताईं॥ बि
दहूतिनोयुमवायभलेब्रमलंयहतेश्र
तिउचबलाईं॥ द्विगनीमरबिध्याजहभा
लबिषेसिवसेंजमभेंवनहथापदिहाईं॥८
दोहा॥ कीरतनवरमांनामजिहभूपतिब
डेरमाल॥ ताहिसभामहिविमलमति
ध्याहिध्यानगुपाल॥१॥ दोहा॥ वरम्भपं॰

कंनाटकंतहांभयोसहभांमफार॥जा
कोहेरंसुतानंलहिंभपभूपंभवपार॥९
दोहा॥ याकोंसुनेंजेकांनमेंनीकेंचीतंल
गाइ॥ ग्यासुरसंपतिहरंतजिवेगंसुतानंब
झपाइं॥११॥ सुत्रधारोवाच॥ सुपतनीप्र
ति॥ सवैया॥ बझंबातनिकोंककुंकांम
नहींसुबंयाइंसुमोहियपालदई॥ सभंभू
पतिजागुकटांमणाकैंपदपंकजंग्यारती
ग्यानकई॥ प्रबलारिसमूहमहीपनकें
उरपाटनकोंनरसिंहमई॥ बलंभूपतिः
सिंधुपसीयरतीरनंफेरंवगाहंउथारंल
ई॥१२॥ दिगनारिविलासनिकांननमेंजिह

वे॰
ग्र॰ध॰
ना॰
३

3

कीरतिके सुनि टेक बनाए ॥ सभ दिगजन क
न सुनाल बडे ॥ विथ नाहि सुफालन पोन
पजाए ॥ तिह संगामि लेश्रुतिनाचत है भ॰
वताहि प्रताप सुनाल बढाए ॥ ३ ॥ न श्राप॰
गुपाल सपञ कहयो वञ नाटक भूपति
देञ दिषाए ॥ ४ ॥ दोहा ॥ सहज सुहि रद
सुभाव यह कीरति बरमा भूप ॥ नाहि तउ
दसथ्यो कीयो दिगजय परम सरूप ॥ ५ ॥
नाविषाद मुंबञतन भप ब्रह्मानंद हमाय ॥ वि
विधविषै रसपम संकरि भप मनोज विक
र ॥ ६ ॥ नाबिषाद हषनि मनो वामसदंपवि
नाइ ॥ ह्रतनह्रतन भप सराज हम भूपति रा॰

जेहिवारं ॥ १६ ॥ सवैया ॥ प्रसिथंप्रमानन
भूपतिकेसुबिषषबलीनृपमारगिराप
।रक्षपालकरीसगलीथरनीपुनियाहि
केसीसहैक्षत्रफिराप ।स्रुपयोनिथंसेष
लयाहृथराम्रिरिभूपनकेरनराजटराप ।
रसंसांतिप्रयोगनिवेदनेकैंजगश्रापिवे
नाटककेरसभाप ॥ ७ ॥ कवित्त ॥ प्रबोधचं
द्रनाटकेसुग्याहिनटनोहिछितिगाहकसंषि
हुष्यापजोईसूरबंबनायोहै ॥ कीरतवरम
देवकेसमीपसोईनाटकसोहैरनकोभूपन
कोमनउमगायोहै ॥ सुनोसुजधारतमप्रम
टिविचारकहोसभाहूंसमेतविदकोतका।

चं.
प्र. प.
ना.
४

5

सहायो है ॥ सुनि कै गुपाल बाक सूत्रधा
र बार बाकें नाटक के हेत निज नार कों बु-
लायो है ॥ १८ ॥ नेपथ्य कौं उत्तर निहार कै उ
कार कहयो आर्य ये सुन्या उइन न बीन नटी
आई है ॥ आर्य ये सु कौन काज मोह कों बु-
लायो आजु कौ जीप सु काज प्रबल बैर कौं
लगाई है ॥ सूत्रधार नाहि कोउ बार पुनि पु-
कहयो आर्य ये अजान न तहि जा हि न बुलाई
है ॥ नाटक प्रबोध चंद्र चंद्र मा समान जग
दीजी पदिषाई यो गुपाल मन आई है ॥ १९
भूपति विपल बल मोई नत्र अनजाना-
पावक प्रताप बन संग ते ।

बछायो है ॥ नाहिकी सुमालनी नभोनमैं
विसाल बाछी की रति को पुंज लोकन्नी
न है मैं गायो है ॥ लीनें चंद्रहास पति कूल
नृपनाम करं जीन कै गुपाल सुनें रे सुठि
गायो है ॥ साम राज राज को अभिषेक कै
न फेर जग की रति वर मदें भाल मैं क
गयो है ॥ २० ॥ सवैया ॥ रणरंग महीप स
नामनं या स्त्र बलों नभ घुंडनं ताल बजावै
सुलिकै कछुकिं गं कपोल लटी सुपिसा
चनं यात हिंन तदिखावै ॥ कविकें भसुंद
गनिपोन बली प सिना दयनें कसपीट स
नावै ॥ यहभां नसुतो नटनी जगमैं रणरं

प्र॰
चं॰ प॰
ना॰
५

गंमहीपबलोजसुगावै॥२॥ रसंसोनपसे
नविनोदनकेहितहैनटनीसुगुपालबु।
लाए॥ सबयाहसभावहनाटकजोयवं।
सांगभलेहमदेहिदिखाए॥ नटनीनबोए
झंकहयोभरताहितसांगनमानबलेह
मंगाए॥ पझंझाहिसबबेभंबसेमननमेहन
झारयपंगुपालसुभाए॥३॥ निजप्राक्रम
केरणरंगमहीनिजमंडलभूपनकेसम
गाए॥ पुनिकानलोनानकबोवंयहूरणा।
मंडलमैसरंगेयवंबलाए॥ तिनबाननके
प्रतिबिंबनविषमैतरंगनकेबझपुंजनिगा
ए॥ निजप्राग्रयथारमहीपसेगजको।

टिनिकोटिसुभमरलाप ॥२३॥ पैदलसै
निसुषीरनिथीभुजमंदरघातनसुबयाक
लकीनी ॥ सुनिमैनिपयोनिपकोमय
कैबलभावविजैलषमीजिनलीनी ॥ जि
नकेरणकीधुनिबुंदसभैश्रवलोजस
कीरतिगांहिनिबीनी ॥ ममसातिविषेति
नकीमतिआरयमोहकहोंकिहभानि
सुभीनी ॥२४॥ सूत्रदात्रोवाच ॥ दोहा ॥ ब
लिणजोनिसुभावनेसमसरूपजगमा
हि ॥ कारणणाइविकारभजपुनिनिज
रूपसमाहि ॥२५॥ नृपकुलपलैक्रिसा
तुममचेंदिपतीजगआहि ॥ चंद्रवंसन्

वे॰
प्र॰ध॰
ना॰
६

पंगराजकोहरकीयोगुनिनंनोहि॥१९॥वेदव
संनृपराजहितउदमकीयोगुपाल॥मारव
विरोधीथिरकीयोगाजगुपालदिवा॥२०

सवैया॥ कपालनंप्रभंजनंषाभंभयोसव
नाथनिजियुसभंसेलदबाय॥क्रुतकारय
केरंगहेथिरनानिजवेलिकिभीनरिंग्रा-
पंबराय॥भगावंतनकेघ्रमजपनरंजेसभथ्र
ननकेहितप्रेमबडाय॥नरमंडललैप्रव
नारमहींक्रुतकारयतेरमंसोतिलगा-
य॥भृगनंदननामकोभामनिपेषसबा
हजबारंइकीमृषपाप॥नृपसोगननी
रसमासंवमांवऊपंकमईनरनीमरनाप

६

नृपनाहिकुमारसबुद्धिनेलोककह्योवि।
तुयाहकुकारचलाय॥ यहभारउतारउचा
रकुलेंनृपसांतिभपंतपमाहिलगाय॥२
दोहा॥ परमंराममनिमश्राहियरहुतका
रयजपाल॥ परमसांतिनिष्टामजीरसमें।
बकेरसाल॥३॥ जीतनविवेकसमोहतेंतोंबो
ध्यउदेजगमाकीन॥ जीतकरगोंबलराजनति
मकीरनिवसमांटीन॥४॥ अथनेपथका
लकला॥ सवैया॥ बीचकिनातकिबात।
सुनीसुमनोजबलीयहकाननमाही॥ को
पभरेसुख्यपढ़कहीनटनीचसुबोलत।
योसुखमाही॥ जीवततेंहीहमरेजगमेंतुम

वे·
प्र·पं·
ना·
७

मोहकोहारकहेजनमाहो॥पापमित्रुष
विवेकहकोजनडेमूलउषारदयोभवमाहो १२
सुनिबातमिलषेडरयोमनमैगुनिमंश्रम
हेरसुनातिमलायो॥सतकंठभुजायनपी·
नकुवालहसंगरोमेचयनेगसुहायो॥ज
गमादनसोभग्रपावनीमदेहूमतेनेव
लेयलमायो॥अबभागचलेरहेबोहते·
सुनिकैममवाकमनोषुतमायो॥ज्यो॥रम
भाषतजीरंगभूमतिनोनबेयारमनोजप
वैसीकियो॥अलिकैकरनीलकपोललटी
रतिकंठविषेहसिहायरयो॥हगकेजव
छाइउटाइभुजामतिनायमहाअकोयक

यो ॥ भरनाथमपापमज्ञीवनमेरतिनाहि
विवेकमहकहाभयो ॥ ३४ ॥ तबलोमनमा
हिविवेकरहेसभभ्रागमतउपजयोइह
जोई ॥ जबलोनहिनीलसरोरहमेहगोना
रिकटाषलसेसरकोई ॥ नृपजीनतजे
नवघंदमहीघरनारिभजेकरजेभमहेरा
ई ॥ धीलजहाग्रहउवबनेगजरंतनमे
वेमहेसजमवारी ॥ मधिविराजतचंदक
लोममवारिजनेनमहतूननवारी ॥ भूषन
चंपकहारचनेननचंदनकंकुमगंधउ
दारी ॥ चंदउदेनमहीभपनिमिमाहि
सिसीसमनोजकीवारी ॥ ३६ ॥ इहग्याग्य

चं.
प्र.ग्रं.
ना.
८

मोहजयंत मदाइन थाइ मले जगां आदिब
लीको ॥ इन हो बनै कौन बिबेक इहै इन.
बोध उदै न हि होत कलीको ॥ जन नैआ बन
की जग कौन कथा धृत मै पम नो जनन जा
इ गली को ॥ हग कं जंफिराइ पिषे जब नी
चितै यो तरं फे जन न मी नथ ली को ॥ ३७ ॥ र
तउवाच ॥ दोहा ॥ अब यह उचं सुप्रतिबली
भाषे सुनी सुनीको ॥ महामोह भूपाल ।
को या जग में विवेक ॥ ३८ ॥ कामोवाच
सवैया ॥ तवं नारि स्वभाव तें संक भई इत
पषन ते हम ना हि डरे ॥ पिषयंद पिकूल
सराम तंत्रो मंत्र मैं कर भीतर आपयरे

जनंतदर्पिण्याइंसमोहिंउलंघिमहूंवति
धीरजनमाहिंथरे॥ सुनुवामंउत्तूसुवदैते
सभैजनभीतरहैवसमोहकरे॥ ३८॥ दे
हा॥ जानतंकामंनंनारिकडूसिंडीरे
षवनमाहिं॥ मोमरचीनंप्रमायौंसुमा
योभूपगृहमाहिं॥ ४०॥ तांकीकथासंषे
पतेकहौंसुनोमनलाइ॥ वामंउत्तूंसंसा
मिटेतोहिनिषलडरजाइ॥ ४१॥ चौपई॥
लोमपादइकभूपतिभारा॥ जाकोजस
सभभौनमझारा॥ दसरथकोवहमीत
कहीजे॥ जाकोहरषमंगलकीजे॥ ४२
ताकोदेसमुवडुविमस्यारा॥ वरषाहोइ

7

नताहिमकारा ॥ ताकीप्रजाडुषीसभैप्रसी
नपतस्थलपंजलभक्कलीजैसी ॥ ४३ ॥ वि
प्रजेतनिकीभूपवुलाए ॥ वरषाहोइहैको
नउपाए ॥ विप्रनबहुविधकीनविचार
भूपतिकोयहभांतिउचार ॥ ४४ ॥ सिंङ्गी
रिषवनभीतरजोहै ॥ आइहैहोतबवर
षाहोई ॥ वहन्रिपपेषमहाउतिगयानी ॥
आवैकिहप्रकाररजधानी ॥ ४५ ॥ लेन
नताकोकोईजय ॥ आपध्रगानितेस
भउरपाए ॥ नबतिनवारवधूसबु
लाई ॥ दानमानकरणासबिदाई ॥
॥ ४६ ॥ सिंङ्गीरिषवनजाहिप्रसारा

ताकों ल्यावें नगर मझारा ॥ सुनि केकइ बार

बधू सु कुलानी ॥ आपसु रानि नै सुतिड

रपानी ॥ ५७ ॥ पहु भूपति की आइसु जोई

मेटि न सकै केकई चित सोई ॥ तब तिन प

कउ पाइसु चीनौ ॥ नौका बांध समथं इलो

कीनौ ॥ ५८ ॥ ता मैं रंभा पुंजन जवा पं लाइ

कवण सुर फल लाप ॥ कहुं जल बीक हुं

सु छूणा ॥ कहुं सु बूंदी रवी यसूणा ॥ ५९ ॥ दो

हा ॥ कुतन मैं बेलन तहि हैं रवी फूल पान तब

कु भाइ ॥ लाची दाणों कीन तहां रची सुदाख

बणाइ ॥ ६० ॥ चौपई ॥ या बिध याइ सु देरं बा

ला ॥ माई तहां जहिं बिपन बिसाला ॥ सुनि ।

वे.
ग्र.थ.
ना.
१०

10

थाअमतेकिंचतनहरी ॥ नोकायावीनी
हराहरी ॥ ५१ ॥ घाउमवरषनकीवडबा
ला ॥ गाईतदांजहिमुनीविसाला ॥ लाइं
करणपूरफलजेते ॥ पातपलामथरेम
भतेते ॥ ५२ ॥ मिंढीविषवहितैनमिलाप
थानतिहमुषवेदथलाप ॥ पगानूपरथ
तिमनीसजबही ॥ तैनउथाबेमुनवरनब
ही ॥ ५३ ॥ मुनवरजानबंधनाथारी ॥ अरघ
पादहितलायोबारी ॥ तानिकानबमुष
पजवषाने ॥ हमविषवरनहिकुहेसथा
ने ॥ ५४ ॥ याघोनीकनवरनघषाते ॥ हमरे
तपबनफलमुषडागे ॥ करणपूरअरला

हूं भाए ॥ सिद्धी रिष केसवि विविगस्याए ॥ ५५

षाईन लेबी लाचीदाने ॥ ग्रहो स्वारथ श्रुति

श्रुषो वषाने ॥ मिल करंगनि को गाइनक

रे ॥ श्रुन बरजाने बेद रचे ॥ ५६ ॥ न्रम रे श्रुष

मेरा नमकरंदा ॥ बेद पुनीउ रजने ग्रनंदा

प्रदक्ष मजटाय ग्रष्ट्र बध्यारी ॥ ग्राप पछांई

जो श्रुषचारी ॥ ५७ ॥ यांविषनि रषे तो श्रुष

डोगा ॥ जैनों निहचिते हृदं रचको रा ॥ ग्रहो

हमारे भागहृन ए ॥ प्रइस्रुन ब्रह्म लोक

ते ग्राई ॥ ५८ ॥ या के बल कल श्रुमे सोहै

तइतन पुजन नुमैं मन मोहै ॥ बन फल मि

हष्ट्र पुर्य्यु निवेदा ॥ मन को निषलें मिलावे

वे. प्र. पं. ना. ११

हेदा ॥ ५४ ॥ संदरसीमंजदाग्रधिकारी ॥ म
नोविरंचमहाघ्यसवारी ॥ नचकोतेजभा
लमेदमकै ॥ किरणोमहितमनोमसिव
मकै ॥ ६० ॥ हेमजनेकृयाकेअंगा ॥ सर्वगोष्ठ
लसोभेसरवंगा ॥ अहोपितापफलदितवा
नवाप ॥ जाकेदरसनतेनाहितभय ॥ ६१ ॥ वि
षयागामनमौमसरकोजान ॥ वावरयुत
हिकीउोपिआन ॥ बहिआई तीकाकेपा
गुनवरआयोआअमसाही ॥ ६२ ॥ सिंदीसि
षमदुआइनिहारा ॥ विककवेनवेदडवा
गा ॥ अगनिहोत्रकीअगनिमदजाई तादि
जगाईनिमकोमाई ॥ ६३ ॥ वावरयुजिह

तेश्यामधारी ॥ दृष्टनहों सिंडी विषधारी
पूछयोपिनाकहामतिगाई ॥ पठेनबे
ददनहीकुतनकरई ॥ ६४ ॥ सिंडी विषनबबै
नउचारे ॥ पिनाकनेककुभागाहमारे
ब्रह्मलोकतेछनबरत्रण ॥ नाहिसमम
रथुषनिमण ॥ ६५ ॥ ताकोहूपनिहारयो
जोई ॥ सबलोचीनविनायोमोई ॥ कोम
लबलकलननपैमोहे ॥ दोदोसिंगउर
नमननमोहै ॥ ६६ ॥ सीमंजटाकोमलत्रत्रे
सामा ॥ भालतिलकदाटकोछिगादा
मा ॥ नाकककरनमैखिद्रमकीने ॥ स्वर्गी
फूलतामैगुहदीने ॥ ६७ ॥ नैनसरोजदया

12

ण्यो॥ सिंधीदिषापिषमोलक्रुकायो॥ त्र
मस्त्रपनैनपविपनमंफारी॥ मोहिलि
चालोकरणायारी॥ २१॥ नवंसंगवलयो
श्रुनीवसेमे॥ प्राननिसंगजीवंजगजै
मे॥ नैनकटाक्षम्रक्षवडिकपोला॥ नि
रषभयोदिषकोमननोला॥ २२॥ ताकी
मंदगतीक्रुनकारा॥ ह्रनिह्ननिदिषम.
नभजैविकारा॥ नैकाभीनवैयैजब
ही॥ वजतैलोमणाटश्रवनबही॥ २३॥
श्रुनवरनगारंजवैपगुयारा॥ वरषाभई
सनदाश्रपारा॥ याविथंनपंकोनाहि
प्रभाउ॥ श्रवलापीनिभयोत्रुनिराउ २

वे.
ग्र.थ.
ना.
३

13

सोतोभूपतिदुहिताजोई ॥ ताहिवरीउ-
रभीतरसोई ॥ जाकीकथाबहुतविस-
थारा ॥ कहांलगेममकरोउचारा ॥ ७६
दोहा ॥ मानकीमानतीकहांदेवन
मैंपरधान ॥ त्यागेघरमैंछिणएक
मैंचलगावेबान ॥ ७७ ॥ सवैया ॥
गोतमनारिसुजानिरहेसुरजाइभयो
सरमोहवलायो ॥ वेदपठेचतुरानन
जोगतिकेहितसोउहितापुनयायो ॥ कौ-
तुअपंथनगाउधरेजगमोमरजांहिको
चीतभ्रमायो ॥ इंद्रभनीगुरकीअबलाउ
दमोमनताहिकैबीचपायो ॥ दोहा ॥ सोवे

धकेअबलादहनेनपीबडेबलवान॥गु

लाबसिंघवैरागकोकरेमूढअभिमा

न॥१८॥वसिंतउवाच॥सवैया॥सतसाव

धधदपितैअजमैजगजीतनकोबहु

रापधरे॥नगहोहिमहाइकजाद्दिब

लीशनितायधिनेबलवंतडरे॥सतीये

धमस्यातिकेआरैबजीवविवेकमहा

इकवेदरवे॥वफजेनउचाइकरेसनि

धीरहतेअभैहमनीतडरे॥२०॥कामो

वाच॥सवैया॥भामनिमाइविवेकहके

समस्यातिकेआरैअमानसनापतेरै

गमहीपहिलेहमनेसबठौरठौरपटि

वै॰
प्र॰ य॰
ना॰
१४

14

तेसुदरबाण॥ कौनग्रहेजगभीतरिमोह
मजीवतनाहिकोनामग्रलाप॥ वामउ
ह्रतजिबिनसरदानमकौमनमैग्रहिने
उवणाप॥ ८१॥ दोहा॥ कोपग्रगारीबहे
नोकौनग्रहिमानारि॥ ब्रह्मचरजकोमे
ह्रनेषिनमैजरोमारि॥ ८२॥ लोभमनबै
करमैथरेचंदहासबलधार॥ सतग्रस
तेयमग्रहमभमनिगुपनिहार॥ ८२॥
सवैया॥ यमनेमग्रासनप्राणायममेप्रति
हारबलीजगध्यानलगाप॥ धारणाग्रौ
रसमाधिमहनेचितहीरउकामनेनौम
पजाप॥ चितभीतरपंचविकारकरोडन

कोजइमूलमलैरउठाए॥इनजीतननहे-
नरचीयबलायमनेमनबैहमरैवमय्या
ए॥छ॥हरिबिलोकननाबिनकोनाहि
समभाषनहूवरहे॥हासबिलासनंकेल
यलिगाननाहिइकेतसबातिकहे॥ज
नसं[illegible]यमवंतकहावतजेतजिसोथन
योबनजाइबहे॥बिनमाहिबिनाइजो
नवतीषिणमैमनताहिबिकारगहे॥प ५
मोहसमानसमानसंमदंमनयापरि
लोभयलाए॥फायमादिबजीरलए
बहिकानइकेतसमेइदिजाए॥मोह
महीपयथमबजीरयमादिकगोए

वे॰
ना॰ प्र॰
प॰
१५

लयेतिनपाए॥ जोयमनेमकहेजगमैंह
तिकेहितनाहिंसुलोकहिखाए॥ ७॥ व
तिउवाच॥ दोहा॥ शमदमओरविवेकले
कामक्रोधमदमान॥ मैंसुनयोनिजका
नमैंएकोजनमस्थान॥ ८॥ काम[illegible]उवाच॥
सवैया॥ उतपतिकोथानसुएकयहैम
नमेंजगभीनरनानचलाया॥ हमहैंपु
निभ्रातविमानसुनोवरहैगोएप्रकारबने
सबगाया॥ सुनसुरवरईसबसेवकियोनि
जनाहिवखाननतनाहिंसमाया॥ जिननें
उतपतिभईहमरीमननामकहीसुन
नाहिंउपाया॥ ८८॥ मननतीनउलोकमें

15

ष्यामरवेपुलिननमाहिंविषेकलेलदोउपाई।
मनलपकेसहनकहैपतिनीसुनिहतन
ष्याजगहसमगाई।मोहप्रधानप्रहन:
रवीकुलतीनऊलोककनमाहिंफिलाई।
सविवेकप्रधाननहतनजनीकुलसोवि
रलीजगमाहिंचलाई॥५९॥ रतिउवाच
सवैया॥ सुनश्यामयजोइहभांतिपहेज
गभीनरिपकसुनानउमारा।किहका
२८ गगाबैभयोनमरोयुजमीनकरोममप
ऊचारा।भानननमेंइहभांतिसबैकन
मोहममयोयहकानमफारा।कवि
सिंवगलाबकहैवतिनाहिसुगतिबेर।

वे.
प्र.प्र.
ना.
१६

क्रुकारणभावा॥ ४॥ कामोवाच॥ सवै
या॥ जेइकआमिषतेनिपजेतिनवैस
प्रभिथकरयोजगमाही॥ भूमिनमिन
लेर्तेक्रुवर्णोडवभूपषेजिनकेरणमा
ही॥ भावनषंडकीनूतननमतिभईविप
वाजिनसंगारमाही॥ होवनहीयहबा
नथुईकक्रुनाहिभईसुनेईभवमाही
हमरेमननातनसुकृतबपरतितीनक्रु
लोकसआपवनाप॥ हमहैस्वतिबल
भनानहकेइहतेहमनीनक्रुलोकदवा
प॥ समझेअहस्रोरविवेकपिनाबलही
णखिषवनवासपठाप॥ अबनेअपवंत

२१

16

उपाइकरैपितआतननमूलसदैहिउदाप ९२

रतिउवाच॥सवैया॥सुतआपयकौंप्र

निपापइसोमतिहीनकरैंबहुसंगत

मारै॥उरहैषबयोतिनकैअतिहीइह

भातिबहैजगपापंकरारै॥अथबाइहः

कौनउपाइसुनेप्रभुजमीनजुमेमनमाहि वि

चारै॥इहभातिसुनैरतिबाकजबैनब

बोलउठैरतिप्राणपियारै॥४३॥कामो

वाच॥दोहा॥भामनिगुडसुबीजइकरै

पुनिकहयोनजाइ॥रतिउवाच॥आर

पसुतकौंनाकहैमोकोतूप्रगटाइ॥४ ४

कामोवाच॥दोहा॥रतितेंनारिसुभाव

बे.
प्र.प.
ना.
१८

17

तैभीहुअतिडरपाइ बैपापीदाबगोकमैं
नोपैकहयोनजाइ ॥ २५ ॥ रतिउवाच ॥
दोहा ॥ आरयपुत्रसुकैानवहकैसोक
मेकहाइ ॥ बिनुभाखेयलमीनजैांमेरी
बितनरफाइ ॥ २६ ॥ कामोवाच ॥ सवैया
भामनिनाहिडरौउरमैहतनआसबिबे
कसुअमटाइ ॥ याकुलमैतिसकाल
समाबिदयाज्ञेहनामसुराषसिकाइ ॥
लैबहिगीअबनाहसहीउरभीतबिना-
हिटयाकछुराइ ॥ होबनसतनभबिषक
थानकीसुतयाजगपहअलाइ ॥ २७
रतिउवाच ॥ दोहा ॥ हाथिगाहमरेकुल-

विषैपिसतासीसमहान ॥ उपजेगीउरकें

पहैचलदलपत्रसमान ॥ ४८ ॥ कामोवा

च ॥ भामनिकोंउरकंपहैलोककहैय

हबान ॥ जनमसगाधसीहोइमोनिश्चैन

हिविषयान ॥ ४९ ॥ रतिउवाच ॥ नाथव

धानोपजतमसोउपजेपनिमोरइ ॥ याज

गमैसबनारथयकाजकमैगीकोइ ॥ ५० ॥

कामोवाच ॥ सवैया ॥ भामनियोम्हनी

जगमैइहवाकसुहेहथबबलसुलाया

पुंसञसंसकहेजिहकोनिहनाविप्रहे

जगभीलरमाया ॥ नाहिकुहतिहसंरा ।

कबीमनबलभताहिविषैसुतजाया

वे.
प्र.थ.
ना.
१८

ताउपजैतरुनेगननामननिनाथ्यपहैं।
पुनिलोककेवनायो ॥ ११ ॥ दोहा ॥ कंपमानतो
तैहोइश्रीविघ्यानामकहाइ ॥ तातमात
पुनिभ्रातकुलेललपमगालवज्रषाइ ॥ १२
कविवाच ॥ दोहा ॥ ग्रामकंपरतिकोभ
योबोलीअतिभयआहि ॥ भरनाकेगल
सोमिलीआरयमननपरिपाहि ॥ १३ ॥
सवैया ॥ रतिमेंनामकोमनुआहिजोरै
मुषसंगतिकैपुनिकामदिषाय ॥ त
नमांहिमनोजकमेंचभयउगनतारकं।
नैननकेतरलाय ॥ चनवीनपयोधरना
रिमिलेमिवकेविषेतौमनमैंहरषाय

18

मणीगुंजनतंकंकणहारथविषैवनतकेट
धुजामनमैंविगसाय॥९४॥कामोवाच
सवैया॥ नवसंगममोदजनेमनमैंअर
मोहमहाउरमैंउपजाय॥ इमभाषम-
नोजयमोदबडेरतिकोदिठिकेटसोफ
रलगाय॥ हमजीवनतकोनवलीजगमैं
गुनिआनमविदयाजोउपजाय॥ जग
कोनविवेककोनाउलयरतिभीकक
होत्रमकौंडरपाय॥९५॥रतिउवाच॥
दोहा॥ वियाकंनाबाघसीनाउनपनी
नोर॥ नमरेवरीजेजगानकिहविषवा
हेमोर॥९६॥कामोवाच॥सवैया॥ ग्राउ

वै॰
प्र॰प्र॰
ना॰
१९

हितांश्रुतिनारिविषेषतुवाविवेकप्रि
यउपजाए॥ मंगप्रबोधसमीपउनिभा
तंसुहेमगनेतिहमाहिउपाए॥ ताउन
पतिविषेपतनीसुसमादिकआपस
हाइकआए॥ तेउपवासकरेतनमाह्न
तेउरमनीसुषदेवमनाए॥१८॥ रतिकुब
चा दोहा॥ आनमनामोकिविद्यानोउ
नपतीजोइ॥ काहिमनाहैंउहमतिसंका
पापनिहोइ॥१७॥ कामोवाच॥ सवैया
रतिजोकुलनामसुधविरतिभएवहिय
पंकरैनहिपापपउनाए॥ शुभनीतमली
नरहेजिनकोउपजेनिजतातनमातमयाए

19

बलगावकधूमह्ममेचभयोफिरधूमधुः
अंहनेआपछपाप॥कुलकंटकेआहिवि
वेकह्मनोनितपापकोवेनहिंचलजाप
अथनैयकलकला॥विवेकोवाच॥स
वैया॥आहिडरातमकामकवेंकह्मबंः
धरमातमआपअलाप॥नैअथवेंतह्मप
पकोरेमभावअवीहमकोम्हटराप॥ना
हिलयोमननातमतोजिमसूरछमनोज
ह्मनोचितलाप॥नानभयोह्मतमोहअः
धीनह्ममायाबेदकहरंअलाप॥१०॥
कारतसेरअकारतकोगरजोनिपि
असैगरबाप॥बेदविकथह्मपंथविषेः

चं. ग्रं.ध. ना. २०

को

मतमैंमदकैंजबपाउटिकाय॥ताहिमा
गमहिबेदकहैमनुसिमृतमैंपुनिपछबता
य॥बीचपुराननबयामकहैविषपूरब
लैंपुनिपछबलाय॥११॥दोहा॥पितागु
रुमतित्यागकरबडभागीपहिलाद॥सु
क्तिपाइबंधनतजेहरिकेसेवकसार॥१२
कबित॥तातजोहमामोमहअहंकारके
अधीनभयोकारयअकारयनरंचकबि
चारियो॥जगतकोपतिजोपरमातमम
तातनिजताहिकोमुबोधजगसिंबल
मैंडारियो॥मोहमदमाननिमदिनम
नमानकरछोडनोमहरबंधदिढविः

20

सनाथ कियो ॥ ऐसो मन नातन तो ईद्रन पनके॰
घ को ईकर कियो हमन्यागन हिता हिमतो
धारियो ॥ १३ ॥ सवैया ॥ इहं धौ मर काम
विलोकन कैं रति के गति पद्य वाकय
लायो ॥ हमसे कुल मैं रूपयान वडो मति
संग मिलायो हे विवेक हस्यायो ॥ याज्ञ॰
यामति आवन है रत डोरव लै भृगा केप
ति जैसों फल सायो ॥ भिवजैसों ठ हि नावल
कीतन यामति संग मिले इह भांति सुहा
यो ॥ १४ ॥ दोहा ॥ रागादिक जिन वस की
प कीरति वंत उदार ॥ उर ग्रति कोपर्य्यो मा
नथन मनो निगादर थाव ॥ १५ ॥ सवैया ॥

वै.
प्र.च.
ना.
२१

तनहूबरापुजविवेकपिषोरतिहीनक
छोरमहाउघदाई॥कलषीमतमाहिसै-
घौलसकैतहिनातरजौंससदेतदिषा
ई॥इहकारणतेहमनेगानहीइहछोर
निकासचलेसुपलाई॥रतिसंगमनोज-
सुभागगपमतिसंगविवेकबेनदिषा
ई॥११६॥विवेकोवाच॥दोहा॥सुनीप्यारी
कानतवकामबटोमदबैन॥हमैबषा-
नेपापकतउष्ठातमयहमैन॥११७॥मनो
वाच॥दोहा॥आपमततनिजदोषकोजा
ननाहिसुकोइ॥दोषबषानेआरकोसु
छजगतकेलोइ॥११८॥राजोवाच॥सवै

21

या॥ चितन्यानंदलीनतिनिरंजनतेजोजगनाइ
कताहिसुन्यायामेनपाप॥ मदकामहेका-
रपरायणतेतिनकोजगभीतरबंधनप
ध॥ अनिदिनदसातिनकीसुकरीपुनिस
हजनवंतसुआपकहापं॥ हमतोहिकुस
वनमाहिलगेग्रवबंततग्रहोमलमोहसु-
लाप॥४९॥ मनोवाच॥ सवैया॥ सुनयारथ
जोपरमातमहैसहिजानंदसुंदरबेदउ-
चारे॥ वहतितप्रकासमहार बिसोसुवि
भोननमाहिसुताहिप्रचारे॥ इहभांति
सुनोपरमेसुरमैकिहभांतिरतेतिनबं
धनडारे॥ उघसिंधसेज्ञातमउारदपकिम

चौ.
प्र.ध.
ना.
२२

ताहितजेगुणग्रापउदारे ॥१९॥ रागोवा:
वा सवैया ॥ ग्रतिथेरथवंतउदारबडे
उरसांतिसदागुणसिंधसुहायो ॥ सब
सदाउरनीतवसेंसमसहालखमीसिरछ
त्रफुलायो ॥ मतिथेरथसीत [illegible] तजेछिन
मैसहनिभामनिनाविनजाहिग्रमायो ॥ ग्र
वग्रोरकीबातकहाकहीयेनिजनाविय.
रानमंग्रापभलायो ॥२०॥ मनोवाचा: सवै
या ॥ सतंग्रारथंजोतुमंहोइवडेरविकोनहि
क्रोटिसकैपुनिमोइ ॥ तिमंग्रानमनितप्रका
समहाजिनकेसमसंदसवंग्रोरनकोइ ॥ सषमा
गांनीतउजागरहैग्रतानकहोकिसभान

22

सहोई॥ अबहूरकरोक[illegible]णाकरकै-
इहसंकबडीउरअंतरमोई॥ १२॥ गो
सोवाच॥ कवित॥ बिनाविचारसिय-
पुत्रसियबारयोपतोसमानंनासंमा
याविलासनीबखानीयें॥ सतएंसफा-
टकेंयथासदेवउजलेंसूषासहावभाव
कैंप्रवंचनांसठानियें॥ ताहिकेंसुसंग
नैंश्रसंगनांजदेवकीसरूपसियनि-
नहैंमनाकनाहिहानियें॥ तथापिगा
इसंगतैंप्रसंगविक्रियांभईकुटीसा-
धीरतानबैंरथीरतोंसुजानियें॥ १३
सतोवाच॥ दोहा॥ कारणकोनसभा

वे.
प्र.प.
ना.
२३

षयेजाकरकैविकार॥पुरषपुरान
नमोवपुजाकोवरनउसार॥२४॥वे
जोवाच॥दोहा॥मायाकारणकाज
कोवाहतनाहिसकोइ॥नारीजानि
पिसाचनीग्रहीसभावसहोइ॥२५॥
सवैया॥मोहतहैकबहूंअबलामदसो
सविठंबनफेरकरै।कबहूंपुनिताउन
हैअबलाहमकैंकबहूंपुनिअंकभरै
सविषादकरैकबहूंअबलाअतिदीन
मनोनिरमाहिबरै॥इगवामकटाषन
कैंअबलाकहुकौनहकौननचीनहरै॥१
दोहा॥हैकछुकारणकौनपतिक

23

होसुनोअबमोइ ॥ डगाचारइनबिन ।
वियोकरोविचारसुकोइ ॥ १२ ॥ **माये**
वाच ॥ सवैया ॥ अबजोबनमोहबिला
इगयोपुनिदेवपुरातनहैजरढायो
अबमोंबिषैरसआहिकहांरसुवेषु
घजोवनमैनरमायो ॥ अबश्रोरंडण ।
इवनेनकहूंमनसूतबनेअबराजदि
वायो ॥ इहमानमनोहविचारमनेम
नसूतनबैनिजतातमिलायो ॥ १२४ ॥ त
वहारनकैपुरिनाहिरचेमनआपस ।
नोतिनबीचबसायो ॥ इकरूपकनोप
रमानमजोबकभांतिनकैपुरमाहि ।

कसाएं॥ सुकैमनंकारयंत्राणजितें।
परमानमकेपुतिमाहिहहवाएं॥ सुज
पाकुसमेंमणिमाहियथांहतसेवतगु
णगणलालदिमाएं॥२५॥ **मंतोवाच॥**
दोहा॥ प्रायंसुतं[illegible]लोकमैंजेसीमा।
तप्रबीन॥ ताकोसुततैंसैभयोकहोंद
वकतकीन॥२६॥ **राजोवाच॥ सवैया॥**
नबबीनकोपूतहंकारबडेनपिना।
परमानमकोनगायो॥ सुनिमोनल
वैनगयोछिंगनोंहसकैपरमानमकं
हलगायो॥ नबपूलपरमानमैंत्राणग
योभवमाहिभयोंइमत्राणंसलायो॥ य

25

हतातंरहैसममातंग्रहैरहषेतंरहैस
कलिच्चसहायो ॥ ३१ ॥ यहद्दग्रंसमि
त्रंग्रतानबडोगुतियाँवसंघाबलसा
हिहमारै ॥ रानंग्रसंपसंयज्ञकोसग्र
हैगुतिपज्ञस[illegible]रसंबंथपिग्रावै ॥ वि
नकोपुरगौनिहभांतिभयोतिमदे
वपरातमग्रापनधावै ॥ ग्रतानमरंब
ज्ञंतीदभईसपनाबज्ञभांतनभांतनि
हावै ॥ ३२ ॥ मनोवाच ॥ दोहा ॥ ग्रारथं
सतपरमेश्वरदीरघनीदविकार ॥ बो
धंजनमकिहभांतिगुनिहोवैमोह
उचार ॥ ३३ ॥ कविवाच ॥ दोहा ॥ मनि

वे·
प्र·प·
ना·
२५

25

तबिबेकमहीपकोलाजभईउरभाव ॥
कीनयथोत्तमंनामसमैंथरनींउरनिहा
र ॥ १२४ ॥ मतोवाच ॥ दोहा ॥ श्रावयंमहत
किहहेतनैंगुरचलजातोहं ॥ तिग्रसह-
कंदरतैंभईभाषोकारणमोह ॥ १२५ ॥
राजोवाच ॥ दोहा ॥ नारिनकोबहुहंर-
षोहोवतजगमकार ॥ माणनाथजनु-
प्राणपियकरोननोहउचार ॥ १२६ ॥ म
तोवाच ॥ दोहा ॥ रमंप्रविरतिकोयथमं
हितकरैंकलुषनितप्रान ॥ वहस्त्रीतेंज-
गजोषिनाकरैंकाजतिहहान ॥ १२७ ॥
राजोवाच ॥ दोहा ॥ मतिप्यारीइकंसो-

रहै मानस मे रीनारि ॥ उपनिषत् तें सुनि ना-
म बषानी मैं हूं देह रूप उरझानी ॥ १३८ ॥
चौपई ॥ बहु दिन की बिसरी है प्यारी
मो हू सुध सुधि आई अब है भारी ॥ श्रवन दर्स मैं तो
सुख कूल ह्वै होई ॥ तौ उपनिषद संग मै
मै होई ॥ १३९ ॥ हे मत तूं जग बिषै नेवा
रे ॥ एक मसहूर तिमै तन सुधारे ॥ ताकी तत
सु पन सुषुपति बिलाई ॥ मैं घ बोध सु
न ले उपाई ॥ १४० ॥ दोहा ॥ उपजत ही पु
बोध सुतन कौ बेध समभ हानि ॥ बेधत सु
कति बिराजई परमानंद भगवान ॥ १४१ ॥
मनोवाच ॥ सवैया ॥ सुनत ग्यान रस जो प्रम

वे॰
प्र॰ध॰
ना॰
२६

26

दिक्षुबंधनैर्हैर्दिक्षुग्रंथमहाद्रुमदावाग्नि ॥ ता
नाग्रबलान्तवसंगमतेम्सन्नबोधभपव
हबंधमिटाइ ॥ पतिनीनभजोतिनसंग
मकोग्रबबैमिलोकिमबेलगाइ ॥ सु
नग्रावधनीनरमोतिनमोममचीनग्रहे
नमयोफलमाइ ॥ १४२ ॥ राजोवाच ॥ सं-
वैया ॥ भामनिजोपहबानभइनबमि
धमनोरथग्रानुहमाये ॥ हैजगाग्रादिस
एकविश्वपरमातमनाश्रुतिपुंजाउवाये ॥
नाहिकोरेबफषेरजिनोपुरदेहनमेबफ
बंधनरोरे ॥ चिरइमरयोमृनकोपरहा
ग्रबतेरेबनेजगाभीनरमाये ॥ १४३ ॥

कबित ॥ ब्रह्मकेंनभेदकहेंहैषेदकेंअ
नेकविधप्राणीअंतप्राहहेचितंनताहि-
करवांईयें ॥ चिदाभासरूपप्राहहेचितं-
नोसुअनूपहोईजीवब्रह्मएकतासंत
बीसोधंगाईयें ॥ कारयकेमिथ्याहि-
तेसोतत्वोदमादिजेईतांहितांहिती
रथुमैंवनासरूपगायीयें ॥ अंसैमति-
मानमतिपतितेवषाननकरैरूपभो
नेआरूपेषजाहिंसुषपाईयें ॥ १७ ॥

सवैया ॥ मतिसंगविवेकविचारकी
योजनगाभीतविजेजनकोसुषदाई ॥ १
जिहसोसभजीवकिबंधमिटैपर-

बं.
प्र.चं.
ना.
२२

मातमसंगा भवेगाभिलाई ॥ तपसा-
नटतीरथजोगाभजेउपजेभतबोध-
बडेजनभदाई ॥ कविसिंघगुलाबभ-
पझकथाप्रथमेपदग्रंकनिरंतरगा-
ई ॥ १४५ ॥ दोहा ॥ गुलाबसिंघमति-
पतिमतोजानमोहभूपाल ॥ रंभक-
लादिकपरेगानीरथहननविसा-
ल ॥ १४६ ॥ इति श्री मतमानसिंघ
चरणाश्रितगुलाबसिंघविरचा-
ते प्रबोधचंद्रनाट
के प्रथमो
ध्यायः प्रथमोंऽक ॥ १ ॥ संवत ॥ ९ ९

27

दोहा॥ब्रह्मबिदेंजाहिजगदेवनकोउ
धार॥ताप्रभुनाइकेंबिमलपदबेदोंबारबा
र॥१॥सवैया॥नबदंभकोंस्यागबनेआश्रा
किहैंदरजाहिपिछेंजगमीमेंनिबाणे॥क
रिसैननहोंसमफावनहैंसमपैबनराजा
सभामहिश्रापे॥प्रबोधकहोंमहामोहा
वलीसिरहावधरेंजगमाहिपबाणे॥हन
हेंभ्रममाननेंसगबिचारबिबेककोंयाव
वहेहाननपाये॥२॥महामोहउवाच॥सवै
या॥पेहबिबेकबिचारकीयोंसंप्रबोधया
वलीहनलेहिउपाये॥ताहिंनिमितहा
नोंरचमेंसममेंदेंसंआपेबिबेकपबाणे॥

बे.
प्र. ये.
ना.

28

हैं हम मैं जल नाथ पांनि मिलि तिं हैं जग माहि
बिरंच बनाये ॥ तुम हो इं म्ह चेत उपाइ करैं ।
जिह तें इं ह थापि निमित मिटाये ॥३॥ निन ।
नी रथं माहिं बनाय मँजो बहिमो पुनि मिलि
बिरंच बनाई ॥ यवि कों नगरी म्हनं देव का ।
रीम्ह करो तुम जाइ कै पंडउ पाई ॥ चंड आश्र
म कीं कलयान मिटै निंहतें नहिं मोपंम्ह हा
बन पाई ॥ बसं मो हं बनाय संपे हकहीं समर्थ
मि के लों म्ह करयों म मआई ॥४॥ दैंसउवाच ॥
दोहा ॥ जहां निवास म्ह मैं करों म्ह नें ति नेता ।
की नाथं ॥ मन म थके उन म व भजे लोकी न
वा के माथं ॥ कबित ॥ ता रिवयं मैं नि नि मं वं मं मर्द पं न क

ंकामकेकलोलनमेंयामनोंबिनाइ
है॥ चांदनीमहलनिमनमथकेउलास
भेप्रनारिनकेमेगात्रअनेगाकछपापहै॥
नाइग्रानकालमैलेग्रबनेलगाइभालधू
ंनहबडेमभलोगानंबिफाइहै॥ हमा
टीघनसवबगाउनिनापसींब्रह्ममंगाया
हबबाहहोमेहमकदीनेवकाइहै॥ ६॥
दोहा॥ यौंदिनमैंबंचनजगातेनिस
मैंनिसंकवमाल॥ महामोहंश्र
पालकोमैंहनकीनंबिमाल॥ २
७॥ कबिवाच॥ दोहा॥ धामधनोंवसंगागात
हैबेहंदेमउदाव॥ कोइकज्ञावनेपेषकरं।

बे.
प्र. यं.
ना.

बोलेवचनविचारि ॥ ८ ॥ दंभउवाच ॥ सवैया ॥
कैंसेंलचंभगीरथीकोउनिआवतहैंम
रनोनटमाहीं ॥ ज्वालमनोअभमानहकों
जनंतीनकेंलोकेत्रसेमुघमाहीं ॥ वाकेंक
हेंरहभांतिमनोंकटभावनहैंसमकोज
गमाहीं ॥ उधिवडीदमकेंउरमैंसमकोउ
पहासंकेरेमनमाहीं ॥ ५ ॥ कवित ॥ गाढा
प्रसिधंदेसंदषणकलेसहरंतिनहीतेंआ
योयहंत्रैसेंमनआइहैं ॥ आरयंहकारक
हमारोनहोनीतिवसेंसमाताकलेउक
ढ़ेमारहकोमनाइहै ॥ त्रैसेंमनंरंभसविा
चारनीकेंकरेनबआगोयाहंहकारचालहें

29

समझौ महाइहै ॥ ग्रहो बहो सृष्ट जगतेष

हृछा घो सभ थै से सहंकार स घ बे न नश्र

लाइहै ॥ १० ॥ भट पाट मन को नज्ञान नश्र ।

ज्ञान लोकें नाहि पर भाकर को मग स्वप ।

खोनई ॥ नाना निक री भी र मन धी र वहि ।

पारले है सालिक कौं तन न सों ने को कुवहि

ज्ञानई ॥ वेदव्यास वाक पानि कपलकण

दिमनि शेर जो महो दधि को मन्त कविभा

नई ॥ महा हृती नानि हारे ऊ निब्रह्म को ।

विचार कहा नाम नर पस्त सम थे से हम ज्ञा

नई ॥ ११ ॥ पेजो पष घे महान मा ने बोफ भरे श्रा

निमहा पस्त उपि कक्ष ग्रंथ को न पाइहै ॥ ।

वे.
प्र. ध.
ना.

30

कोटिमैणितेवरष्केवरनेशुवकैरमाम
वेदश्रुतिश्रुतिरुचेस्नगाइहै॥ शुक्लोये।
जंबातंछविमानंमनंक्रोधभपंफेवंफे
रसुछवेदणारनंस्नाइहै॥ वेशुषंश्रवा
रंहृतिचारकोविचारकहेजोवंका।
केहेनमुछवेदनबंधाइहै॥१२॥ औरवे
रगाथेशुतिकौतंक्रमनंथोपिबबोलं।
थेहैकारंस्नगलावंपहिचानिथे॥ नाम
मि
नोसंन्यासंमोगंविद्याविलासकरैथे।
होथनींगमेंलोकमांहिनीवघानिथे॥
मुरतेभुशपैनामंपंरनंकहापेकहुना
थांनंदूनपापंकरंवेदभासमांनिये॥।

कीने हैं व्याकुल विदांत के प्रकरण सभ।
श्रावन हैं हासम हि आहि हि निवानिये ॥ ३
श्रत घने विकथ ग्रंथ भाषने विदांत सभ
ऐक हो ग्रंथ ऊखह हमैं हमरोने गायो है ॥ श्री।
मैं जो विदांत शास्त्र मानंत प्रमाण षट
वड्यन के ग्रंथन मैं पदार्थ कोन आयो है।
मेवरा सें न्यास कृयं ग्रंथ औ विदांत भिन।
भिन नाम ऐक छल कै चलायो है ॥ ४ नई
कै मैं पाउ निबोले महा पाप चेढ़ें अर्थ मैं खब
भाषा पाउ अर्थ गो सुंडायो है ॥ ५ ॥ ऐही।
मई विना मपति आगम मेंह मरई ब वतनराम
भमभानत निभम मल गाइ है ॥ पमहैम

चे.
प्र. ध.
ना.

31

देउलोकमांहिंमुपभेडकोइनसोंप्रभा
षनदेनवकेसजाइहै ॥ सईवपामपानि
केनिहारेंहोइपापंअनिपेषेंपसनांहिं
इनअग्रेसेंबुधिंगाइहै ॥ गलावसिगेंदेषा
केंहेंकारकींविसालंबविलेंगनकें
पुंजिंपुंनिआगेंहोंपलाइहै ॥ ५ ॥ कवित
डोरेंडोरेंगयेंउनिंपेंषंमसकानेंअति
ग्रहेंवकध्यांनंपटंकुजलंमहाइहै ॥
सेंगानेंरंघारनंटंगोनलंमिलासिंवार
ग्रेंघेग्रांघंआपंकमआमनंविछाइहै ॥
लेपेंअघमालंभषंमेंउनेंविमालजपें
गुलकेमांहिंकमंमेंइंवनापेहै ॥ । ॥

पेहींदेमभेवैनंधनंवैननकेंबिनहींरेबीजमें
उंन्यासमकरंअंगुलींहलाइहैं ॥ १६ ॥ सवैया
हेकारनंनैवेंग्रनिपाइंउब्बाईस्वल्पोंग्रमकार
पिखांजननेंआना ॥ हेकांमाहिंत्रिदेउथरेंग्र
मंछ्लननकेंसलदेंग्रमिमाना ॥ देवनंमें
नाहिंगाहेंउरमेंग्रनिनाहिंग्रदैवनकोरेंव
पछ्याना ॥ पेंथउमेंडंस्वछमपेंमनिआ
अमेंओरपिखेंमसकाना ॥ १७ ॥ किनको
घहंआअमेंगावनहेंछिगांछ्वारनेंडचेंम
वेसंगाउपें ॥ म्हमनोंनिनेंडपरंनाचनहेंमि
नेअंवरंअंजेंहज्ञारननापें ॥ इनहैंकस्नाजि
नंघ्रपेंमिलाइनतेंचमस्मांवकउभांतिमहा

पै॥ इन सम सलै और न सत्रु घलै हैं इन के सम के
म सबीन बना पै॥ ८॥ इन हो म सरोध
सयु म वडै तिन स्या म सभो न भ मे इल के
नो॥ यह हं गा सम भी पं सुद्या श्रम है पिय मा
हे सभो श्रम हो वन षी नो॥ गह म ध व डे
धर्मा न म के तिन को ध हृया श्रम या हि व नो
नो॥ सभ ले। ध हृया श्रम पा व न हैं दिन दो ऊ
सनी न निवा स ह षी नो॥ दोहा॥ श्रे मे या ऊ।
हे कभ ऊ व व ये ग व हैं नि ह मा हि॥ ९ व षं।
निहा रिये पक नि हि दूप स ने जे ना हि॥ स
वैया॥ श्रदला बने ना न न सं हू व हे ग्रिव वा लवि
थ ब सं च दन ना पै॥ भजै ग उदे ऊ र के ठ ऊ ऊ।

मुनि बर नें चंद नें टीके बनाये॥ हमने नाना

कपोल सपाट विशेष चित्र कीओड़ चंद नें टे

के सहाये॥ जस ले स्रुक टेक रंकान नें मैं स

मेतो यह हैं दम रसोच मकाये॥ ४१॥ सुभा

ले खब बंध्या हिम में पच ले लोड़ मं धारें चले म

नें स्व सम्व नेरे॥ छिमा ज्ञा इ उठा इ मले केकों

सुष्ठु पड़ंक हो कल्यान सनेरे॥ मुनि देमा

हे कारकी यो ग्रुष नें रमें बार तहें नहिं अ

उसनेरे॥ रतनें महिं आरगये बड़ बाला

कं ग्राम नें वाक सनों तम मेरे॥ ४२॥ स्व प

हि ठा ढिरहो दिज नें रहे आ सम सु को गाति

नो हि नज्ञानी॥ पाद पखाल नें आ षके रा

ध्रु.
म. प.
ना.

करभीनतिंउजलंलेउंसपानी॥तौंइहंथा
श्रमधंउथरोंइसेकोनबेरबइंपेउंवषानी।
कोधभयोंहंकारवडोंइहंभांतिंसनींवड़
कौंजवबानी॥२३॥हंकारउवाच॥सवैया॥।
हौंविधंकौंनंकटेसंग्रपंजिहिंदेसनंथा।
विधिलोकंवसैहैं॥कोबिदलोकंधसंथ
वेहंमसंझैनंदेसनंआधिनंथैहैं॥आस।
नंपाटजलंग्रवथानिनकेहिनंनागिरा।
हौंउविलैहैं॥नाहिंक्षुहेंजलमेंडलको।
गेरंसदेहंजाइंवसैहै॥२४॥कविवाच॥दोहा
करकीमैनीदेमककीनोंनाग्रसवासं
इहैंजनावनंथिरवहोंकाहेमपंउदास

33

हवै या ॥ नबबोलउभ्योबंधेरूंकहोउब

यांविधिनेद्विजकीनेबखानी ॥ भइउंनब

आवनंहरहिनेहमनांजलसीलहनो।

ध

हपखानी ॥ कनिकैंरहबानंहैकांववली

सुखबाघनहैंउरमेंभ्रवसानो ॥ हमगोजा।

लसीलपवीधनकेअवलाइकंसूछहनो

हसभानो ॥ २६ ॥ दोहा ॥ मनमूरखअवनो

कहोंगाइप्रसिधंकहेदसं ॥ राजाछोरी

प्रसिधनहिंपधनहवैकेलेसं ॥ २७ ॥ का।

वित ॥ भूरिश्रिहिकंलामंग्रानिंनाहिमैश्रसि

थंधामंनाहिंपनिनानंसममंलोकमैंवभा

नेहें ॥ नाहिकेसपूतहैहमपनंगैंक्रलीनवरे

वे.
प्र. प.
ना.

देसनग्रसियलोकलोकमाहिंजानेहैं ॥
तिनैमैविवेकविनधैधेरग्रचारसील
हगांउदारसमकोविदप्रमानेहैं ॥ कोउ
हमप्रापैविधिलोककियोनैपभपभयो
सप्रवेभंजननमोहरनपछानेहैं ॥ २८ ॥ दोहा
सननेवानश्रुतिदेभवदृथडकोउर
विहारि ॥ मैननहीसमफाइयोटेड
पाटहिनवामि ॥ २९ ॥ सवैया ॥ नाग्रहचदौवर
लैकरमैश्रुतिकुजलवारिमाधुविलायो ॥
नाश्रवदैकरलैभगवंतनकेरोपटछालो
नेपडग्रलायो ॥ हृंकारकरोइहमपवकरे
नगाकाडकोनाहिवेनसुभायो ॥ योइक

34

पाइसेश्राश्रमेमैवरमैहिंननाहिंसपा
उउतायो॥ ३॥ दैमंतमैउनिंदैतचवाउ।
चढाइंश्रुपेश्रुषपेडश्रलापे॥ श्रहेपोउ।
डइरहोहिंजेमठकहोकिंगाश्रावरथा
पे॥ मेननमेवैदकिविंदमेनोपमरेउन
नेउनवाश्रचलापे॥ ब्रह्मनश्रपूरवेप
ड़पिषीसहेकारकेलियामननेमेषुनमापे॥ ३१
दोहा॥ वडरवहमुषवालयोव्रह्मनवरु
सोहोहोहि॥ उनमद्विजयोलोकमैक
विकविपेषैनाहिं॥ ३२॥ सवैया॥ भवभ
रनवंडमहीपजिनेपदपेकजनाहि।
कहेउरपापे॥ पदकंजसिंवासननभून।

चे॰
प्र॰ ४॰
ना॰

लकेछिगेआनेसभैनिजमोलजेकाये ॥
मुकटमणिणकोसमरीचिनकैपटवारि।
जआवनीदोपजगाये ॥ इनकेछिगनाहिं।
निसंकसनोमतिभूलगयेद्विजनेंश्रवसाये ३३
दोहा ॥ होनिहेंकारसमनविषेकी
नोरहेविचार ॥ मनोसयाहीहेसमै
हेभलघोअवतार ॥ ३४ ॥ दोहा ॥ मवहनया
रहेआसनेमैसवकेरोनिवास ॥ उत्रनिवा।
पेनाहिनेंआसननेबैठतनेंआस ॥ ३५ ॥ मैंवं
मेंवंबोलवटहुवेकोनप्रकास ॥ आया।
पाटआसननेंरहेंजोगनकेरोनिवास ॥।
॥ ३६ ॥ सवैया ॥॥ नविबोलहेकार।

35

सपेड कहे मन भीतर कोप भयो अति
गाढा ॥ दसगादे सश्रमिथ बडे तिन ।
भीतर स्वयपपीड का गाढा ॥ सुन हो तिन
माहि श्रमिथ वयो गर के ऊल वास ।
कथो श्रनि पाढा ॥ हम जैोन हि आस
नलाइ कै है कठनै गुर को बहुमेने काढा ।
सुन सुर श्रकान भले धर यों र कै उर श ।
मिध कहो तब बाता ॥ द्विज कोविद लो
कश्र मिथ वडे श्रव वी तिन को उहिता ।
विधाता ॥ ऊल ठजल ज्ञान मरालन ।
कौ तिन को मम मना हि श्रहे मम माता ॥
तिम के हम लोक न माहि वडे हम वेम

१२

बे.
प्र. पं.
ना.

36

मन्त्राहियहेसमनताना ॥ ३५ ॥ समस्ता
लिकामित्रसमानलकौतुहिनापकेसे
रमलीजनगाई ॥ तिनकौविभचारकौ
फटकथासटलोककिनेजगमाहिंग्रा
लाई ॥ तिनकेनितमाहिसवेधपिषसतता
हिसमैअतिमेञनसाई ॥ विजनोरमताग
तजीषिनेसैसहनसूछवष्टयरनाहिटिका
ई ॥ ३६ ॥ सोनिकेधरहवानसटेमवलीम
नभीनरमैअतिमेञनसाने ॥ हिजनेत
जकुजललताश्रपनीजगभीनरयाबा
धिमाहरवषानै ॥ सनैमाहरमहानमेलाकैकोट
जगाइनतेनाहरसरेवपखानैकछ्रग्राहियग्रमवेउ ॥

जलत्तामसभीतरसोवनरानतजाने॥४०।
हमपेकससविधलोकगापेस्तुनिमोपिव।
श्रासननेस्कडनापे॥रहवैरवसेस्नविविंद
कहेवहश्रासतनाहमरेमनश्रापे॥विय।
श्रापस्तगोधकरेगुघनेडनिगावरसोतिज
जाउलिपापे॥करजोरमलीवियश्रादहा।
कैनिजरुपविमोहिविरंचविवनापे॥४१॥

दोहा॥वडहंकारस्तवालपोदो।
भिकश्राहमगणमान॥कोहिविरे
वग्ननरकहोकीनोफ्रिदिवषाने। ।४२।
श्रयवाषहद्विजदंमहैनाहीकोनउचार॥।
श्रेमसनेविचारकरभगोक्रोधहंकार॥४३।

चे॰
प्र॰ ध॰
ना॰

37

सवैया॥ कौंन सुनै तस को बिधि है रिष कैं कौं व
सुनै कि सुनै उपजापे॥ मैं तप कौ फल जाव
ना सुन बाम न तें मन मैं गारव बापे॥ कोटि
हे सु बिरेंच सुनी पटंप कज मा हा पे उ ब
पापे॥ रिष कौ उत पानि कौ भूमि कही सुष
रातन माहि सुनै मतु लापे॥ ४४॥ रिष श्रि
गा सृंगी ऊ सु कैं मस ऊ मै राजनै हु सना मा
लजु उपजापे॥ बाविव धू सु बासि सटि जा
पे उ हि नाउ नि कौ व व्यास उपापे॥ सा
किना रि विषे रिष गौन मनु पनि मो उ वा
मे उ कौ ने निक सापे॥ तन घो सु चं उ लप
रा सु नु विषै और मनें गम नै गनी जापे॥ ४५

नवदंभविलोकयनंदभयोयहअयमो
हपिनामहिश्रापे॥नामहकारकेहेनि
कोरनपेषनतेमनमेध्यिगमापे॥आव
यलोभकौमैमनहोममदंभकेहेनव
लागनमापे॥हकारवयरघोमिरहोथिन
वेमनदीरयआउवडेमषमापे॥५६॥ब्र
ह्मरिश्रेनमौहपिषनववालङनेनमश्रेग
मलाने॥कालविनीनभयोवडनोमन
याजगमैहमहैमवृक्षाने॥नैननमद
मशैवभपेयहकारगानेमननोहिप
ह्याने॥शाजयअनेउभयोपिषनेमभश्रेग
नमोमनकोचिलकाने॥५७॥नवद्म

वे.
प्र. प.
ना.
३५

38

हिकमायसकूठबसेकहोआनंदमोजवा।
भीनरमोइ॥ नवदंभकहोइहवोरबसेवि
वुताहिनमेजगजीवनहोइ॥ नविमानवि
नाविमानाधुनिलोभकहोसघमोजवा।
भीनवदोइ॥ धुनिदंभकहोमहामोहा
कीआसपाइबसेइहवोरमइइ॥ ४८॥
आपकहोकिहकारणनेइहवोरसमाहि
कीयोनमआपे॥ हंकारकहोसतनमोहम
होपकोगोपमेदेसमहेहमलापे॥ आ
हिनंतोहिविवकहतेनिजकानसतेनमभं
लोकमलापे॥ नाहनातमनावनकेहि
नआवनमोहमयामसफापे॥ ४९॥

वे॰
प्र॰ ये॰
ना॰
३८

हेकाडेरेसोनिवानइहैमिवकेगुरवा।
यहकैकोनमिटापे॥ तिनकैटारवेसमभजो
वजितेसषसोमिवनाहिकेवेयछूटापे॥
थेनसमेककनणाकहिकैसमकाननता
रकमेउसनापे॥ समभपापमिटैमिवपे
सवतेषिनभीतरजीवनकोधउपापे॥ ए
नवदेमकरोमइवानसहीपकहोवता।
नासमजीवसफारा॥ जिनकैकोनहिवाय।
कटाविनहैजिनकेउरकामसहेकोषवि
कारा॥ जिनकेकरपाटमनोवसहैतपकौ
रनसोजगगाहैउध्यारा॥ वहतीर्थकौफल।
पावनहैघटमावतनेगोरउगानउवारा॥ ५१

39

दोहा॥ बेनपाणिआपुनैबैठेंचकपानाथरु
प॥ नानारजनआयोसुहेतोमहामोहजग
भूप॥ ५५॥ सवैया॥ बैठनकोछिटकावक।
रोमणिफाटकहेमसुबेदवनावो॥ नल
जेत्रसुभेषहुधोलोटिजेतिनभीतरठेक
सेतोधमिलावो॥ सभहावनबंदनिवार।
कसेतोवागमोननहावलठोलटकावो॥ म
कंसवासनंविवधुजासभसोधनकेमि
रमाहिफुलावो॥ ५६॥ कबित्त॥ फेरंदे
भकहोमहाराजहैसमीपआपवा।
लोपेअगारीमनमानअनिकोजोपे॥
कहाहैहंकारवसभलोहीउचारको

चे॰
म॰ प॰
ना॰
५०

40

योइजिधनयागसुउपाइसकोहोजियै ॥
जाइकेउपाइनसुपाइनकेसाहियरीजो
रकरकेयाखबनारसापिबोजियै ॥ आ
पेमहामोहभूपउरमैंसवीसकोयावे।
भवविभूतिपरवारमोसहीजियै ॥ ५९ ॥
महामोहभूपसयअपविषहसेअनिआ।
हेजरउषिसभलोककेवारानेहैं ॥ लोक
परलोकमाहिभोगनअनूपसुखदेहने
विभिनभूठयानमांबधानेहैं ॥ आ।
कासानरफलदेविसालफलआसका।
रेकहोनभफलकूकोसाटकिवज्ञान
है ॥ भपभोटपेडनघरसचलापेजगा।

५

बोलसुकपोललोकसगलेदगानेहै॥

जोईजगनाहिनाहिबसनकोंसुध्या।

हिकहैभयेहैबवालबाकध्वषावेदमा।

नीई॥चारबाकनकेबाकसननाहिको

धमतकहैभयेमूढलोकनाहिनि।

द्यकोवषानई॥श्रहोतनमारकोवि

चारतमश्रापकरेकाटेननसीम।

हेगवाहीउरठानिई॥ननतेनिश्रावेको

पध्यावेजीवपिंडकोईनवीननभेनय

हेध्यानमसजानिई॥५८॥लोगनको

वेदविद्रनिवेदविद्योनिजानमकोपीता।

नेलनाईहनध्यानमनपाईहै॥नाको

चं.
प्र. यं.
नाः
५२

41

॥ सुषमादषमानेंदेहहैसममानसभमनमें।
नथ्याइकरमवरणकोविनाइहै ॥ आप।
नीपराईनारिसेपदाबनाईक्रितिनाहि
हमजानेसवभेदकोप्रलाइहै ॥ नारिध
नभोगाछैनिपापकोविभागघटआपने।
पराघेवलहोतसुषगाघहै ॥ ५४ ॥ आ
नमसरीरघटधीरचारवाककहेआ।
गमप्रमाणएकनाहिकोमलेषियें ॥
भूमिजलतेजवाइतनमेंबनाइदेषा।
नाहिमैप्रमाणप्रतषएकोपेषियें ॥
नारिनकोभोगछोरदेवकोसंजोगजोरै
यहीछरषारजतनेछोरककुछदेषियें ॥ ।

चेतनसंभूतहोइनाहिपवलोककेकोई
मोषबिनमूतनअौरहमतेनवेषिये॥९०॥
यहीमनधारसुषदुधनेविचारकोये
उनमसिधांतचारवाककोपछायोहै॥
चारवाकसिषनप्रसिषनपछाइयहि।
यहीसिसिधांतलोकभीनरवलायोहै॥
ऐसेसनचारवाकचारवाकसिषलीप
षेषनसमाजराजसभामाहिआयोहै॥
सिषकोउलाइसमुझाइवातपडकही
देउनीतिविदयानअौरकछुगायोहै॥ ८।
सिषउवाच॥दोहा॥वेदत्रयीगुरपेसकृत
विद्याकहेउदार॥वेदनमेंाकरयोजन

वे॰
प्र॰ पं॰
ना॰
५२

52

पावैसुखरागअपार॥६२॥चारवाकउवाच
॥सवैया॥धरनकोपरलोपकनोयहबे
दखईजगमाहिबखानी॥पापअकधरमके
हवबिनासभयेपहलोककिजिजावतंमा
नी॥मौंटवदाहहहेहुमजेफलभूरला
हैवहरीनसमानी॥हैनकछुसकोषा
लकहीधनबंधनकेहितपककहानी
॥६३॥हनअथहाभूतजीवनकी॥
भ्रतिजेपरलोकौवेषेत्रिपतापे॥जला
गंगाटपनवहीजगमेऊजनापालेषनन
कोविरामापे॥भूतदीपमिधावहनेलट
पविजपावकमाग्रहमेनिकसापे॥

कृतविउतनकैजगलोगठगेसुखपेड
कहेविधवेदवनापे॥६४॥सिधकावाच॥स
वैया॥गुरघ्यानसुपानहग्राणप्रियाग्यघा
मैंउरधारवयग्रापग्रलापे॥इहतनोउवनती
वियेकावजितेकिहकारणभोगनने।
डवपापे॥जगसुधतेजेवनजाइवसेनपा।
दीरवसेनिजदेहतपापे॥जगभोगनन
याकिहजोगभजेसुखहेनहैविधग्रा
गमगपे॥६५॥चारवाकउवाच॥सोरठा
धुवतकीनप्रलापग्रागमनामसुनाथ
वे॥ग्रासामोदकथ्यापसुखछिपातिकहे
वई॥६६॥सवैया॥हगादीरघचंग्रजनजाम

वे. अ. प्र. ना. ४३

43

छिनेजत्रनीलसमेतकहूंहेंबिकासपावे॥नव
नारीश्रानवनारकलाश्रलिकैश्रलिसी
सकपौलसहावे॥कहिंनाहिंश्रलिंगन।
सेजनमेंकोहिंपावकपंचसदेहनपावे॥।
कोहिंभिंजनभीखअहारकहाउपवासन
कैसदेहकहकावे॥ ८७ ॥सिषउवाच॥चौप
ई॥हेगुरग्रंथकारहैजेते॥ग्रेसेवषानवष्ठा
नेतेते॥उपविसमग्रनसषसेसाता॥ना
नेतानेतोकरोग्रहाता॥ ८८ ॥कविउवाच॥
दोहा॥स्वतिनतसिषकोवातकोहमेसवा
लकजान॥चारवाकश्रुनिश्रुतिकेमोश्राबे
कोवषान॥ ८९ ॥चारवाकउवाच॥सवैया॥

रुधसेनामिलेजगकेसुषजेवकरूरनं।
जोइहभांतिवषांने॥तेनतुथमहापमहै।
हमजीवनेकपरनावकजाने॥सितने।
दलजेतसमेंगामिलेनिहनाहिनजेज।
नजेहरजाने॥इहभांतिलकायननवा।
कसुनेमहामोहबलीमनमैविगसावे।
महामोहउवाच॥रूपनिनीप्रति॥सवैया॥
मानिनकाननमाहिसुनेयहबाकस।
माणमहासुषदाई॥माहिविराग्रमनेव
षानिमकाननकोसुषपीतनलताई॥
मानेदनाहिविलोकननैरूपमोहबली
दिहबानप्रलाई॥आहिलकायनसज।

नमेइनवाकनकेउरमेंहरषाई ॥ २० ॥

दोहा ॥ नाहिंडोमनग्राधोनवैचारवाकम
थान ॥ पेख्रमनमोपरह्नजाइकेकोनेपउवष
न ॥ २१ ॥ चारवाकउवाच ॥ चौपई ॥ जय
जयमहाराजजगकारण ॥ नमविभ
वनकेहोयनिपारण ॥ चारवाकपद
केप्रणाम ॥ सेवककमरदापद्धानेनाम ॥
महामोहउवाच ॥ चौपई ॥ चारवाकह्नमसो
नेमआपे ॥ बडनकालननेदरसानपा
पे ॥ मतग्रगोउनाभपेविनीन ॥ ह्नम
रीसारनपापमोन ॥ २४ ॥ चौपई ॥
दवापरश्रेनभधीकह्नमावे ॥ ।

कीटकंदेसवनहैंप्यारे ॥ बैठेंइहांसमी
पंहमारं ॥ समाचारंकछुकरोउचार ॥ ७५ ॥
चारवाकउवाच ॥ चौपई ॥ समाचारंसुनि
येसमदेव ॥ प्रभकोनिपलवनावेभेव ॥
पछुमदेसवसेसुषथामा ॥ साधोगक
लिकोनंप्रणामा ॥ ७६ ॥ महामोहउवाच ॥
चारवाकममकरोवषान ॥ सभविधहै
कलिकोकल्यान ॥ ममप्रतापमेंप्रतिन्न
नुरागी ॥ कलियुगहैजगमेंवडभागी ॥

११

चारवाकउवाच ॥ नवप्रमादिसभविधिक
ल्यान ॥ नेजवंनेजेसेंभवभान ॥ कीनेका
जंकरननहिवेहै ॥ नवप्रदसुलदर्पोको।

चै.
प्र. प.
ना.
४५

45

वेदे ॥ नमरैवाकसहसिरपरधारे ॥ उप
दनकेतिनमूलउघारे ॥ सबसमाहिमा
दिनग्रतिभयो ॥ दरमानकेदरग्रति
हरषयो ॥ १८ ॥ दोहा ॥ येनकलनव
दासहैकरेनमारेकाज ॥ नवपटपंक
जवेदनाकेरेजगनकेराज ॥ १९ ॥
महामोहउवाच ॥ दोहा ॥ चारवाकप्र
मिनममसमाकोकरेउचार ॥ कौनकौ
नकारजकरेकलयुगजगनमफा
र ॥ २० ॥ चारवाकउवाच ॥ सवैया ॥ वे
दनकेपथ्यथरतजेजकंयपथ्यसाटचेसाट
मैजनपारे ॥ आजविरागकोकौनक

नकथात्रिणालोगाटकेंचनमेजनला
गे॥ नाकलिनाहिमकारणहैंग्रमेके
मत्तामभपेवडभागो॥ जेधनवंतमहा
नमहाजननेरतिनाहीकिपाउपरा
गे॥ ८॥ दिमउनवंडोउतिपछमभै
यदेवेदत्रयीकलिहीविनिवारी॥ दिम
रघणाप्ररवत्रयीतत्रपालवकेहितदे
दिजधारी॥ ममठोंदमकोनहिकोंन
कथाजिनदेवममानमईवहनारी॥ ९
श्रवकाजमदरणासिधभपेमविवेक
हकोजडमूलउषारी॥ ९॥ चोपई॥ श्र
गनिहोत्रत्रानिबेदविमाला॥ गेरवि

वे
प्र॰ ग्रं॰
ना॰
४६

46

रेडुभमसमगुनिमाला॥ बलमतहीन
मीवकाकारण॥ धेरेब्रह्मपनिकी
नउचारण॥ ८३ ॥चौपई॥ मीवनहि
तनरेबेदबिचारे॥ तीनेकारजमप
हमोरे॥ क्रकषेक्षारिकनीरथमाही
प्रेबायरेदेहपनेहूनाही॥ ८४ ॥महा
मोहोवाच॥ चौपई॥ चारवाककलम
हायबीना॥ ममहितभुनबलपरेन
वीना॥ तोभुनरेडुकाजममसेरे॥ तीर
थबेदेव्रिपारथीतिनकेरे॥ ८५॥ ब्रब
माकोनिहचिंतीभई॥ तीरथबापसं
करगई॥ ग्रहमेनारिसुतनकेसंगा

कहांहेरनहवोथप्रेमेमा॥८६॥चारवाक
उवाच॥दोहा॥नवपदपंकजकोलिषोक
लिग्रगपातीआप॥याकोग्रापविचाये।
गजनेरविस्मनाप॥८७॥चौपई॥याविधि।
हविये।भूपनिजवही॥पातीलयोवा।
चावनंतवही॥बाचककहेमनोज्जराभ्
प॥कलिग्रगपातीलिषीग्रनूप॥८८
कलिग्रगउवाच॥दोहा॥नववमकोने।
निषलजगामहरननमनीमहान॥कलि
ग्रगापदवेदनकरेमहामोहभगवान
॥८९॥दोहा॥समाचारसभटेमको।
हनेजगानमिरताज॥नवप्रतापनवा।

वे
प्र· ग·
ना·
४२

47

दासनगाइऊक्वेसभकान ॥ ५० ॥ क्वे
केद ॥ नगतैनमायामोहनामछ्ती·
नकहाव ॥ छ्वमैलोहिक्रमीटभोछुप्ति
मागनजाव ॥ वेनकेवसभागदिनेनन
भसमलगाव ॥ छ्रापकेवसभपापगोव
कोथसबताव ॥ इहभातिछ्रीनस्यु·
मैकरीनघसिबेलोछ्भिमानछ्ति ॥ उ
रनिसवासहरदसडावेहकबहनहाव
गसरनि ॥ ५१ ॥ हरिकोपंथसहरपंथ।
बऊछ्रापबलाव ॥ रहीककीरीहमा
गछ्रपटछ्याव ॥ केहइकेनबनवास
मंगाबऊदटबवाव ॥ सबनिरंतरगानिर

नेउनिध्यानलगावे॥उनिथनमरमसी
मलानउघभूपमेंायघउरपालपर॥सथ
नलिपमाब्याक्रलमहोमरमापतिस
मवेहपर॥५२॥नीतनउनिभूपनयाइम
नेउकननबिचारे॥निजपरजापरदंडका
नभवभीतरसारे॥राजधरमकीसिष
नभूपनहैनेननिहारे॥पानामकननिरे
नरधरमनवीनसधारे॥जगप्रावडवा
कउरापणबिजेबहनयाइभूपनिकरे॥
राजाधिराजामहाराजाहपमभइसदा
पक्षमधरे॥५३॥भयोउपदवपकस
नोनीकेमननलाई॥बड्नामननागय

वै
प्र धं
ना
४८

48

एसो है पतीत न सुजन को आई ॥ कहूं क
हूं मन लाइ महाजन प्रेम लगाई ॥ आन्त
भजे हरिनाम मैन नेत नीद मिटाई ॥ यह
हरि भगवान सुषी जन भजन ने षोटे उर ।
परधेर ॥ यह हरि भगवान प्रवाचन क ।
हिमकेत न वसुल गुणत हात न कोरे ॥ ६४
चारवाक सभै उरबात प्रभंगु षोबघा
ने ॥ महाराजन हिकृटगो देउर सत प ।
छोने ॥ एक पापनी नारि भई मन सुजा
ने ॥ यह नाम नारायण उ हे ताहि के सं
ग मिलोने ॥ प्रभ इन अपरायन लेउरे ॥
महायोगानी प्रबल प्रीति ॥ जगो चारवा

केकेववनस्तनिकरोउपाइस्तयथाम
ति ॥ २५ ॥ महामोहउवाच ॥ अबक
लकीमतिबारानीयोहमजाननेया ॥
लत्तुनामनारायणमाब्रजिनडरमा
नेया ॥ इकराजस्तयकोकरणयाज
गभानेया ॥ अघमेधमघमालिकरया
नगाहानेया ॥ इहब्रह्महत्यामातबय
परपतिनीगुरदारति ॥ अबकेरनिड
रजगमाहिजनडरनामनारायणम
योकति ॥ २६ ॥ ॥ क्रउधमेचीउवाच ॥
क्रपेक्रेट ॥ नामनारायणमहाउष
भूपतिजगगायो ॥ अजामेलइकबा

वे
प्र॰ पं॰
ना॰
५९

49

रलेयानिद्दबंधमिटायो॥ गोलिकानेप
ट्टासीनांमनेतेमतलायो॥ नामद्रुह
निटांमिलयोम्हनिद्दवेकुंटपटायो॥
म्रगजपतिश्याकलबारेइकनामना
रायणलयोनब॥ राजाधिराजामहा
मादेप्रभताद्दिक्षुडायोनब॥ ५१ ॥म
हामाहेउवाच॥ श्लोपंश्चेद॥ नामक्रुउधम्र
नेरावेउम्रुउधपक्षाने॥ जननीनामक्र
उधधरेयोश्रितनेउरम्राने॥ नेयद्दनि
घलमवचनमाहप्रतमंतबघाने॥ ना
मनारायणनीचवेदजगमेराहाने॥
प्रबलादिविनामेहेनकक्षुकेहारउणारम्र

गटकर॥ ज्ञानसिंतविचारभ्रमनिमलज
नपरेभजेकहिनामहरि॥ ५८॥ यतीयर
मुयनदानननेविकमननैमेध्याने॥ निरय
वभजेननामदानहिनींदमबने॥ याव
फकोरीभेसमूढहूनारयमाने॥ वि
नंसतेवसवानहनध्यापडनमकरजा
ने॥ इजनरणध्रवमधामाहिजननजेवि
षसउपवनध्रति॥ ऊनिउभेडक्ष्जरवाप
नेयज्ञसननदाराविषेगनि॥ ५९॥ कवि
वाच॥ दोहा॥ याध्रवसरइकथ्याघोपत्रेहा।
मननरध्यान॥ महामोहभूपालकोजा।
यजयकीनबखान॥ ६०॥ उननदिपाने।

बे
प्र० प०
ना०
५०

50

आयोअनाचारपतहार ॥ यहअभपत्र
पठायोलीजेआपबिचार ॥ १०१ ॥ सुनक
रपत्रपठनहितअरयोनाहिसुअन ॥ १
वहपानीपठनेलगेसुनोभूपदैकान
१०२ ॥ अनाचारैवाच ॥ कैपैक्रेट ॥ उनर
केसभैलोककैरेमेमिलापवाइण ॥ स
मकेईसनननबकेसुषमेलननवायण
नारियरमतेहोनेभईबऊथोगिरडाइ
ण ॥ कहोंधरमकेकथारमेबिभचार
रमाइण ॥ प्रभइतउत्तरिमतेसुनोअ
नाचारबंदनकेर ॥ यमआचारनाबि
नप्रभभटमरामननेमपरे ॥ १०३ ॥

गुलाबसिंचयैहौ भनेमाननजेसिर

मौर ॥ ९९ ॥ महामोहउवाच ॥ कवित्त ॥

कहाभई संकहानि संकचारवाकरहे

काम क्रोध आदि वीर नाहि कोनिवारहे

काम के भये विकार भगानिको विचार

कहा होइ गीन उटेक हेवेदयोउचार है ॥

वैरी होइ छोटोन उमोटे करजाने उधज्ञ

मेने वे बल को समूलते उषार है ॥ जे तन

के हनबलउपायके निकेतनजोई भूपति

मे वेन स उपाय को विचार है ॥ ९२ ॥

दोहा ॥ लखुअरिअवसरपायके उघ ।

दायकअवनीस ॥ अहिकंटकपगमें

वै
प्र॰ थ
ना
५१

गडेपौडोदैनबसीस॥ ११३ ॥कबिवाच
चौपई॥ महामोहतनबडचप्रकारा॥ दै-
वैकोममभैंनद्वारा॥ द्वारपालिइतनै
चलआया॥ आरपाकरौदैवजगाया॥
११४॥ महामोहोवाच॥ चौपई॥ कामक्रो-
धलोभमदमतमर॥ ब्रह्मनहीकोंजिन
कैकोंममसर॥ तिनकोंआइहोयाममं
दोजो॥ विभ्रमगतिकोहिंमनकीजो॥ ११-
५॥ द्वारपालतनबसीसनिवाप॥ जोप्र-
भकहेकोगतिमजाप॥ इमकहिद्वार
पालजबगाया॥ पत्रहमननआवत
भेया॥ ११६ ॥पत्रीहारउवाच॥ चौपई

51

चारवाकउवाच ॥ चौपई ॥ औरसुरूपकेबेनती
अहे ॥ चारवाकमेंतननहिकहे ॥ तुमभग
वतिसमकेसिरदारा ॥ तुमरेवचेनिस
लेसमारा ॥ ७ ॥ महामोहउवाच ॥ कौन
बेनतीनहिमैंकावा ॥ चारवाकतुमप्र
गटमनावा ॥ तुमभेरेअतिसैहितका
री ॥ तुमकोकहाभयोदुखभारी ॥ ८५ ॥
॥ चारवाकउवाच ॥ चौपई ॥ विधानभग
नितामरकहहु ॥ महाप्रभावधोगाने
मधु ॥ कलियुगविलसचारसुकोनी
॥ नटपिहैबालभुयिपरवीनी ॥ ८६ ॥
॥ नाजुग्रहनरवेमउदोरे ॥ हमसेको

वे
प्र ५.
ना.
५२

टनमकोनिहारे॥ देवसदारहथोसव
धाना॥ बिसभगानहेयेबलवाना॥ १०७
एकबारनहिपारटिकाए॥ मेरेनमूल
नबऊरसमाए॥ नहिवैरागनहोसबि
वेका॥ सेनसेनरिछबोयेटेका॥ १०८॥
कबिवाच॥ चौपई॥ महामोहयहसन
येजबही॥ श्रतिभभयोसमनमेतब
ही॥ मनहीमेयहगाटीसहाई॥ महाप्र
भावयोगनीमाई॥ १०९॥ दोहा॥ सहाछे
घटमेमोकेरमारीमेरेनमोइ॥ सेनसेने·
हमकोहेनमहापापनीहोइ॥ ११०॥ दोहा
महामोहमनयोंउथयोप्रगटकेहकठोर

52

उतकलदेशाहतेहमआपे ॥ प्रभपद
पंकजपासप्रणापे ॥ नाहितुरषोतमा
कोअसथान ॥ साप्रनदिजाहिहैमदस्मा
न ॥ १७ ॥ यहवानारसयहजगायाया ॥
जाकोफलबड़वानमहाया ॥ कोनप्र
वेशानलाइसबेरा ॥ त्रहतेनिनभूपति
हेरा ॥ १८ ॥ यहभूपतिकछमेंउवि
चारे ॥ चारवाकसोवेदकनारे ॥ चलोंस
मीपस्वपत्रदिखाऊ ॥ कारयघ्यानवेर
लगाऊ ॥ १९ ॥ गयोसमीपस्वपत्रदि
खायो ॥ जैजैमवदकनुषोअलायो ॥ स
दमानपदवंदचकोरे ॥ पत्रलिख्योप

वै
प्र·ये·
ना·
५३

53

छयोग्रभमोरे ॥१२०॥ सुनकरमोहम
यानिमलीना ॥ हेकछुडहकरभयो
मलीना ॥ बारबाकप्रतिछप्रलाई ॥
प्रबनहिबेनसुबेरलगाई ॥१२१॥ चौप
ई ॥ संतेकारयहाइनदोनी ॥ बारबाक
रहेयासबथानी ॥ बारबाकसुघतथा
प्रलाई ॥ गयेबिनाभूपतिसिरनाई ॥१२
२ ॥ दोहा ॥ महामोहनबपत्रकोबैठप
छोवप्राप ॥ गुलाबसिंघयाजगतमैं
जिहकोयापरताप ॥१२३॥ मदउवाच ॥
कौपकेदर ॥ समतनबनारसधामबिषे
परकेनसदाप नीनमदाबसंडपरे

मरतरस्तुनिपाये ॥ अडिगीसिद्धासनवैठ।
दसीसपरछत्रफिराये ॥ राजाधिराज।
महामोहपदमदमानेदवेंदनकेरे ॥ प
भइतिडरबीत्तनमग्रायतननभइसदोम
नमैथरे ॥ २४ ॥ ॐरवेवनीनाथमनो।
नीकेमनलाई ॥ मरथामातसमेतमाति
हतीमडलाई ॥ दयाविवेकसनमानक्र।
निकेपासपठाई ॥ निउनिउकरोसबाधा।
मोहसंगदेहामिलाई ॥ प्रभवहादिनेरेनसेवो।
यकरजिहांनिहाविषछिगग्रानेहे ॥ वलिर
नग्ररबीत्तनमग्रायतननपत्रपदमदमानेहे ॥ १९
ॐरविरतोतकहेस्रहेनाथमनीकेमनथा।

वै
प्र· ध·
ना·
५४

ये॥ कामसहतनोधरमकहूंकहिहा·
तिनिश्रोता॥ वैरागविवेकसहगछमनो
कछुमेंतदिछायो॥ कहूंकहूंहरिहित·
होतहुंसहूलषणायो॥ यासेंप्रमाणप्र
भश्रापतसजानभलेमनसहियरो॥·
प्रभजितिहिविधिसिंटभ्रातियनसोउपा
इसीयरकरहा॥१२६॥ ॥महामोहउवा
च॥ कपैकेंद॥ महाशठवक्रभएसोति
नेजिनउरकीनो॥ कहोहोइगीसातिभ
योजगकारजलीनो॥ ब्रह्मानिसहिनकोर
धुनरहधुनजगतनवीनो॥ दषमनलविनसक
सेभरहेगोगोसुघभीनो॥ कमलाकेपति

54

सेवालमकरीलिखतउरहोपयोनिय।
सेनकर॥ उनिसेरजगानकोजीवैमैसाति
कहाकहिहोइऊक॥ १९ ॥ महामोहसुरंक
रषन॥ सवैया॥ जालमजाहिसितावस्रवे
ममकामकोपउसंदेसहदीजे॥ धरम
विनीतभषोहमसोइनकोषियनाहिवि
साउसकीजे॥ जिहभांतिभजेनमनोहरी
कोतिमयाहिभलेदिछवेधगहीजे॥ श्रू
लइहेदिछयाहगहोबसयाहमपनक
छूममछीजे॥ १८॥ दोहा॥ भूपमोल
मणिजोकहोदेवकरोवहजाइ॥ श्री
सेउरछबषानकैगायोवेगसिरनाइ॥

चं
प्र॰ प॰
ना॰
५५

55

चौपई॥ महामोहरुपनिचिंतनकरैहे॥ को
नरुपाइसांतिमगमरेहै॥ अथवागोरउर्ध
इनकोरे॥ असेतनसंगमहबोलमगोये १
क्रोधलोभलोममभटजेते॥ बेगबोल
येमगलेतेते॥ जिमअभकेहृबेनेतिम
कयो॥ अमेभावरुकघरकगोयो॥ १३१
दोहा॥ क्रोधलोभदोनोनबीआपसभा
मकार उलाबसिंबचूपबेदपदलागो
करनउचार॥ १३२॥ क्रोधउवाच॥ सवैया
प्रभमोहमनीयदबांतिकेहेनमेरसं
गसांतिविरोधकमाप॥ मरथाहरिकी
भुनिभगतनयानिनकीयदहोनभईस

ਸਹਾਇ ॥ ਸਮਸੀਤਨਸੋਂਤਿਨਕੀਬਾਤਿਕਹੈ
ਯਹਬਾਹਨਤੀਨਕੁਪ੍ਰਾਣਗਵਾਇ ॥ ਉਨਕੋ
ਬਲਨਾਥਕਹਾਕਹੈਯਕਛੁਭਾਖਤਹੋ·
ਸਸਨੋਮਨਲੋਇ ॥੨੩॥ ਗ੍ਰੰਥਕਰੋਡਿਗ
ਵੇਤਨਕੋਬਧੇਾਕਰਡੋਰੋ ॥ ਧਨਵੇਤਨਕੋ
ਸ੍ਰਧੀਰਕਰੋਗੁਨਿਚਾਰਕੀਮਤਿਹੁਰ
ਨਿਵਾਰੋ ॥ ਹਿਤਕਾਰਯਨਾਹਿਪਿਖਕਬਹੀ
ਜਿਨਕੇਉਰਭੀਤਰਮੈਪਗਧਾਰੋ ॥ ਤਿਹਧ੍ਯਾ
ਨਕੋਨਸਨੇਕਬਹੀਸਪਤ੍ਯੋਜਿਨ·
ਨੋਖਿਣਮਾਹਿਬਿਸਾਰੋ ॥੨੪॥ **ਲੋਭਾਵ**
ਵਾ ॥ ਸਵੈਯਾ ॥ ਜਿਨਕੇਸਿਰਊਪਰਹਾਥਧਰੋ
ਤਿਨਕੀਸਟਸਾਸਨਮੀਤਬਨਾਵੇ ॥ ਸਸ·

वै
प्र॰ प॰
ना॰
५६

56

मोरयकीसरनापरफूलाहिनाहिकदा
चितेतेनरपावे॥ तिनकेउरअंतरसांति-
कहांननजेयनकोदिनरैनध्यावे॥ अब
क्रोधसेषसनयेसककहोजिहभांतननते
पजुमैमनलावे॥१३५॥ इहमतनगइदस
फूलतहैमनमपहतरंगनमेंभांनसहाप॥
लिषपरसभूपतिमोहरयापलेलिखा
वफेआरबेगालहजाप॥ इहगाउदपक
फेआरकेहनरजे इहभांतसबीनध्या
प॥ तिनकेउरसांतिकीकोनकयाइमवि
ननदीजनमाहिबछाप॥ १६॥ क्रोधोवाच॥ मोहि
प्रभावसमीतसनोम संसगदतेजननइहकमाप

हनेमनबांसिवसीमनेनिवेचकेकाट

तथादिनभन॥

बगाप॥ बाऊजमारम्हेराणतमेभृगुनं

दनप्राप्तभलीविधनाप॥ म्हवसिहगु॰

नीघरकेम्हनतेमेउनिकोंसिकप्रापम्ह

नेम्हनदाप॥१२॥ दोहा॥ विद्याकीरतं

वेतउनिसदाचारदातार॥ मेंपदपनताप

नरभूषनाबिनमेंभजेविचार॥१२८॥ सो

भउवाच॥ चौपाई॥ न्हम्हेप्राउबेगाइनउरा

मेरोबनम्हनेम्हतिभारा॥ न्हमोबेटम

मीपउचोरे॥ प्रागपाकरोम्हप्रणपारे॥

हेभकदीम्हाणप्राणपारी॥ षिउग्रा

मउनिनगारउदारी॥ पुरम्हकदीपभुमे

२५

वं
प्र॰ प॰
ना॰
५२

57

कोवेहै॥स्रामपास्रजिनकेमनगहै॥१४॥
तिनपरंक्रपाश्रीकरंया॥ब्रह्मंडला
घनंहितामनभरंया॥नःस्रीनाउरंचरण
टिकैहै॥मांतिकहांलगानैनरपैहै॥१५॥
नःस्रीवाच॥दोहा॥ स्रारयंसनैस्रापदी
मदांबहोमभैभान॥संबंयामंसनंमवी॥
भईममत्रिपतौवेकौन॥१५२॥ब्रह्मंडके
टिकोणाइनरमेनंरमंगतिहाइ॥मेरांउर
रतंपरंईतासनमातिनंकोइ॥१५३॥को
थोवाच॥चौपई॥ हिंसंस्राउइतंममउरा
भाघतैवनम्हैनांतममैमारा॥इतनेमहि
हिंमाढिगआई॥स्रारयमतंममैदहव

नाईं॥ ५४॥ तुमसमथरमधारणीनार॥ यह
नवसंगनिकोउपकार॥ मातपितादिक
बंधहैसोई॥ करोसुखेनउरोनहिकोई॥ ५५॥
सवैया॥ कोनगिनाःवनमानथहेउनकोन
सुमकडतातहमारे॥ भ्रातसभेममकीट
समानसुबांधवपुंजबनेसभमारे॥ जात
नईंघलेहेसभहीःमेबालतहैजउकीस
धुकोरे॥ मीबेराउकरकोधवलीकविसे
बगुलाबसउफउबोरे॥ ५६॥ नवाजवेद॥
सगुरभलोइनेकुलेसमसतधाजमारहो
नवासुबालविधलोनपककोउबारहो
समसतभूमिकेविघनयादिकोरहाईदे

वं
प्र॰ ना॰
५८

58

सह्वोयज्ञालेनेनकीविरामनेतोह्रपाइहै
॥१४७॥ कविवाच॥ दोहा॥ हिंसातेंह्यज्ञको
यज्ञनिलाभमिलेयहद्वार॥ताइसमीप
हैमोहकेजयजयकीनउचार॥१४८॥ म
हामोहउवाच॥ दोहा॥ सरधाझ्तरीमांतिहै
हमसंगबेकेकमाइ॥तभांतिहोलिप्राबो
बोयकेसमेतीपाइ॥१४९॥सरधाग्रीबें
यहितगणमानहपबेन॥त्रलाबासिंघ
मावीकेहभयाश्रघाडेबेन॥१५०॥चौपई॥
महामोहग्रनिकीनबिचारी॥सरधाग्री
सोतिनिहोगी॥तोनिग्रहकोअौरउपाइ॥
सोमेरेउरभामसमझाइ॥१५१॥चौपई॥

सोतिमातसरथाहैजोई ॥ देहपरतेतसदास
सोई ॥ उपनिषनबिषसरथानरजेती प्रथ
महटयेसगलीतेती ॥ १५२ ॥ मातविभुकत
नेबेवजहोई ॥ मेरसोतिनिषिणभीतरसोई ॥
सरथाबेगाहटावनकाज ॥ मिथ्याइहछ
लेयआज ॥ १५३ ॥ इनउतभूपतिहछपसारी
विभ्रमावतीसुनाहिनिहारी ॥ विभ्रमाव
तीप्यारीजोय ॥ मिथ्याहछसबोललिआ॥
ये ॥ १५४ ॥ विभ्रमतीवाच ॥ देवीकरीजोश्र
रूसोको मिथ्याहछमिलावोतोको ॥
मकाहिमागस्रघाडागई मिथ्याहछस॥
हितगनिग्रई ॥ १५५ ॥ अथप्रेमानरमिथ्या

चं
प्र. ना.
५९

दृष्टिविभ्रमावतीका ॥ मिथ्यादृष्टिरुवाच ॥ चौपा
ई ॥ पेषे बहुदिन भए बितीत ॥ निकट जा-
न लाजत बहु चीत ॥ महाराज उपले बन
केर ॥ तातें चीत सषी मम मेर ॥ १५६ ॥ विभ्र
मावतीउवाच ॥ सषी तोहि शुभ के जनि हा-
रे ॥ तो भूपति निज आप सं भारे ॥ तबा को
हे प्रति मे प्यारी ॥ तोतें डेरो न चीत म फारी ॥ १५७
मिथ्यादृष्टिरुवाच ॥ सषी अलीक सभाग हमा
रा ॥ काहे को तें बहुत उचारा ॥ भूपति मो मैं
चीत न धरई ॥ तें मम काहि बिडंबन कर
ई ॥ १५८ ॥ विभ्रमावतीउवाच ॥ चौपई ॥
सषी अलीक सभाग उचारे ॥ ॥

59

सबदीतौनिमैनैननिहारो॥नैरानैननजबभूप
निहारे॥नैामैइमैनैश्रीरावचिंतारे॥१५९॥श्री
रसषीइकबालउचारो॥तुमतैनैननकैनाहि
निहारो॥कानैनैकोनैनइहाकीनौ॥तुमनैनै
नसषीरसभीनी॥१६०॥मिथ्याहष्टावाच॥
पकपतीकैजबऊपावौ॥तिननकौनीदनैनै
नमकारी॥मैकौमगललोकजगागेहै॥नौ
हैनैनममकिहविपलहे॥१६१॥विभ्रमाव
तीवाच॥दोहा॥सषीप्यारीलोकबऊमोसैं
केरोउचार॥जैनौकौनिमदिनभजेजोसा
केरंप्यार॥१६२॥मिथ्याहष्टावाच॥चौपई॥
सषीमोहममनाहपछानो॥कामक्रोध

वें
प·नो·
६

60

लोभगुनिजानो। अथवा मनोनतनिजमार
एकएककहिकेगउवार॥ १६३॥ याक्रल।
भीनरेनिनिपजाए॥ मोहबिषमगलेमन।
लाए॥ बालअथनजागुनिजेई॥ मोबिनरमि
ननिमहिनेतेई॥ १६४ ॥कबिबाद॥ दोहा॥ क
मक्रोधगुनिलोभयहगलोबसिहमहम
न ननमेंश्रामहछबिनेहोननहीपढिवा
न॥ १६५ ॥बिषमावतीवाच॥ चौपई॥ काम।
हिकीरतनपरमण्णारी॥ हिंसाक्रोधकीसुनी
सनारी॥ तृष्णालोभहकीजगगोहे॥ याबि
धनानिमसेश्रारबतेहे॥ १६६ ॥दोहा॥ तेमम
केपनिमायमरेइहबलतोवेमोह॥ नेउपकी

कौंकोगरहीकेरनईरषाबोगह ॥१२७॥ मिथ्याह

होवाच ॥ चौपई ॥ केसेसषीईरषाकरई ॥ मो।

बिनप्राणानतेषिनधरई ॥ पुनिहिंसमात्हस्मा

लोजेती सेरोभेलोमनीवेनती ॥१२८॥ क

बिवाच ॥ दोहा ॥ मिथ्याहहसुमेरेजबगुल

बसिंघदमजान ॥ हिंसात्हस्माश्रारिलेहा

हिसगलगुनहान ॥१२९॥ विभ्रमावतीउवा

च ॥ चौपई ॥ याहीतेसषीमोहहबषानी तो

समसुभनहसरवाभो ॥ तोहिसुभागजैब

वदलेहे ॥ तेगनतरूपप्रमारदवेदे ॥१३०॥ स

वैया ॥ सषीजेरकेहोनिजनीदखिनापुगा॰

नैनसुरोजसनेत्रकुलापा ॥ युगनूपरकी

सं॰
ग्र॰ पं॰
ना॰
६१

धुनिवीनहरेपभमाविषपदतेबलसा
प॥गाजगामनिहेगतिमंदवैलेउरवाह
नैहैनिजनाहरिफाप॥इहलषएसैंत
वनाहिपिषेडरेहोउरसेककैशुनसाप
१७१॥मिथ्यादृष्टिवाच॥सवैया॥सषीका
हेतेसंकभईतमकोहमनाहकौहम
नाहकीश्रारहमेसहषपाप॥इकेश्राव
केहारहउमाहश्वलीजिहतेसगालोउ
कृतेनाहिमिटाप॥शुवतीशुभवेंदनिहा
रतहीनरबीनतवकोरमदाहषाप॥हगाकंज
फिराशपिषेनवतीकहिनाथातेजानरनाश
साप॥दोहा॥उमभाषनेदोनेवलीश्रविनमोहनिर्दै

देवीमिथ्याहहयहद्रेमेकीनउवार॥१२ ३

सवैया॥ कदलीसमसंचविरंवरवीउ-

निफलनमालस्त्रकंटमहाप॥ करवे-

वलवीउभारतहैकचमेडलवेदनले

पलगाप॥ जननीलसमेरोजबडीश्रघीश्रा

पिघदीरग्यमेमनकोत्रिपताप॥ करडा-

लनकेकणबालतहैभनिन्नूपरकाम

सिघीहरघाप॥१४॥ उघचंदसेरोजम-

नोश्रघीश्राउतिदाडमदंतननेहरलजा

ई॥ जगकामनिदायतपेजननेहगासिव

स्थातिननतापमिटाई॥ नभचंदकला

जउभूमिश्रईउनपेघननतमनमेविगम

वे
प्र. प
वा.
६२

62

ई मंगलाबपिषेमयमूरतसीमलमूवन
तानहिदेतदिषाई ॥ १७५ ॥ विभ्रमावतीवाव
दोहा ॥ यहमहामोहसुप्राणपतिनेहप्रति
पारीनारि ॥ वैलासमीपप्रसंनकरभाष
येमानहमार ॥ १७६ ॥ सुनिकैमिथ्याहष्ट ।
तबजाइसमीपनिहार ॥ महामोहमहार
नप्रतिजयजयकीनउचार ॥ १७७ ॥ महामो
होवाच ॥ दोहा ॥ पीनउरजजघनंक्रकोमलकी
नेमोहनिहाल ॥ हरनाषीसिवसिवाकी
सोभाहरेबिमाल ॥ १७८ ॥ हसीसामिर्थ्य
दृष्टनवमिलीमरुभनाणमार ॥ महामो
हसुघताहिकोनिजउघंकेउचारा ।

दोहा ॥ ग्रहेप्यारीसंगनबलहेयारसाइ
नसार ॥ जराइकागारमेंटिगनजोबनभयो
उदार ॥ १८४ ॥ सवैया ॥ पूरबमैंनानबजोब
नमेंसुमनोजनबकारभयोबलकारी ॥ बी
नमेंथेउरब्यानंदयोसमभैऔरपदारथथे
सुषकारी ॥ बीतइकागरनानरहापन·
तेसुषचंदग्रमीसुनिवारी ॥ संगमैतेनब
जोबनमेंसुबफेरभयोनबप्रेमउचारी ॥ १
८१ ॥ कबिबाच ॥ दोहा ॥ नकनापनभ·
जिबिषेसुषबकरोदिननभजेसुवाले ॥ जरहा
पनबिनभागामटसुवतीमदनबिका·
र ॥ १८२ ॥ मिथ्यादृष्टेवाच ॥ सवैया ॥ ·

वं
प्र॰ प॰
ना॰
६३

63

महांराजकेहोइकबातसुनोजिहउप
देहातकपालपीया॥ जगगुरणनाहिम
नोरथीहेकछुवाहुतनावङंग्रारवेली
या॥ नवसोवनतेसंगमोहलेयाबिन
सेवनतेकिछकामनीया॥ करप्राइस
बेगकेराभरतामममाहिनिमितस
यारकीया॥१८६॥ ॥सैवेया॥ ॥तो
हिबिनाबततहोनिसबासरबामउरस
निणारीमोहणारी॥ माहिहिबारय
थाप्ततलीतिमनोतिवेसासमबीतम
फारी॥ बीतबिषतवप्रेमरहोममनी
नखिरममनोजकीबारी॥ ॥

बीतबिषैनवप्रेमरहोममनीतबिरस-
मनोजनकीबारी॥ मिथ्यादृष्टप्रसंननभई
मृषासादिकैयाकुषणउचारी॥१८४॥

महामोहउवाच॥दोहा॥ औरकैहोदासी
मृतासरथासांतिसुजान॥दूतीभईबिवे
ककीपत्रलिषमदमान॥१८५॥उपनि-
षतविवेकमिलापहितभईकुटणीजो
इ॥जिहिबिधंहोइमिलापनहिकरौपा
इसुकोइ॥१८६॥पकउपाइसमेकेहो-
वहीकरोमनधार॥सरधाजोउपनिष
तकीसोअबदेहुनिवार॥१८७॥अक्रा-
नीनीपतिकुलममसरधापापननारि

वे
प्र.ष.
ना.
६४

64

केसनने गहि ना हि कोदेह पषंड मति
थार ॥ १८८ ॥ मिथ्यादेषावाद ॥ चौपई ॥
यह कारन जकी विनन कीजे ॥ मम वच
नै निभयापिषीजे ॥ मेरा वचन मेन जब
रेडी ॥ तजे बेद पथ भजे पषंडी ॥ १८९ ॥
मेरा सी वन जब लगि होई ॥ बेम पषंड उ
हने पर थोई ॥ मिथ्या धरम मिथ्या उ
कति ॥ मिथ्या बेद मयाउगति ॥ १९० ॥
॥ दोहा ॥ ॥ या बिधि मेरे वचन सुनि ॥
तजे बेद पथ सोर ॥ जन ने बेद न मा
ना मिटि कहि उपनि षन मेंहोर ॥
॥ १९१ ॥

सवैया॥ जहहषानसपाननतीसषहैव-
हमोषकेहाकतनआवतकामा॥ पवेला
कुनहासषहाइकेहाउलटेसतनना-
गावनथामा॥ जगवेवनकेहितबेयान
रबीननयूरनवदयेतिननामा॥ सरथा
सानियापथिबेरतजेसपषेडनकेवसैह
वहवामा॥ १५२ ॥ महामोहउवाच॥ चौपाई
श्रोसकेरणारीजबही॥ मेराइछामिधिज
गनबही॥ हमकाहिप्रमभयाग्रधिकाई
सषद्धमयोगाहिकेवलगाई॥ १५३ ॥ मि
थ्याहष्टिउवाच॥ भूपतिहैषहनहिरीतिस-
हैहै॥ मेरोचीतसबकूतलजेहै॥ मह्रा-

वे
प्र॰ ध॰
ना॰
६५

65

मोहनबकीनउचारा ॥ धमसेयावेनेग्रब
भूपग्रगारा ॥ १५४ ॥ दोहा ॥ ग्रेमेग्रेषाब
षानैकैगपग्रषोडानमारा पिषम्हपति
बिमैमेभयागुलाबसिंघवडभागा ॥ १५५
कहणासषीसमेतगुलिसोंतिसमीत
उदार ॥ जैहैसरथासोथहितजगसभपंथ
मझार ॥ १५६ ॥ ॥ इतिश्रीमतमानसिंघचरण
सिषगुलाबसिंहे
नविरचितप्रबो
धचंद्र
नाट
कश्रीग्रं ॥ क ॥ २ ॥
॥

दोहरा॥ मायांजिहजगमोहियोंबऊनंकुपं-
थभमाई॥ वहरुत्रुनाईकंदासकेंहोवहिनी-
नेमहाई॥१॥ दोहरा॥ जिहिंबिधिंकलियुग
फैलयोंसगलभमापंलोई॥ गुलाभसिंघ
नृपंसभामोप्रगटदिखावतसोई॥२॥ सवै
या॥ तेईहभांतिगापंजबहींनबसांतितया
कहणोनहियाई॥ ऊचबुलावतहोजननी
ममऊतनदेहिकहामममाई॥ सांतिसुनै
नेंननीरबहेकहिमानगईनहिंदेतदिखा
ई॥ तोविननंजीवनमोहकहांअबंप्रणात-
नोसुलगेदुखदाई॥३॥ सुगबंजितंकानना-
प्रीतिकुनींजलमैंलनमैंतवप्रीतनई॥ अ

चे.
प्र.ध.
ना.
११

66

तिणावननयालननप्रीतनऊनीतनपमांतननमैलि
वलीनभई ॥ जिमभोनचंडालगऊकपला
तिमंमातनपषंडनहायगई ॥ श्रबजीवनमा
नकोहोतकहांतनुडारइहांयमलोकगई ध
बिनुमोहिमिषेनहिनावनथींत्रकनाहिं
कलजननीशुषपाप ॥ नहिमोवननमोहिबि
नाकबिहीनहिमोहिबिनापषिमाहिमिथा
प ॥ सरथाबिनुमोहिपिषेमरतीनहिपकमह
रतिप्राणरहाप ॥ श्रबतोबिनुजीवनमोहि
बिडंबनप्राणबनेयमथामसिथाप ॥ प ॥ करणे
मजनीश्रबमांतिमरेजगनंममरेऊबिनासब
नाई ॥ श्रबमोहिबिलंबमहानननहींतनुदेउऊतामें. नेमा.

हिजलाई ॥ जनंचीततनिवासनजोमनजनीन

हिजाउजाहांसगईममभाई ॥ मनिमांतवि

लापमहाकरणाद्गिनीरबयहयोबल

इगललाई ॥ ६ ॥ करणउवाच ॥ सवैया ॥ स

जनीइहभांतिकहेसुषअषरज्वालमनो ।

सुदवानलकी ॥ सनिप्राणबिलानदरात ।

नहीउरमोहिभयोमनकुलीयलकी ॥ स ।

सुहरतिप्राणयरोसुषकंजप्रसननहे ।

हलकी ॥ अबसोथलहेजगमेमरथानेश

ईकछूबातिभईकलिकी ॥ रतनप्राउतपुंन

अरंनृपिषेसुनअनमजोमनतपाबनमाई

नटगोमतीकेयमुनातटमेकिबसीसभ ।

वें.
प्र.ध.
ना.
६७

गीरथीकेतटमाही॥इकदानिनमोहमहीपड
रीछकपनजाइबसीगिरकंदरमाही॥क्रानजोगाल
कैमघमालनमैसरथाकहंजाइबसीजगमाही ८
शांतउवाच॥दोहरा॥सषीनिहारेगी-
कहांसरथाकथानलेस॥मैकरषेत्रगोम
तीश्रोरपिषेसभदेस॥४॥सवैया॥सर-
ताननटमैबहुभांतिपिषेतपसीजिनमांहि
अनेकसहाप॥पुनिमांहिमिमांसिकथाम
पिषेचमसाकटरूपस्यानबनाप॥पुनि-
अमचारनिहाररहीदिनकोटिनकोटि-
सजातगनाप॥नहिबातसुनीकहंकान
नमैसरथासजनीकहिठौरबनाप॥१०

67

कहमणोवाच ॥ चौपई ॥ सषीकहोसबया-
है जोई ॥ षंडनकेबसपैरनसोई ॥ जेअति
सुंनिवतीजगनारी ॥ तेयाविपतिनलहे-
पिआरी ॥ १ ॥ सांतोवाच ॥ दोहरा ॥ सषीक
होइबातसतिजोधाताप्रतिकूल ॥ कहोअ
संभवकोनरातिवैसबअपदामूल ॥ २ ॥
सवैया ॥ नलकानमजाग्रहरावणकेह
बसीउषभांतिअनेकभरे ॥ बसदानवबे-
द्रईसुभईतिनजाइरसातलवासकरे ॥
पुनिगंधर्वकीउहितापनिदैनहरीसुम
दालसरूपवरे ॥ विधवामभएजगमेस-
जनीकरूआपदकोननसीसधरे ॥ ३ ॥ रो

वै.
प्र. थ.
ना.
६८

68

हरा ॥ तांतैचलेपषंडग्रहमथानहांजिहोर
कहणाकदहोयोमचलमषीरमकहिचा
लीदोर ॥ ५४ ॥ सवैया ॥ करणानहिग्रग्रवि
लोकडरीमजनीममगषमनैननिहारे ॥
पुनिसांतिकहयोकहिगषमहैकरणा
नवपीठहपीठउचारे ॥ मलपंषगिरेमुषदं
ततनैतनमैडरगंधभयानकभारे ॥ मुक
ताकटिकछमलीनमहारहमूडपिसं
गमफंडषिलारे ॥ ५५ ॥ दोहरा ॥ पूछि
सिषंडमकरविषैश्रावतहैरतगोर ॥ नैन
निहारनमैमकोबीतरडवतहैमोर ॥ ५६ ॥ सां
तिकहयोगषमनहीपुरगलहैबलहीन

करुणाकरहेम्होकोनप्रनिश्चेस्रोपवसम-
लीन॥७॥सांतिकरुयोम्हपिसाववपहि-
श्चेस्रेमोमनस्याइ॥करुणाकरहेपिसाव
नहिवहिनिससैप्रगटोइ॥८॥ह्रजम
हिश्रकामसैकिरणप्रकामसेलोइ॥श्चेसे-
ममेपिसावकाकहिश्रवकामम्हहोइ॥९
सांतिकरुयोज्ञपिसावनहितोयहपा-
पीच्छ्राहि॥निकमयोश्रवहीनरकतेश्राव
तहैपथमांहि॥१०॥वक्षरोसांतिविचारक
रिश्रवमैलघयोनितांत॥महामोहपठयो
श्रयोयहजगजैनन्निष्यांत॥११॥याकोदर-
मनहूरनदियहश्रतिपनितिमलीन॥श्चै

वे॰
प्र॰ य॰
ना॰
६९

मेसोंनिबषानकैफिरचालीसषटीन ॥२२॥
करणउवाच ॥ दोहरा ॥ संधीमहूरतितिथि
रहोसरथालेहितिहार ॥ यहीपषंडी॰
भाषयेमतियाभोनमस्कार ॥२३॥ गुलाब॰
सिंघरसभाषकरिदोनोषरीरकान ॥ तब
नृपसभाप्रवेसकरबोलयोजैनमिथ्यांत
नमोनमोअरहंतमतजेजनचलेउदार ॥ अ
गतगुरुकतिदोनोलहेमैत्रबकरोउचार ॥२
कबित ॥ नवहैउयारतनभोनकेमफार
गुनिश्रुतमप्रकाशादीपनांहिमैसुद्धार॰
है ॥ जैनवरभाषयोमिथ्यांतसरकांनय॰
हगादेजनतजोरैजगामुषमाषषणारहै ॥ य्ये

२४

५

सुनिश्रावकसुवाकमैंवषानोनममल।
यणगणतेसुदेहउपजाइहै॥सूत्रनरसुध
कोसीतजलसीसुथरेहोवतनसुधजल
कोटिननवाइहै॥२६॥**दोहरा**॥श्रातमवि
मलसुभावहैरिषसेवतेहैगयान॥रिष॰
सेवाकैसीकरोसुनहुकरोवषान॥२७॥
सवैया॥हरहतेपदपंकजकोअभिवंद
सीसलिवाइकरो॥भोजनजोमिष्टानमंहे
नितहिजिवावहुजोरकरो॥[illegible]भीतरजो
रिषबासकरैमननमैंनहिंसंचकरोषधरो।
गोपकृतोमनतंबोलकहयोइहभांतिकरो
भवसिंधतरो॥२८॥नितनेपथऔरविलो॰

चं.
प्र. य.
ना.
७०

ककहयोसबधेरतआउकहांविवलाप।क
रुणंतहिसांतनैहारनथीइनपेषनकोन।
कनांतहलाप॥सबथातहिआरसमाजब।
शीभूनिजैनसमानसेवेसवनाप॥कहिआर
सेमोहसेवेगाकरोसेनिसांतउषीमनमैसु
षफाप॥२९॥षिपणाकउवाच॥दोहरा॥
आवगनिषलकुटंबकोसबधेतंगहिआ।
ज॥कबहंमहूवतननजीसिथहोहिमम।
काज॥३०॥दोहरा॥मोहारसेसोईकरोराज
कुलीनमहान॥इमकहिनिकसेवेदोउक
रुणासांतबषान॥३१॥करुणाउवाच॥दोह
रा॥सषीणयाबीथीरथबकाहेतंउरधार ना

70

संमाउसरथाकेहेहैककुंजोरबलाइ ॥३२

चौपई ॥ अहिंसादेवीमोहघ्ननाई ॥ पषंड·

धामसवसाइकपाई ॥ पक्रवङअंबातेहैश्रा

न ॥ तामसीसरथाकेरेवषान ॥३३॥ दोहरा

तांतेसरथानामसीयहत्नेकैांउरपाइ ॥ अे

सेकहलाभाषयोअवपुनिसांतयलाइ ॥३ ४

शांतिउवाच ॥ चौपई ॥ सावधानसजनीमे

होइ ॥ जैसेकहेबानहैसोई ॥ याहश्रुतिउरा

चारणीहये ॥ अंबासदाचाररतिपये ॥३५॥

यहहरदरसनरूपमलीनी ॥ अंबाप्रियदर

सनसुषभीनी ॥ अेसोरूपताहिनहिहोई

संसामनमैकरोनकोई ॥३६ ॥ अंबायाकेव

चं॰
ग्रं॰ध॰
ना॰
७८
भि

71

सतनहिहोई ॥ जोतंकहिसतहैसोई ॥ चलेय
गारीसोगतधामा ॥ तहांमिलेजेवहिग्र।
भिरामा ॥ २७ ॥ योकहिचलीअगारीजबही
क्षुकपकनिहारयोतबही ॥ ७स्तक
हाथविषेदरसायो ॥ बोधमिथांनसभाम
हिम्रायो ॥ २८ ॥ भिक्षुकउवाच ॥ चौपई ॥
षिणभंगारसगलपदारथहये ॥ हैभीनर
बाहरसमपाये ॥ आदिनिरातममाहिगा।
यान ॥ दरपनशुषसमहोवैभान ॥ २९ ॥ सो
वहगयानवासताहीन ॥ फुरेविषैवितु
लषैप्रवीन ॥ योकहिपोथीआगेधरी ॥ सी
सनिवारप्रक्रमाकरी ॥ ३० ॥ अहोसाध

यह धरम सहायो ॥ जो निज सुष नेत्र धिक-
नायो ॥ जो मै सुष मो षजग दोई ॥ षट विना
जन पावे सोई ॥ ४९ ॥ सेवक के निज भोन म-
कारे ॥ सुंदर वा सुसमा हि चो वारे ॥ मन अन
कूल वाणक को नारी ॥ वज्र विधं भोजन धरे
सवारी ॥ ५० ॥ कोमल सेज सुबाणिक बि-
छाइ ॥ जो रदोऊ करदप बिनाइ ॥ सरधा स-
हित उपासिक जेते ॥ युवती सहित भजे प-
दतेते ॥ ५१ ॥ दोहरा ॥ अंग राग तन लाइ कै
बाणिक मनोहर नार ॥ भजे निसा सासिउ
नली पद निज पाणि मकार ॥ ५२ ॥ करन
उवाच ॥ सवैया ॥ सजनी यह कोन सम्रद्धि

चे.
प्र.य.
ना.
७२

72

इहांतनुतालसमानसुजाहिलेबायो॥सु
पिसंगाकषाइधरेतनुग्रंबहस्सबमजोध
रमैलटकायो॥गुनिभालसुकिंचनगुंउः
तहैकिपिषाकचमूलहतेउषडो॥डुमक्का
लविसालसुनालधरीनयतीनहिंजानपरे
रमकायो॥४४॥**शांतोवाच॥दोहा॥**बोधाग
ससजनीइहैभिक्षुकरूपबनाइकैचितहैसभ
लोककोयोमेरेमनग्राइ॥४६॥**अभिक्षुकोवा**
च॥दोहा॥यतीउपासिकयोरसमभस्तनोसु
निजनिजकान॥वाकसुधारसबंधहरक
हैसुगतिभगवान॥४७॥योकहपुस्तक
लीनकरषोलानिबायोसीस॥गुलाबसिंघपष

तसबैराजसमाजमहीस ॥ ४८ ॥ दिबैतैनस
भकीपिषोगतीसहभासहभदोइ ॥ षिणभेग
रसभभावहैथिरुतहिस्रानमकोइ ॥ ४९ ॥
सवैया ॥ इमजानतजोसभमोहजितोनि
जदासनस्रोरस्रगारनमाही ॥ भिक्षकजो
घरमाहिरमैतबदैषतरंचकरोमनमाही
मनकोमलतोइहभांतिमिटैपुनितेपष्य
पेषकहयोसुषमाही ॥ सरपेइतस्राउबि
लंबकहासप्रवेसकीयोसरथाषिणमा
ही ॥ ५० ॥ सरपउवाच ॥ दोहरा ॥ देवकरो
स्राइसप्रगटकरोकोनस्रबकाज ॥ मैषिन
मैमोईकरोतमसभकेसिरताज ॥ ५१ ॥

वै॰
प्र॰प॰
ना
७३

73

भिक्षुकोवाच॥दोहरा॥भिक्षुकसेवककस
गलजेताकोगहिनिजहाथ मोहिमतिश्र॰
तिथिरकरोसभेतिबावेहाथ॥५२॥सरथो
वाच॥दोहरा॥जोआरसमोईकरैश्रमसेवषा॰
नेवैन॰
निकमचलेवैसभातेसोति निहावेनेन॥५३
शांतोवाच॥दोहरा॥सजनीयहिभीनाम॰
सीसरथाजानीमोहि॥कहणाकहयोसुप
वहैभलीपक्षानीनोहि॥५४॥यहश्रवस
रषिवणकश्रपलाबोडीलमहाइ॥भिक्षुक
जानोहेरकैकुचेलयोभुलाइ॥५५॥वेभिक्षु
करतश्राउतमककक्षपूछोश्रबनोहि॥तेरी
तेरीमेयामेपिछोप्रगटिवक्षानोमोहि॥५६

सुन भिक्षक उनिकोप योवाषवचनकहे

व॥ ह्वाणापी मलपंकथलेस्रपरीक्षामोर

षिमणक कहे सुक्रोधनजिकरोवगस्र।

निरोध॥ श्रास्वगतनकरुस्रक्षहोकाहेक

रेक्रोध॥ ५८॥ षिमणकनंक्रक्षज्ञानहेश्रा

स्त्रकथाउदास॥ भवलग्रनीतमहप्रक्षहै

श्रवभाषयोक्रोधनिहाव॥ ५९॥ षिमण

कोवाच॥ चौपई॥ षिणभंगरतनवश्रातम

श्रहे॥ काहिनिमिनवतनतवगहे॥ याकोउ

तरग्रथमउचारो॥ षिमणकआत्माकिहिवि

धताओ॥ ६०॥ भिक्षकोवाच॥ अरेअरेअव

करोवषान मेरोमनोमनोअबकान वि

ग्यानलषणआतमहैजोई॥ वहैसंतानमवे·
षिणसोई॥६१॥ दोहा॥ समसमतपंकत्रिपवे
गुनिकसचितगयानसुहोइ॥ नहुबासना
उत्तलोसुकतिलहैगासोइ॥६२॥ षिपणो
वाच॥ चौपई॥ हनमूरषजनमांतरमाही
जोआतमकोसुकतलहाही॥ तोअबना·
हकलेवरधारा॥ कोनलाभकोनवउपा·
कारा॥६३॥ पूछोश्रोरमहनोमननायो॥·
कितनवैसोधरमबतायो॥ अतमरव·
गवुधहैजोई॥ नाहिकहयोयहधर्मसो·
ई॥६४॥ दोहा॥ बुधभयोसर्वंगजबकेसे
नानयोनाहि॥ याकोउनरहोइजोप्रग

टवषानैमोहि॥६५॥भिछकोवाच॥चौपई
बुधवनायोयागमजोई॥तामैकहयोसर्व
गाहसोई॥तांतैतांसरवगाहजानै बुध
वाकयहप्रगाटवषानै॥६६॥षिपणकोवा
च॥सवैया॥बुधकेवाकननेसरवगाह
बुधजबैविनबुधपछानै॥तोसरवगाहा
मोहललोजगमैसभभूतभविषतजानै॥
पिवापिनामहिमानकुलीलगतेममदा
मनहीममछानै॥हनिकैयहबाततदिगं
बरकीसुनिभिछकचीतबडेषुनसानै

६०

भिछकोवाच॥दोहा॥हापिमाचपापीब
रैमोकोकहैसुदास दंतपंकथरमलन

वै॰
प्र॰ ध॰
ना॰
७५

75

अनिबुरीसुतेतेनखास ॥ ६८ ॥ षिपनकोवाच
चौपई ॥ देविहारिदासीकेपयारे यहरकम
महहांतउचारे ॥ कोपनहंमनभीतरआ।
न ॥ तेरोहितअबकरोबषान ॥ ६९ ॥ दोहा ॥
बुधअनुसासनहरतनजअकहंतमनोह।
यार ॥ मोहहरिवीवपादतऊदेऊखबमनउ
तार ॥ ७० ॥ भिक्षकोवाच ॥ चौपई ॥ हापापी
तेंभयोमुनह ॥ औरननासबहेअलिउह
मनोमसानपिसाचहआयो ॥ योतबपेष।
लोकउरपायो ॥ ७१ ॥ लोकअनिंदतजोब
उभागी ॥ अपनोरानसषबऊनागी ॥ तेरो
वेमपिसाचमनजोई ॥ कोनबहेभवभीतर।

सोई ॥७२॥ दोहा ॥ अरहंत नहि सरवग्यो
धरम कहे कहि सोई ॥ तो बिन सरधा ना
हि मन कहे सहु काको होई ॥७३॥ षिपणको
वाच ॥ चौपई ॥ यह निषेध मंगल सु जाने
चंद्र रवि को ग्रह न वषाने ॥ नष्ट लाभ पुनि
भावी गया न ॥ पाक्क भई सु करे वषान ॥७४
गणना महि अरहंत न है ॥ अत्ती दैव स-
त जानव कु कहे ॥ नाते है सरवग अरहंत श्री
से माने जे जग मंत ॥७५॥ कविवाच ॥ दोहा
सुनि भिक्षुक अति सै हम पायो भूपनि सभ-
म फार ॥ गुलाब सिंघ गति आर ही लागो
करन उचार ॥७६॥ भिक्षुको वाच ॥ चौपई ॥

वै.
प्र. प.
ना.
७६

76

अनादिकालकोजोनिकजोई ॥ तौहैगया
नकहेजगमासोई ॥ तांपरनारकंतसजग·
भए ॥ कष्टछिनछिनपरथवलए ॥ औरक
होइककवीवषान ॥ तबमतजीवप्रवीर
प्रमान ॥ बिनुसंबंधत्रिलोकीगयान ॥ तो
कोकिहविधहोइसमान ॥ ७८ ॥ कमपि
हतदीपकहैजोई ॥ यदपिसिषाबडीति
हहोई ॥ ग्रहमैसुषहेपदारथजेते ॥ कवी
प्रकासमकेनहितेते ॥ ७९ ॥ तांतेअर्थन
दरसनजोई ॥ उभैसुलोकविरोधीजोई
जोगतिदरसनअतिसुषकारे ॥ वरह्ह·
मसंदरतैनहारे ॥ ८० ॥ शांतोवाच ॥ दोहा

सजनी सब धाम नहि रहो चले लै गए सब ग्रा

न ॥ कहणा कह्यो सुपव करि आगे की

यो पयान ॥ ६२ ॥ सांत सु आगे देष करि बो

ली बचन उदार ॥ सोम सिधांत सु यह षडे

आगे सषी निहार ॥ ६३ ॥ भव बन तें सु या कह

णा कह्यो चले समीप सु याहि ॥ मत सब

धाम हि हो रहु निस बल लोप षीना हि ॥ ६४

नवै कपाल करु पद परसो मम सिधांत प्रवे

स ॥ कीनो सम भाम फार त हि की रति वर म

न ने स ॥ ६५ ॥ सवैया ॥ नर हाडन की माल

माल धरी सब दंतन के भू ति कुंडल गा

ए ॥ भुजन अंग दहा उनु कम सु परे निस को ॥

वै.
प्र. य.
ना.
७७

77

हुमसानन माहि बषाण ॥ मत्तन छारे विषे
हकेरे तन मै हुमसांन की छल लगाण अ
ति भी घन आहि प्रकार खेडो न कमुंड कपा
ल हु भोजन पाण ॥ ८५ ॥ कपाल कोवाच ॥
दोहा ॥ योगा जिन सो मै पिषा जो कछु जा
गति मफार ॥ भिंना भिंन हु ई सते ली नेज
गत निहार ॥ ८६ ॥ कविवाच ॥ षिपणक
ताहि विलोक करि भिछुक कीन उचार
पहु कपाल कछ तीन कमु छे ताहि विचार ॥ ८७
षिपणक भिक्षुक पूछया ताहि समीप सु
जाइ ॥ कपाल के न मृडु यह हमसु देहु बनाइ ॥ ८ ८
हम है प्रसंसा भयो धर्म सुते मत कोन । तबै कपा

लिकबोलयोमहाअमंगलभो ॥ ८४ ॥ क
पालकोवाच ॥ कबित ॥ सुनिषिपलक
ग्रबतोहकोवषानकरोसुनिकैहमा
रोधरमचीनमाहिधारये ॥ बालकेकपा
लजाहिचरबीबिमालगीमासकी
ग्रहतोमाहिपावकसुधारये ॥ भूसरक
पालडारमदरा बिसालपुनिकीजेसु
षपानसुनञ्चनकोउधारये ॥ काटनरमू
ड हमबैर बिसफंदमजेसोणतकीधा
रपावभैरबिपषारये ॥ ८५ ॥ कबित ॥ सु
निकैसुभिक्षुकटवाइदोउकानलप
षिपणकउरपुनिशीमेतमलायोहै ॥ म

वै·
प्र·ध·
ना
७८

78

तोतुमतुमवंतसंतहोमहंतबडेदक्षहुणा·
ह्यरमयाकपालिकबनायोहै॥ शिव·
णाकनाकोप्रकारजननमाहिकह्योयोवं
पापकारीकिनेयाहिकोढगायोहै॥ गु·
लाबसिंचह्नननकपालककरालग्रति
कीनेद्विगालालमननमहिछनसायोहै॥ १ १
कपालकोवाच॥ कवित॥ मुंडतन्हमे·
ढेवंडालभेषपापीबडेबडेह्लीपषंडी·
सिरकेमनप्रटाइहै॥ लोकनकेठागवेह्ल
भागतेपलाइगए।शिवकोमहानपाथि
नाहिमैनयाइहै॥ वारहमभोनजोर्इ·
खिनमैपालाइलपकेप्रतिपाल॥ १

पुनिषिनमैपकारहै॥ वेदांतनकेसिधांत
मैप्रसिधहैप्रभावजाहिपुरनभवानीप
तिलोकवेदगाइहै॥ ६५॥ ताहिकोसुमत
लयोजाहिकोप्रभाववनयोधरमकोम:
हातममेतैनदेषलीजिये॥ विसादिजे
सथेसुरेसआदिवडेदेवतैनकेनिहारो
कहोरहांआनदीजिये॥ नभिरविचंद्रओ
निषत्रकेककटवजितेकहोयाहिगतेथ
रवैठेहीकुकीजिये॥ कहोनरनागरस
भूमिजलपूरदयोकहोषिनभीतरसहा
तोयसभपीजिये॥ ६६॥ षिपणकोवाच
कवित॥ सुनरेकपालिकसुभईमतिबा

बै. प्र.पं. ना. ७९

79

लकसमानवकोमूंडतवंकरमउनायोहै ॥१

कहूंइंद्रजालकसमायाकोदिखाइंन·

वमोहमनलयोउरनोहकोभ्रमायोहै ॥

धैसोसनिकानसकपालिकमहान·

घतिदावदेउकानमनमाहिघनसायो

है ॥ इंद्रजालवंनभगावंनकोसमूठकही

तीनलोकजाहिषिनपकमैबनायोहै

२४ ॥ नोहिदिदाछांतमनामोहतेनस·

हीजाइकाडकैसघघायघबकरमैउठाइ

हो ॥ करालकरवारसोउतारभालनेवोघ

बकंठतवनालतेसलोहकोचुयाइदो ॥

डमरुबजाइघनिभूतनकिलकाहिसंगाका

टनवग्रंइसम बानी कोचतअइहा ॥ स्हा
णनकी धारक्रुटे फेन ग्राग्रइं टउटे पैथउ
थहसे सिवपतिनी रिफाइहा ॥ ५५ ॥ दो
हा ॥ श्रैसे रुषोउचार कैलीनो षवानिका
र ॥ षिपणक पिषउर भै भयोलागोकर
नउचार ॥ ५६ ॥ षिपणकोवाच ॥ प्रहिंसा
त्रिमस्वधम है महाभाग इमजान ॥ बरया
स्वभिक्षक ग्रंकमै श्रैसे रुषोवषान ॥ ५७
तवभिक्षककपालिकं बारनकीनो ग्या
प ॥ महाभाग भै ब विभमानि षिपणकहै
निहपाप ॥ ५८ ॥ कोतकिकथानि मितस्र
बहनेन याको प्राण ॥ कपालिक श्रैसेस

वे. प्र. पं. ना. ८०

80

ननहीकीनोषरामियान॥४४॥ष्विपण

कसमतनमूहोहकसवक्रसरपक्षेविष

यान॥महाभागयदपिकपेनदपिग

छंवान॥८०॥कहयाकपालिकपूछ्र

सवाषिपणप्रस्थकीन॥मैस्वनिया

नमनेयरमप्रहेस्वपरमप्रवीन॥८१

कैसेनवमनस्वषहैकैसामाषनहार॥

मेउरमैसंसाभयानीकेकरोउचार॥८२

कपालकोवाच॥चौपई॥विषैविनास्वषक

वहेनपषै॥अनिटवायविषैमेलषै॥नानेवे

वेमोगहैजोई॥वहीस्वषकछुप्रानलहोई॥१

२

प्रानमिथ्यतमोषवषाने॥नेपस्वकुयमहाप्र

जाने ॥ उपलस्थवस्थावहजगावहे ॥ त्रुथवं
नतिहंकिहविथवहे ॥ १०४ ॥ अपनीवय
कीजोस्वनुरूपा ॥ युवतीमिलेसुमोषअ
नुरूपा ॥ यापरसंमतितोहिरिषाउ ॥ नेवे
सभसंदेहमिटाउ ॥ १०५ ॥ पारवतीप्रति
रूपनवीना ॥ तासंगरहेसदासुषभीना ॥ वं
दहुंइमिवसुकरिभनीजे ॥ क्रीडाकरेदर
सदुषदीजे ॥ १०६ ॥ भिक्षुकोवाच ॥ दोहा
सरथालाइकनअहेमहाभागयहरीति
विषेरागबीतयोनहीसुकननकहानहा
मात ॥ १०७ ॥ षिपणकोवाच ॥ अरेकपाहे
कहांषनजिभुक्षोबांतप्रमिथ ॥ अहेसरी

वे.
प्र. ध.
ना.
८१

81

रीसु कनि ग्रु नियहू मन तब ऊनत बिहस्यो ॥ ९८ ॥
सुनत कपालिक मन विषै कीनो ईहै बि
चार ॥ याके यंत हकारण मैं यहे असमरथा
तार ॥ ९९ ॥ निज मत समरथा या जु गुनि ली
जै बेग बुलाइ ॥ सुधो बषान यो प्रगट तिन ।
समरथे तुं इतन आइ ॥ १०० ॥ तब आई समरथा तिन ।
हो ह्रपकपालिक धार ॥ करुणानाको है
र करकीनो सांतिउ चार ॥ १०१ ॥ सुधीर जो
गुणकी सुता समरथा याहि पठान ॥ गुला
बसिंघ कविरूपति हू आगे कंबे बषान ॥ १०
२
सवैया ॥ नील सरोज विलोल महा द्विग
मांगमै पूर स्रपूर बनाइ ॥ सुंदर सूषणग्या

आहिं वनेन महाउनकी गलमाल सुहाई
पीनं नितंभ सुपीन कुचा कटिमे थिम आ-
ननचंद्र लजाई ॥ आइ प्रदक्षणा नाहि दई क
हि स्वामिन आइ सुदेह बनाई ॥ १७ ॥ है अबि
मान बडोइन को अब भिक्षुक को गहि ले
रूपि आरी ॥ सो सुनि बात कपालिक कौ ह
स भिक्षुक संक मिली भुज आरी ॥ भिक्षुक
मानिंद संक लई नन गो मध डे सुजगो सिव
आरी ॥ सु अहो सुषया हि कपालनि का ह
मथं निभप इम बात उचारी ॥ १८ ॥ पीन प-
योधर नारि कहू जिन के मत ना मम संक
कहाई ॥ भूल पिषोन व मार करे सुफदोष

82

[illegible]

गुरदीषदिजेसूयरोनव पायो ॥ पिषना
हिदिगंबरकोपभयोमकपालिना
मोतवसंगाकुहायो ॥ मठभिक्षकट
रवलोअतिहथतकौंमसमयावनदै
कटायो ॥ १७ ॥ दोहा ॥ नवभिक्षकषि
पणककहयोवंवयोपापविसाल
याहिकपालिनसंगासुषकहोनमा
रेभ्याल ॥ १८ ॥ चौपई ॥ नवभिक्षकपि
निपङ्कचारी ॥ षिपणककोगङ्गवेरा
पिग्रारी ॥ षिपणकथंककमिलीछिगा
षोले ॥ भणहमंचमषिपणकबोले ॥ १ ९
सवैया ॥ मयगहोहनिस्ताचगरताचगाज

वे·
प्र·य·
ना·
८२

83

म्हकपालिनि संगाबडो म्हषदाइ॥ अनि·
म्हंदरदेहस्तेहबडेमुहफेरमिलेमुज·
दंडलंभाइ॥ म्हनग्रावगाम्हूषमहातम
घोयहश्रेमूतकीम्हविरंचवनाइ॥ श्रव
जाइइकंतनमोइनमोइमरूछतिनेम
नमाहिनदाइ॥ २०॥ यनपीनपयोयरमे
भिनतंमूगमावकभीनम्हैनतिहा
रे॥ म्हकपालिनिजोममसंगारमेनब·
मावगकोइरनाहिहमारे॥ म्हकपा·
लिकश्रागामथंनश्रहोजिनभीनरमो
घमम[illegible]रे॥ म्हकपालिकश्राजम
वायतंहमदामभपनवणादजहारे॥ १   २१

दोहा॥ भैरव के अनुमास सने सिकारी ने-
मोहि॥ मै सभ पंथ निहारया भूखण वेष-
नोहि॥ २२॥ कहयो कपालिक देन को-
बैठो मोहि जगाइ॥ तब खिपणक भि-
छुक न बैबैठे मोलि क्रुकाइ॥ २३॥ कपा-
लिक भाजन न हाथ लै बैठे लाइ ध्यान॥
सब धान बै कपालिनी लाई सवा महा-
न॥ २४॥ सवैया॥ भगवंत महेन बडे-
जगा मंत्र सभै मद सो यह पूरन कीयो॥
तब नैन उघर विलोक भली विधि स्रा-
प कपालिक सो मद पीयो॥ कछ कसे ष
रहयो मद भाजन मै तिन भिछक को स्रार

वे.
ग्रं.थ.
ना.
७४

५

84

द्वीबरहीयो॥ यहपावनअंमृतपानक
रोसमभेबंधतजोसमझसोसमुतजीयो॥२
तथाचतंत्रे॥ पीत्वापीत्वापुनःपीत्वाया
वत्पतितभूतले॥ उत्थायचपुनःपीत्वा।
पुनर्जन्मनविद्यते॥१॥ सवैया॥ भवमेम
जहैपसपांसकटेमदपानसुभैरव।
आपबनायो॥ ३तातेमनमाहिविचा
रकरेसदिगंबरयोगुभमाहिआला
यो॥ हमरेमततैमदपाननहीसु।
अकंतगुरुशुद्धिआपबढायो॥ कि
हभांतिकपालिकजूढपिवोम।
दगाइहभांतिसुभिक्षकगायो॥२६

तुकपालिकभेषकरहुयोग्यपथेतुविचा
रकरैमनमैंतुकचाप॥अबलोभमतिया
हिमलीनभयेहेपदभावनहींरनकेख
मिटाप॥हमरैसुखसंभातुदोषभयपावन
याहतुरामनमैंठहराप॥अबतेंसुखभया
सभ्यासवपूरणकैरनदेहितुराजरनेः
भमजाप॥२२॥हमसदाचिनाविनकोउ
भहैरहभानिकहैकविवेदबीयो॥सः
रयातुकपालिकजोरहउकरनाथ
कहेतुबनेभयबकीयो॥मदभाजननै
सुखपानकरैपुनिमैभतुभिंक्ककेक
रदीयो॥पुहिप्राजप्रसादमहानभयोः

बे.
प्र. यं.
ना.
८५

85

इम्भाषसहाभिक्षकसोमदपीयो॥२८॥स
ष्वहोग्रामस्वर्गंपषडीमषपानकैसमउ
सेविगसाई॥नहिवारवधूसंगपानक
रेसुषवंथसरोजसमानसहाई॥सक
पालिनिकेसुषगंथमिलीसवपीव.
सुवासभमेसुपथ्याई॥सरमाचुसुधाउ
रवाहतहैसवमोहित्रिलोकसुदेत.
दिषाइ॥२९॥षिपणकोवाच॥दोहा॥
रेभिक्षुकमतपीवसभभयोप्रमादि
सतेहि॥याहिकपालिनिजानमदवे.
कृकृपाकरमोहि॥३०॥नवभिक्षुकम
दवषकरपुनिदीनोषिपणकहाथ

वीवप्रसंननहोइमननबोलयोकोकसभा

य॥१३१॥ सवैया॥ मोग्रहोमदस्वादमहा

मयगोसग्रहोमयगंयबडीसघदाई॥

चिरदेवगुघयासघतेसरहयोसग्रहे

नकवीगुहिभूरनगाई॥ सत्रभिक्षक

मेद्दिगाहूमनतहैसभयंगानमेउपजीय

साई॥ ग्रबमैनकरोगुनिभिक्षकनाथ

बपवकरेसुघबानयलाई॥१३४॥ वहदे

ननहानबमोइरहैसकपालिकयोगु

घमाहिउचारे॥ पिघपहकपालिनदो

नपरेबिनमोलभपग्रबदासहमारे॥

ग्रबनाचकरेनबदोऊनचेपिघताहिदि

चं·
प्र·ध·
ना·
८६

86

गंबरनैनउचारे॥भिक्षुकरैगुरसंगाक
पालिननाचनतपेषमहातमवारे॥२२
इनकेसंगगयाउहनाचकरैकहभिक्ष
कपबकरैबिगामाणे॥मदहूमनैनह
नाचकरैबिबिकेपदयोगुषमाहिहु·
गाणु॥चनपीनपियोदरचंदसुषीमृग
नैनकपालिकतोहिलजाणु॥कविप्रि
यगुलाबलहेगतियोजिनकेउरहैम
हामोहअमाणु॥२४॥कविवाच॥सवै·
या॥जिन्हकेमनमैहरिध्याननहीस्वम
पेंधनतेमिटजावैगो॥तजिसंजमनेम·
ग्रसंकरहेजगभीतरमिथकहावैगो

न जि पंथ सनातन माहि कलू मन बां
कृत पंथ चलावै रो ॥ जग फैल हिगो
इह भांति कलूम भसं तन अनादर पावै
गो ॥ ३५ ॥ भिक्षकोवाच ॥ दोहा ॥ अदभू
त आगम पढ है कहै कपालिक सोइ
बिन कलो मसजि हम तविषै अभिसि
नि सिधि मह होइ ॥ ३६ ॥ कपालकोवाच
दोहा ॥ किया अदभूत नानै पिषी अरपि
छाअब सोइ ॥ वा कृत विषै सुभोगाय ब
हु सिधि सभ होइ ॥ ३७ ॥ आगिमा महि
मा अदि जे अस्ति टि सिधि पिरयान ॥ ते
सभ या मन मेल है बिना षेद प हिचान ॥ १

वै.
ग्रं.प.
ना
८७

87

वसयाकरषणमोहनीउरअमायजान
प्रबोभनउचाटनेप्राकृतसिधपद्का
न ॥ २३१ ॥ जोगाविखनयहतगकोवाहेन
हिनिहियीर ॥ पदमुत्रतुबंगाकयाइदेख
सोमतेगंभीर ॥ २४ ॥ खिणकोवाच ॥
चौपई ॥ अलेकबलियोयोसुखणायो ॥
खिणाकबहुरविचारसुनायो ॥ अथवा
अलेअचालेभावे ॥ अपालपालकमअहे
हबाले ॥ २५ ॥ सवैया ॥ खिमभिकुकनाहे
हमेसुषमैमहकपालिककेप्रतिपालुचा
वे ॥ मदराबहुपानकरीतपसीमतिशूल
गईमहभपमतिवोर ॥ सुभवाकसुबिया

कुलप्रहभयोमदकोउनमादस्हपक्षनि

कारे॥ स्नेनिभिक्षुकबानकपालिकनो॰

स्रुषभीनरनेस्हतंहूलनिकारे॥ १४॥ श्रु

षसीननंबालिकपालिकनोस्हरिंब

कोनिजहाथदयो॥ मदकोमडहरभयो

षिनमैथरसीननंहूलचवाइलयो॥ करो

जोरगयोगुरकेछिगनोमनभीनरसो॰

सवथानभयो॥ गुरपूरणनेपदकंजल

हेरकपूछननेनाहिंसंदेहनयो॥ १५॥ जि

मनेमडगामसमचीनहरेगाहिवगामभै

रवकेमनत्याप॥ यदहसिरीबडीनिजनै

नपषीनिमग्गोरकहोकक्रैहेनरूपाप

चं॰
प्र॰ यं॰
नौ॰
८८

88

सुमतीसुमनोहररूपषजेबेगुरज्ञोनव
सेवकचीतलुभाय ॥ यहग्यानसको
किनहीजगमैंइहमैंकबडीगुरदे
ऊमिटाय ॥ १४४ ॥ कपालकोवाच
दोहा ॥ सूछमतनकहविशेषगुनिसग
लवषानेनाहिं ॥ विद्याजालसमको
होहीलननलागनमाहिं ॥ १४५ ॥ वि
द्याथरीसुरंगिनामरूपषकानाबि
तीनभवनभावनमनोल्यावोभोनम॰
कार ॥ १४६ ॥ षिपणकोवाच ॥ चौपई ॥
मैजोतिकपठयोबहुबारा ॥ की
नगणितनममपहुनिहारा ॥ ॥

हमसभमहामोहकेदासा॥धरम
पंथसभकरेविनासा॥१४७॥क
कपालिकोवाच॥ चौपई॥ आगु
समानयथानवजानयो॥सावग्रहे
नहिकूटवषानयो॥षिपणककहे
योभूपकोकाज॥करेविचारभलेक
कुआज॥१४८॥कपालककहेयो
कोनवहेकाज॥षिपणककहेव
तावोआज॥सतसतासरथाहेजोई
भूपकहीनाहिल्यावोसाई॥१४९॥
कपालिककहेमोकरोउचार॥दा
सीसुतताकहावहिनारि॥विचया

वै॰
प्र॰ य॰
ना॰
८९

बलमैयबैदिषाऊ॥ताकोबेगाकेस्रा
हिल्याऊ॥१५०॥षिणणकयरनबप
टाश्रागे॥लैकटिनीप्रनिगणनस्रा॰
लागे॥सांतितबैषुनिकीनवषान॥
कहणमषीम्हनैदैकान॥१५१॥यह
हतश्रामस्हकरै विचार॥मममानना
कोनामउकार॥होर इकाग्रस्हनोपि
आरी॥कहणाकहयोसमलीउचा
री॥१५२॥दोहा॥तेरेनोबाठीतह
बीतरइकागरथार॥करगणतीषि
पणकतबैलागोकरनउचार॥१५३
चौपई॥नहिंजलनहिंथलनाहिं॰

89

पहारन ॥ सरथानाहिसमाहिपनार

न ॥ बिसभगतनकेसंगमिलाए ॥ ब

सीमहानमजानउरजाइ ॥ २५४ ॥ क

हणासानंदकीनउचार ॥ भलाभया

मजनीसुमार ॥ सरथाबिसभग

तिकेपास ॥ बसेमहानमउरसुष

रास ॥ २५५ ॥ सुनिकरसांतिहरषउ

रभयो ॥ बहुरकणालिकबचनउ

लयो ॥ कामबिहीनपरमसुनिजो

ई ॥ षिपणाककहोकहाअबसोई ॥ १

षिपणाकअंकमालबिसथारी ॥ ग

णतीकरसुनिकीनउचारी ॥ जलथ

५६

वे॰
प्र॰ थ॰
ना॰
२०

लगिरपतालसनाही॥ अहेमहान
मकेउरमाही॥१५७॥ कपालिक
सनितविषादहकयो॥ मोहमही
पकमरटअतिभयो॥ देवीविस्मभ॰
गतिहेजोई॥ सभमिथिनकीमूल
ससोई॥१५८॥ सतसतसरथाहे॥
जोई॥ ताहिसमीपबसीअबसोई॥
कामविसुकतिधरमकहिजबही
वसेअनुरथहोइहमतबही॥१५९
विवेकभूपकेकारजजेते॥ यदपि
मिथ्याहोहिगेतेते॥ तदपिमहामो
हकोकाज॥ करेहोइजेतोकछुआ

जे ॥ १६० ॥ जाके लोन बऊत दिन षाए
ताहित मरो जगत जस पाए ॥ ताते
प्राण जाहि तो जये ॥ स्वामि काज ब
लला इस्व कये ॥ १६१ ॥ महाभैरवी·
विद्या सार ॥ अबी पठये होइ न बार
सब थाप रम उभै हरलाए ॥ महात
म जन ऊक्रपंथ चलाए ॥ १६२ ॥ दोहा
महामोह स्त्रत्तु चर सभै गाए अषाडो·
त्याग ॥ गुलाबसिंघ अब सों तिषु नि
भाषति है वडभाग ॥ १६३ ॥ मम माना
के हरन हित हता मन श्रम स्व कीन ॥
विस्म भगनि को जाइ अब कहि पमषी

चं.
प्र. च.
ना.
९९

91

नै ॥ १९४ ॥ इमकहिकरुणासोंति
पुनिभईसंग्रतरध्यान ॥ कीरतनबर
माटेवपिछभयोसभासभज्ञान ॥ १९ ५
दोहा ॥ विस्मभगतिष्याईसुनोसर
धारघ्याकीन ॥ विवेकसमीपपठा
इयोहोहिमगलस्थविधीन ॥ १९६ ॥

इतिश्रीमतमानसिंघचर
णाम्रिषनगुलाभ
सिंघेनविरचते
प्रबोधचंद
नाटके
पाषंडविडंबनोनामतनीयोअंक ॥ ३ ॥

दोहा ॥ देषत जो न जन मोह को लहे प्रबोध
उधार ॥ सीता वर वर कलपद्रुम बसे सवी
नमस्कार ॥ १ ॥ कीनन वर मा देव की आई
सभा मस्कार ॥ मैत्री रूप निहार कै मिट सु
निषल विकार ॥ २ ॥ सवैया ॥ द्दिगनील ं
सरोरुह सोभित है अलि कै कच नील
कपोल सुहाई ॥ सुषवंद्य नेट करे उर
को गति मेट मनोज नु चीत चुराई ॥ क
टि सूष्म पीन नितंब कुकचा द्दिगला
ज बची निर्षै सुषदाई ॥ कवि सिंच गले
बनिहार सभा निर्पकी रति वरमाकी
विगसाई ॥ ३ ॥ मैत्रीवाच ॥ चौपई ॥ सुटि

दे॰ श्रे॰ ना॰ ९२

92

शुहितांमोश्रनिकीनबषान॥मैंहनयोम
जनीनिजकान॥महाभैरवीपरणमिाराई
सरथाविसनभगानिसबवाई॥४॥हैउनकं
ठावीनमकारी॥किहविधिपषोसषीप
यारी॥थैसमैत्रीभाषयोजबही॥प्रवेसकी
योसरथानांहिनबही॥५॥सरथाउवाच॥दोहा
मैउरमैश्रनिडरभयोकांपतिमोहसरीर
महांभैरवीमैपिषीधारतनाउरपीर॥६
सवैया॥ घोरमहांविकरालबपी·
नरमूंडकपालनकुंडलपाए॥ १
बिनकुटातनकीडुतिहैडि
गणघनतेजनज्वालबसाए॥ १

कविपिंगसुदाउहिचंदकलातिनभी
नदिदीरचजी भईलाप ॥ समरंभदला-
ननकंपनमैजन्तुनैनपिषोइ ॥ ७ ॥ दोहा ॥
मैत्री नहिं विचारकैलागीकरनबषान
सुरथावथाफलसुनिभईहोवननाक
कुभान ॥ ८ ॥ चौपई ॥ पहपयरीसषीहूमा
री ॥ संभ्रमरिदेसुभईउषारी ॥ कदलीद-
लतनुकंपनमारा ॥ कछुमनभीनरक
रनविचारा ॥ ९ ॥ यांकेमनमुषमैस्रववेग
उसाई ॥ पुरुकोयाहिंसदेहिमिटाउं ॥ लषे
नमोहनसुषसुकाई ॥ याकोंमैस्रबवेग
बुलाई ॥ १० ॥ मैत्रीवाव ॥ दोहा ॥ हंसरचे

भैरवीस्रावक

ग्रं॰
प्र॰बो
ना॰
९२

93

पिआरी सषी कह्यो गयो मन तो हि ॥ मै
तै रे आगे षडी ना हि हारत मो हि ॥ ११ ॥ स
र थां ना हि त्रिलोक प्रनि ला बु ली न स
आ स ॥ स षी न यारी मै डरी आउ ह मा रे पा॰
स ॥ १२ ॥ चौपई ॥ काल नि सा सब द न करा
ला ॥ मै ना भी न र ग्रसी बिहाला ॥ यही ज
न म बिषै प्रनि प यारी ॥ नो हि पि षो म म॰
भाग उदारी ॥ १३ ॥ मैत्री सषी सु श्रं गा मिली
जे ॥ मेरे हृष हूँ स म की जे ॥ न ब मैत्री प्रनि
श्रं गा मिला नी ॥ स भ था ला इ गा ले बि ग सा नी ॥ १४
मैत्री उवाच ॥ मह्या घोर दरषा न है ज्या
हि ॥ बि स न भ गा ति प्रनि दाट यो ना हि ॥

महांभैरवी बिपदमलीन ॥ कहो सषी तिन
करम सु कीन ॥ १५ ॥ सरषोवाच ॥ सुनि सज
नी मैं कहों बषान ॥ जैसे बाजपरे बलवान
पकहाथमैं कबगाहिलीनो ॥ हसरथरसु:
गहयो सुषदीनो ॥ १६ ॥ लिकरहोनो गागन
उडानो ॥ मनोगीफलेमासपलानो ॥ मैत्री
सुरिउरमाहिउगाई ॥ हाथिगहाथिगसुषो
भलाई ॥ १७ ॥ भईसुरुकाननमैंभारी ॥ सर
थाबहुरोकीनउवारी ॥ सषीथिसारीउर
नहिकरो ॥ तुमनीकेउरधीरजधरो ॥ १८ ॥
मैंहीनवधीरउरधारा ॥ सरपेसषीसुक
रेउचार ॥ सरपाबहुरोकीनबषान ॥ सुनो

सषीनीकेदेकान ॥ २९ ॥ मैंत्रातिआरतकी
नपकारी ॥ विमनभगातिउरदयासुधारी
नेडीद्रिष्टनिहारयोजबही ॥ गारीमैरवी
परमैनबही ॥ २० ॥ वज्रपाननिममेलगि
राई ॥ जरजरअंगागिरीनिमराई ॥ विमभ
गातिउरवसेहमारे ॥ गुलाबसिंघसेवक
प्रतिहारे ॥ २१ ॥ मैत्रीयउवाच ॥ दोहा
॥ भलाभयाजीवनसषीआजनिहा
रेनाहि ॥ मनोत्रिगीसरहूलसुष॰
कूटकीबफुरकहमोह ॥ २२ ॥ सषयउ
वाच ॥ चौपई ॥ देवीविमनभगातिउ
रभारी ॥ भईक्रोधमसषपहरवारी ॥ महामोह

पुनिवंनमैमरदिनापरे॥ तुहमांहिउपेष॰
याकेरे॥ येकरतागहेषकलछाई॥ मिटे
निजानमकीसुतमाई॥२२ ॥दोहा॥ मै॰
श्रीकरणासुदिनाऔरउपेषयोजान॥ वा
रवहिनहमजीषकोकरेसगालमलहां
न॥२३॥ वलीपयारीसषीन्हेंमहाराजके
पास॥ कहोंनिहारिभूपकोमोहकहोप
कास॥२४ ॥सखुवाच॥ चौपई॥ विसनभ
गतिदेवीहैजोई॥ कहीठौरसुनीयेंअव
सोई॥ राछानामदेसपकगाप॥ महाप्रनी
तजहावनकाप॥२५ ॥दोहा॥ नहउतर
तरगंगाकेवककतीरथमहान॥ मनोविया

वे॰
प्र॰ ना
९५

95

नागेगस्थतिरवैनटेकसुजान ॥ २६ ॥ चौ
पई ॥ नहो विवेक वसेवडभागी ॥ सिसा
सोमैजिनकीमतिलागी ॥ किवेकिव
रैनिजप्रान ॥ भयोभयाकुलचीनमहा
न ॥ २७ ॥ धमनीवयाधतितोननभयो ॥ उप
निषदसेगाहिननप्रतिरमयो ॥ परसरा
मसमथारस्वटेक ॥ करेनपस्यानहोवि
वेक ॥ २८ ॥ दोहा ॥ काहिमेत्रीग्रवजा॰
हिनसरथेवरनहोर ॥ विसनभगति
जोममकहियोकरोनियोगाहिसार ॥ २९
रमकहिदेनोचलीनवसर्थीमेत्रीजान ॥ श्रे
श्रेपथमेवदनकरभगवान ५० ॥ चौपई ॥

सरथाजाइविवेकनिहार॥पमनीब्रयाप
निलोत्रुसार॥नानजीनग्रहमछोअलायो
पिछविवेकपरमोलक्ककायो॥४१॥सरथा
करगहलयोअद्वाइ॥छुकयोकमलनैनन
लजाइ॥विमनमगानिग्रषकीनवषान॥
मनेहूतनीकेदैकान॥४२॥कामक्रोध
निमोहअरानी॥करोहूतइनकोनमया
नी॥मनिविवेकमघइहउवारी॥हनोअ
यानिमहाइतयारी॥४३॥याअवमरइक
मेत्रीआयो॥नाममत्रेपुरुपमनमायो॥म
त्रीआरमबेदनकीनो॥भपविवेकमश्रा
दरदीनो॥४४॥समाचारसभमपुननायो

वे· प्र·ना· ९६

96

ह्वै निमंत्री मन मै हरषायो ॥ देव करो तुम
वेग उपाइ ॥ जीतै निषल सत्रु तो नीजाइ ॥ ४५
दोहा ॥ सभा माहि दिउ बहु रचे त्रात प्रविवि·
वेक सहाइ ॥ जो पढे पंकज प्रताप तेनि
ल सोक मिट जाइ ॥ ४६ ॥ सवैया ॥ हुरज
सो तनु सो भित है भुज दंड मनो ब्रह मंड
रवाण ॥ नैन सरोज मनोज हनै सो दिसै सैव
म काण ॥ धरनी सम धीर उरमै म धमै जनम
वन सो गार जाण ॥ भूप निहार सभै तन सभा
कविसिंघ गुलाब बडे हषीण ॥ ४७ ॥ राजो वा
च ॥ दोहा ॥ हा पापी महा मोह मद हने महा व
नतो हि ॥ मै तेपान सिकार हो विसभ गातक है

दुष्टान मजाई ॥ हनो समूल गोहि न हि सोई
मोह अविद्या नाहि कराई ॥ सर्व थाके सन
ने सब छराई ॥ ऐसे कह महिकी यो बषान
सर्वे वेग सब करो पयान ॥ २४ ॥ बुद्धि बिबे
क सम धीप सजाई ॥ काम क्रोध मोह दुष्टदाई
तिन जीतन नहि तिन सैन मिलाई ॥ होई बैरा
ग सबु तो हि सहाई ॥ २५ ॥ दोहा ॥ प्राणायां
म सब संग मिल मैं आवो ततकाल ॥ क्रिया
करो तब सैन पर करो सब जंग बिसाल ॥ २६
चौपई ॥ रितिभरा हि प्रगाटयाहै जे तौ ॥ स
मदमा हिसगली मिलने तौ ॥ प्रबोध पून
हि तदेव समनाण ॥ क बिबिबेक उपनिषद

मिलाप २७॥ दोहा॥ लोनैनेहें उपनिष
नसेगमिलविवेक सुतमोर॥ समश्रा
इसुप्रबोध सुनहीविवेगो ग्रहतोर॥ २८॥
चौपई॥ मैत्रीमैविवेकछिगजाउ॥ वि
सनभगतिसंदेससुनाउ॥ वासवनें
किहंभांतिबिलाप॥ कौनकोंश्रापचा
हीनकमाप॥ २९॥ मैत्रीयउवाच॥ दो
हा॥ विसनभगतिकीआगयावाबबहे
नहमनीन॥ विवेककात्तकेमिथहितववे
महातमवीन ३०॥ चौपई॥ महातमजेनजग
भीतरजेने॥ याविपवरनेसमालेनेने॥ सुषयन
मेउपर्ये इषीयनमेककणाउरकवे॥ ३१॥

चौपई ॥ सोतिस्रनंतनमहिमाउजागर ॥ वे
दानेदस्रुहतरसस्मागर ॥ सगानमयोनामै
इकबारा ॥ बरुनरचेहेनस्रघसंसार ॥ ४९
क्रिगा त्रिस्मानलहै निहसार ॥ याविथ
कोस्मागरसंसार ॥ सूरघनोहिकोरेस्रवमा
ना ॥ किविननोहिकोरेस्रुघपान ॥ ५० ॥ दोहा
करस्रवगाहनरमैतिहस्रवथिउरथिग्र
निनाहि ॥ ग्रलाबसिंघ बिनबोधजनम
दापरमहुघपाहि ५१ ॥ चौपई ॥ स्रथवाथ
हचक्रसंसार ॥ महामोहतिहप्रेरणाहार
नाकोमूलस्राबोधविचारयो ॥ तेनबोध
करबनेनिवारयो ॥ ५२ ॥ दोहा ॥ ईसस्रणाथ

वे॰
प्र॰ ना॰
९८

नबीजनतेउपजतेतेनसबोध तातिनतेउ
रउपाइनहिहमदेख्योअतिसोध ॥५२॥
चौपई ॥ गुनिवंतजेकरेउपाइ ॥ करेंदे
वतातिहिसहाइ ॥ ऐसेतेनविबेकेक
है ॥ जिनकेसरवसंदेहसदहे ॥५४॥ वि
सभगातिमनश्राइसकीनी ॥ सरधा॰
श्राइमोहकाहिदीनी ॥ कामादिक॰
जीतनउपाइ ॥ करेसिनावननेबैरल
गाइ ॥५५॥ सेभीकरेसहाइनवारी ॥
योहरिभगतिसकीनउंचारी ॥ बस
नविचारयदेसगगनोई ॥ कामजिन॰
छिनभीतनिस्तारोई ॥५६॥ तांकोतांतेवे

98

बुलाए ॥ नाजीतननहिंतनताहिपरयेवेत्र
वतीसुबवेगासुजाई ॥ लिस्याबोवसंत-
विचारबुलाई ॥ ५७ ॥ प्रतिहारीनबवेग
सिधाई ॥ देवकहयोसुकरीसबजाई ॥
वसंतविचारसंगप्रतिहारी ॥ आईवेग
सुसभामकारी ५८ ॥ वसंतविचारवाच
कथै ॥ विनसंदरवननसुंदरतापीमदन
दिषाई ॥ करेवबनाजगतलोककोनर
कलिजाई ॥ अथवासभउषषमूलउस
टमैलियोविचार ॥ महामोहयहमु-
हेजगतमैवढोविकारी ॥ प्रतिज्ञिह
विधिमोहनिलाजसठजनउरकोभ्रा

व॰
प्र॰ना॰
५५

99

मानिकौ ॥ संगमदननमिलतहृदयहस्रव
सौप्रकारजनमथैरो ॥ ५९ ॥ सवैया ॥ इहका
मनिकुंवतिहैथलिकाडिगाकेजरपाषि
जनवीनत्रुगाय ॥ जनपीनउलेगायचोपर
हैसुषवंदमनोसहविरंचवनाय ॥ इहमां
नमगाहकरैजनसूरषजोउरतीरसुनेगा
लगाय ॥ मलमहनमहाडलवाव
तलीजवतीषलमोहहयौदर
साय ॥ ६० ॥ वमनविचारकरैनर
नोतिहकोसुवनीइसहेतिदिषाईम
लमासकिवीकडिसंगविरेवसहाउनकी
धनलीसवनाई ॥ सुषसुकमनाकैमेसीडिमरी

निसवासरनैननरीझवहारई ॥ झरंगाध॰
मलीनसनारिमनोखिरकीयमथाम
विरंवलगाई ॥ ६१ ॥ सवैया ॥ रमणीरम
णीनहिरवंकहैगुणश्रीरकेरमणीदर
साप ॥ सुकताहलहारसहेमतवंकहरुं
ऊमवंटनपेलपलगाप ॥ बडुफलनकी
गलमालंधरैगुनपाटडफूलसरीरसहा
प ॥ गातिमंदहहेमननारिविहीनवकागिन॰
वैडभिषावमकाप ॥ ६२ ॥ जिहभूपननारि
नकेफनकारसनेमनहेरनकोश्रकुलें
प ॥ विनभागातिसेसविपतिपरेकननकेहि
नमोपुनकाननजापे ॥ मलिनावरसपथ

वे
प्र॰ना
१००

100

रैमिरपैपिरटीपुनिसामकोरेलठकाप
निसिआवतहैरबजारविषेकबिसिंच
गुलाबनकोउजलभाई॥६३॥दोहा॥ पा
पीकामवंडालतहैजोउरकेमलान॥तौ
याकुलजननहोतहैंपैमेकरतवषान॥
६४॥सवैया॥यहकामणिमोहविलाव
तहैपुनिचंदमुखीमुखनंदनिहारे॥दि
गनीतसुरोजसुपीनऊचासुपलिवान
केहितउटमधारे॥सठकोनवहेनरबिको
नमैषपुवनीमनलगाइसुमामविकारे॥सु
भमानसुभातिवेननजोनवहेयतभुटनहीनव
मारे॥६५प्रतिहारीवाव॥सवैया॥इतिसुवकहै।

वड़भागसुमनोनबढ़ोनवलेपगवेगउठा

प॥ इहांजिनकोश्रधिराजविवेकस

मीपचलौनसमवेगमिटाप॥ नवजाइस

मीपविचारकहयोजुदेवनदेवबडेस

मटाप॥ करणाकरकैइतउरपिधायहव

सतुविचारलगेनवपाप॥ ११ ॥ सवैया॥

सुविवेककहयोइहठोरनिवासकरी०

हसमस्थापनहूरनिवारो॥ वस्तुविचारस

वैठगयोगुनिजोरणोउकरकोनउवारो

इहकिंकरदेवसमीपश्रयोकरुणाक

रकैकछुश्रायसुपारो॥ सुविवेककहि

योमहामोहकेसंगसुहोवनहैजेगज

वै.
प्र.ना
९९

101

गहमारे ९७ ॥सवैया॥ मोहवलीसुपता
ळैनिमैप्रथैमैसिरधारसुकामसुवनायो
नाथनिवीरसुमैननमैहमरैमननमैइक
हंजगछायो॥समयंनिविचारकहयो
सुधनेभटकोटिनमैप्रभमोहबुलायो
मारकैरासुभंडमनोजहजेबकधुंज
सुधारपछायो ९८ ॥राजोवाच॥दोहा॥ व
सनविचारउदारयतिन्हसासत्रविदयाकों
न॥ताकरहनैमनोनरणमोहवनावो
तोन॥९९॥वसु विवेकोवाच॥दोहा॥ग्रहोपव
सरहाथमेफलननकोपनुश्रादि॥तोतैजी
ननहितसमस्त्रकीग्रहणउपधिग्रानाहि

सवैया॥ गाढे हैं मनोज हदार जिते हिठ
रोककहो निहव्याकलभारी॥ निजराष
नहेतविते सुबलासुनिचूरहतेंजुषिषे
वधूनारी॥ नवसैणपरीणाम सुहूषकहौं
मलमूतभरी सुषिषावधूमारी॥ इहभों
तिमनोजिकरोबलषीणसुलेवधूनों·
षिनभीनरमारी॥८१॥ दोहा॥ साधुसाध
भूपतिकहयोबोलोबडरविचार॥ जि
हिविधिजीतौंकामसुरिराजिनसुनौसु
कार॥८२॥ सवैया॥ पावनहै सरताजगमे
वनकाननतीरविषैसुतिकाण॥ कोम
लसैलसिलानलहैगिरकामसुकंतसुहो

वे॰
प्र॰ना
१०२

102

हृषथाप ॥ जो समकाकवयासकयास
नसंगतिभागवडेजननाप ॥ नौंकहिना
तिम्लीनहरेमनडोरमनोजकहाउप
जाप ॥ ६ ॥ कामक्रयाउथपकप्रथानहै
धबलाजगभीनरगायो ॥ नाहिजितेप्र
निकामसहाइकउटमहोवैगोविफला
यो ॥ भंगकरोजबकाममहाइकलौंहै
प्रणतजेइघदायो ॥ कमसहाइकेजेज
गमैतिहनामकहोसहनोमनलायो
॥ ७४ ॥ वंदसवंदनपोलखिमा
मधुपावलिगुंजनफूलसहाई
बागबसंतमयूरपिकोधुनिसाम

७४

घटाघनघोरलगाई ॥ मंदसुगंधकदंब
प्रतंजनश्रोरसिंगारसुकामसहाई ॥ ना
गिनिनीतबनीनलपसमनाहिपिछोर
नमैवलगाई ॥ १५ ॥ दोहा ॥ प्रतिविलंबन
हिकीनीपठनोजगनकेराइ ॥ प्राइसुमे
कोदीजेयहनोकामरणजाइ ॥ १६ ॥ सवैया
मारअमारविचारसलीउठमेसुदमोटि
समाहिपमारे ॥ मैनिमथोअरिमंडलको
सुबनेप्रभकेसबकारनमोरे ॥ जसैनि
विमंथिसुभाहरिकेजनमसिंपपनीरण
भीतरमारे ॥ कामकलंकहनोनिमही
प्रमअग्राइसुदेहिनलाइसुवारे ॥ १७ ॥ पारि

वे.
प्र.ना.
९७

नारिमेअपवादहुनोसिरवेडसहेय
मलोकलहेरो ॥ निजनारमिलेअनकु
लकहोककुदोषमनेउरमाहिदहेरो ॥
बिनोपूतमहादषवीनदहेषलपूतम
पभवधारवहेरो ॥ निपजेडहिभावरमा
हिवनीयननाहिमिलेडषलाजगादेवो ॥
याविपनारिनकोहबषणपकभजेडष
देवनभारी ॥ नारिनसंगमनेजननसूरष
बोरसंसारवहेबडुभारी ॥ पियाहैतिन
कोककुपाइविवेकजप्रीतिकरेश्रनि
नारिमफारी ॥ कविसिंबगलाबनहो
नरनेजगमाचकहोवहनारिविगारी

103

सनिसुपविवेकप्रसंनभयोसुघभी
नरयोतिनकीनउचारी॥ पटकाकट
भीतरषेचकसोसभसाउधवीरह
लेहसंभारी॥ अबसतरसजीतनहेत
वढोसकरैसिवथापसहाईतयारी
वसनवीचरकहियोनगुसाइसुदंद
भवाइचढेवलधरी॥ ८॥ तबसूपति
फेरबिचारकहयोसनुवेत्रवत्रीसभ
लेसतुलप॥ अबक्रोधकेजीतनहेति
सपावानपकषिमानलेरुबुलाप॥
प्रतिहारनफरकहयोबितुवेरकरो
प्रभजोसघमाहिप्रलाप॥ वहसार

वं॰प्र॰
ना॰
९४

105

सिताबग्रइषिनमैसहिषिमाप्रनियाप
नसाथलवाप॥८१॥सवैया॥ग्रतिसुंद
रवीरगभीरवडीदिगलाजभरेथं
उरनिहारे॥इहभांतिलसेसुषमंड॰
लतानभिकानकिवंदकलासभय
रे॥ग्रतिपावनदीरयहेरकवीजनु॰
सिवसुधाउरनापनिवारे॥इहभांति
षिमासभलोकपिषीग्रबग्रापषि
मासुषिमाहिउवारे॥८२॥षिमावाष॥
कवित॥क्रोधग्रंथकारकेविकारउर
भपग्रतिभ्रिकुटीवक्राइषलफीके
मुषबोलई॥नैनकेरेलाललसविहालदाढ

ऐसेअतिजनेअंगअंगसभुजंगविवेको
लई॥धीरजगंभीरनीरसागरसमान
अतिभजेनविकारनहिंचउरडोल
ई॥षिमाबंतसंतभगवंतकेमहंतज
नबोलेमधुबैनजनुअमीफकफोल
ई॥८३॥छंदुनजबानकोरसीसकोमहा
नउपवितकोनतापनहिंदेहउषमा
ईहै॥हिंसाअदिदोषबित्रुकोपकोन
फोटनो॥षिमामेरोनामजगमेंबाजस
गाईहै॥ऐसेंतअलाइसनिंदानहींस
मीपजाइकाहिंप्रतिहारीषिमाओरस
मझाईहै॥यहीदेवदेवसविवेकभूप

वे.
प्र. ना
- १०५

105

भारीश्रतिवलीपसमीपसवीपेवह
वीइहै ॥८४॥ दोहा ॥ षिमासमीपसजार
प्रनिज्यजपदेवडुवार ॥ यहदासीश्राईह
षिमाबंदापारनिहार ॥८५॥ सवैया ॥ ह
षिमाइहठोरनिवासकरोप्रनिवैठि
षिमाइहवानप्रकासी ॥ प्रभश्राइहदे
हविलंवकहाजिनहेतबुलाइलई
यहदासी ॥ सुषिमायहसंगरमाहि
डुयानमक्रोपबडोसुभपंथविनासी
भटश्रौरनकोसुषजोरतहैसुषिमा
श्रवताहिकरोनमनासी ॥८६॥ षिमोवा
च ॥ दोहा ॥ हेवश्रत्रग्राहपारनवमहा

मोहरणनाम॥ मैसकरोषिनएकमैकहो

कोधनिहरासु॥ ८७॥ सवैया॥ इहवेदनना

ठम्रयगानपोथुनिझैवजिनेनरएंनसवारे

विनुकारणवैरकरेउछतनमक्रोधसभो

सुभपंथनिवारे॥ ममलोहमदेहतपाव

नहैथुनिनैननतेजनुआगिनिकारे॥ नि

हक्रोधकोमैइहभांतिहनोदरगामहि

मासवजउवणमारे॥ ८८॥ दोहा॥ बहरवि

वेकवषानयोछिमेसनेहसकान॥ जाउ

पाइक्रोधहजिनेवहममप्रगटबषान॥ ८९

सवैया॥ साषिमाकहदेवसनोमनमैनर

क्रोधकरेनक्षमांनगहीजे॥ बहगारक्के

वै॰
प्र॰ ना
९६

१०६

सुषभीतरजोसुनिलोसुनिकोमलवाक
भनीजे ॥ जुधिकारकरेसुपरेनिहयाप-
दिपषमहांकरुणाउरकीजे ॥ ननलाइ-
नसैहरषैउरमैक्रितसुरषपापसुमोष
वषीजे ॥ ९ ॥ इहभांतिविचारकरेनिस-
वासरनाहिसकोपनहीउपजाय ॥ नव
भूपसवासकहीनषतेसुषिमेनवभा
षियोसावउपाय ॥ सनिदेवजितेज
वक्रोधवलीनवहिंसनपाहषभा
नसवाय ॥ सभजीनलपेनहिफेरले
इनकीभ्रजनावलटेनिदिषाय ॥ दोहा ॥ क
हेविवेकपयानकरवणीमैसत्रसंचार ॥

सोतक संतति देवी आकरे सहाइ तथा र
षिमा सध्याइ सुसील सपरगाई सुसंषवजाइ ॥
राजा प्रतिहारी कह्यो लेहु सतोष बुलाइ ॥
महालोभ जो ताको मारे सोइ ॥ ताविन ं
मोह भट
प्रतिहारी सुनो सौरउ पाइन काइ ॥ ५४ ॥ जो
आइ सु सोई करे प्रतिहारी इम जाइ ॥ ले
संतोष को संग गुनि केन प्रवेस स आइ ॥
विन विना संतोष गुनि दयारसी लेनैन
गुलाब सिंच वह बोलयो सुनन नांहि केवै
न ५५ ॥ संतोष वाच ॥ सवैया ॥ फलकानन
मोंहि अनेक मिलें बिनु षेद सदा तन है स
षदाइ ॥ गुनि नीर जहां तन छिपर रह्यो अति

५

वे
प्र॰ना॰
९७

107

सीतलपुंनिनदीमधुराई॥मिटदंहेंदव
पलवक्षेजनवनेविजनोवनआपसमीर
फुलाई॥जनहाथनवंतनद्वारनकिप
णाप्रनिषेदसहेवहुजाई॥५७॥जनभू
षनाममवीनधरेअतिमोहमपसठदे
हनपाए॥वहुवारधरेभमपमगनाज
गकेरकेरपहनाहिलजाए॥जि
मकालवनीरभमैहरणाइतने
उतम्हरषजिउजनरपाए॥विनमो
हप्रसादिनआसमिटेहतनवजन
समानजनोविललाए॥५८॥क
वित॥ लोभग्रंथकारहिताविधि

विकारमजैपांउपनग्रोकक्रूपनोग्रब
पायोहै ॥ पनोयापराछयोपनोभयाजमै
वलांछ्याग्रेमेपिनापिनामेपुनियाबि
पबडायोहै ॥ ग्रैमेपनपयानकेकाल
कीनस्नारपरैग्रास्नास्नापिस्नावीपुनिया
विपयग्रस्नायोहै ॥ विनहीसेनोछजगतदे
चनेदोछपुनिगहैकालसूछजानेलोक
ह्नछयोहै ५५ ॥ सवैया ॥ पनपकउपाइकरे
नलहेपुनिपकबडेह्नपाइमिलाप ॥ नमै
लाइपरेपनभौंनविछैविनुभागह्नभोग
विनाविनस्नाप ॥ नलपविपोगाइमेइपन
कोचरग्राइगयोवडुवीननपाप ॥ याजग

माहिसंतोषविनाकविसंगगुलाव
नकोविपलाय॥ १००॥ सवैया॥ केसहुथे
लभएसिरकेसनराजनरामछायनिसंक
लगाय॥ नटपिसुंरहेमनकोसुषहूंन
कबीनहिंलमधियुआप॥ बोयसुबीरनस
बोयजनीरजलोभभलेजनमांहिमिटा
य॥ संतोषरमातिननसिंयविसेषगुनिदेह
बकोसुषसुनपाय॥ १०१॥ प्रतिहारीउवाच॥
दोहा॥ रहसामीभुपदेहवलोसुंकंकेपास॥ ना
रसमीपसंतोषगुनिजयनयकीनप्रकास
पहुसंतोषश्रणामशुभकेसवानतिहार
भूपनिकसौंसमीपरहैबैठोग्राउहमार॥ १

२

कविवाच॥दोहा॥बरनोरूपसंतोषकौबे
देसभाममकार॥सीतावरवरमैवहोवसो
हवीनमकार॥१०४॥सवैया॥वीतमंभीर
मनोनिधनीरसधीरमहाउतिसोहितहै
हिगासिंवहपारसमांतिकरेइहभांतिव
हूंदिसजोहितहै॥निजदौरदलैधरिमंड
लकोमंडलमैजसमोहितहै कविसे
वगुलाबपिबेइहभांतिमनोसमकोम
नमोहितहै १०५॥दोहा॥बहुरसंतोषबे
पानयोअगियाटोडरमोह॥भूपतिक
हयोप्रसंगसभनाहिसकानोनोह॥१०६
वेगावनारसजाह्युलवलोभहनोबल

वं.
प्र.ना.
१०९

109

धार॥कहद्योमंनैनोषसकरोश्रवजोप्रभ
करोउचार॥१०७॥सवैया॥मानवदेवसदै
नसभैजिहजीनलपजगभीतरसावै॥ना
पसमंडलविप्रहनैवडुभांतिनकेपट
मंगलडोरे॥नाषललोभकोमैइहभांति
हनोपुनिसंगरभूमसमकारे॥रामसवीर
सुवीरवलीजिहभांतिमहावणराषस०
मारे॥१०८॥चौपई॥पेमवषाननंनोषस्हग
यो॥औरणकनरश्रावनभयो॥देवविजैहि
नमंगलजेते॥सभैमिलाइलिआएतेते॥
दोहा॥नकणाजोतिकीपकहैमहरानि
मार॥प्रसथानमलेश्रवकीतियोविधिअभ
हरानिमार॥१०९॥पातिप्रकषवषाननयोसे

पनीबुलाइ॥कहुप्रस्थानसबकीजिये
॥सिवसैनपाटमानाइ॥११॥कहोसार
थीजाहिसबसंग्रामकरध्यान॥कि
नमंगलरथबैठकरबेगसकोरपया
न॥१२॥सवैया॥भूपकीआइसुनाइक
हीसिरध्यानसोरहिबेरलगाई॥सैन
सुपंदनबेगअनेकसुभूपरठेसगनेस
मनाई॥जांहिसमैसिरदारसभैबडवा
हनैसैनअसेषबलाई॥पुनिडंडभि
कीजरजलभयासुपलेचनजातउग
जैनभिसाई॥१३॥मतनाइंदनकोरस
जीअमताविलगाइनमाहिसिहाई॥जा

३.
१.ना.
१०९
110

नमपंकजवलेमिरपुंजमसवेगगवडोग्रव
नीनगकाई।कोंवनकेसजिवालसे
गनस्यामबलीउपमामनआई।याम
नपुंजसमंगमनोनिसि ‥ दवकीय
दैहैउमाई॥११४॥सेनवइयसहुचवेः
घनस्यारदसैभयपुंजसहाय॥वेगपग्रभे
ननजीननजेरहभोंतिनरगमसयं
दनलाय॥नेरणगंगमहीथलिंधावन
लोंउपमाकविकोनबनाय॥धावनं
मैमनपकवलीकविसिंचगुलाब
सैदेरलजाय॥११५॥सवैया॥पैरनकेब
ऊंपुंनरफेरणांमैमसमकेउमगोमनहै॥

केटनिमैंयमदारकसीसगणोबालसैंसो
इसेनैननहै॥ कंतसदीरघहैकरमैसग
लावककूउपमाभनहै॥ जानुदिगाँनर
भूविभिरयहनीलसरोजननकेवनहै॥११॥
कोटिनकोटससीरवलीघुनिसाहिन
रंगग्रहुठभणहै॥ मानहुभूमिनपाँउकू
हैनभिमैहरिवाहनकोटपणहै॥ थरथ
लभयाहिगमंडलमैकरविनकूटाक
रवासलपहै॥ यौंवनरंगगनसैनवलीस
भकेननमैश्रुतिरूपनपहै॥१२॥सयि
विमाननिभूपतिकोरथमानहुमेरुर
सोवसकाप॥ वाजिगुणगगारतुंवनभूमि

वे॰
प्र॰ ना॰
१११

सुलैरंधमाहिआकासउडाय॥ कोपुनि॰
होवनहैरथकीनगुवीरानिधीहरिकेर
मधाय॥ धरिकिहंनआकासवढैपमि
उरधहैरविमंडलकाय॥११८॥ सुनौवाच॥
कबित॥ राजिनकेराईसुनजीकथाईपर
पिबोसिवकीवनारससुटतयोंदिषाईहै॥
नीरयंत्रधारसफुहारेजोंअपारकुंडेपा
वनीवनारसकीभूमिससुहाईहै॥ सोय
नकेसीसजनुवेजगदीसनहिकोनवे
वनाइलिपलेपवसकाईहै॥ जाहिकी॰
अपारकेविहेरकवकीनभणकहिनअ
लाववंदकिरनलजाईहै॥११९॥ सवैया॥

यौलिपिषायहहठचबनेजनुमावटमे
वसषुजसहाए॥वीचपताकिसठब्ल
मेष्ठमनोनडिनावानिहैचमकाए॥है
मकलाक्तिनवावजस्षुंजतिनामपु
पाबलिश्राए॥गोपकोरिउदगावमुषो
मकोरिटभयोजफह्सकपाए॥१२०॥
फलापिरेषफेरापिषायहपावनभूमि
समीपष्ठआई॥पहपिषावनकाइमही
नवषुंजाकिधोवटहैउमडाई॥मावनजा
इस्लठोरविषिजनुषूजनतसंमसप्रेमव०
ढाई॥गावनषुलवडावनहैसनवाव
नवेदिनसीमसनिवाई॥१२१॥आवदगंगा०

केतीक करै पुनि फूल पराग सुगंध-
वढाय ॥ गुंजति वीच सुगंध भ्रंग फिरै भ्रमि
सनां हि मनो सिव गीत सुनाय ॥ त
कलेवल लंगी यति नावित है सुमनो
भुजरंडिन भाव दिखाय ॥ सारस हं-
स चकोर धनं भिम सबाइ मनो सिव
पाठ सुनाय ॥ १२२ ॥ दोहा ॥ पिष यावं-
द भूपति भयो लागो करन उचाय ॥ य
ह सिव नगरी पावनी मुकति करै संसा-
सवैया ॥ नमहार दहूर करै विनमै पुनि श्रा-
नंद धाम मै उपजाय ॥ विधु मौलि पुरी मनु
पेवित है सुम मो परमो मषहगान लिजाय

जिहठौरविषैयहगंगाभलेश्रुतिव॰
क्रमईइहभांतिसहाई॥जनुहासक
रेयहवेदकलाह्वकिधोंपुरमोतन॰
हारसुपाप॥२२४॥सोरठा॥ रचितेउतर
सुहृतदईप्रकारमाधूपकी॥विधिवि
वेकप्रवहृतदीरथ्यस्राप्रविसालमते
२२५॥सवैया॥ गंगाकेतीरसुथीर
महामनमेंदृढचस्तमेरसहाए॥आदि
नारायणकेसिवकोयहपावनथान
महानसगाए॥भूपनिहारयश्रानंदमं॰
येमसुभीनरतेयहवाकश्रलाए॥वि
चऊश्रान्मपेहमनेसुपनाविदपंडित

मोहवनाय ॥ १२६ ॥ दोहा ॥ याहठोरनजि
देहकौं मिलेपरानमझाइ ॥ पुनिवंनन
नोलकमैलहैमरणाइहग्राइ ॥ १२७ ॥
हनुउवाच ॥ दोहा ॥ कामक्रोधपुनिलो
भलौंभूपतिहमैनिहार ॥ दुखोहूरप
लानहैजिउकानरश्रमिधार ॥ १२८ ॥
भूपतिकह्योप्रसारहहिसरबसि
धिजगाहोइ ॥ करप्रवेसभगवानके
मैबंदोपदहोइ ॥ १२९ ॥ रघनेउनरप्रवे
सकरभूपतिभलेनिहार ॥ भगवानभ
गवतकलेसहहोजैजैसदानिहार ॥ विवे
कउवाच ॥ भुजंगप्रयातछंद ॥ संवकजुडमनीरी

पंजागो॥ करे श्यामली पादकंजे सभागे
नषे जोतिस्नोभालसे हेमपीठे॥ मनो॰
कोटिघटयोतिवांटेस्वडीठे॥ १३॥ भवा
हैतसंध्यांतिसंनानितांई॥ नमैदैतमेटो
बोयक्ताप॥ छिमामंडलोधारसंभारपी
नै॥ लगीदाडकोटीगिरेहारकीने॥ १२
वलीयंगमाहीकरेहूपभारी॥ पदोसा
घमापीत्रिलोकीस्वमारी॥ भूजादंडश्या
गोगिरंक्कवलीने बलायांतिकोमात्रके
नोस्वषीने॥ १३॥ बसनगोकलत्राणका
गीटयाले॥ टवीश्रंबबघाकरेगोपपा॰
लेः॥ स्वगातिभामास्वसंयूरसीमे॥ स्वसंप

वं. प्र.ना. १४

114

याभकानिहमसेदेवईमं ॥ ३४ ॥ तिनेचूर
कारीमनोमारनेईं ॥ करहेकोविचाईम
नेहोरहेंई ॥ मुदैनोहूवैषानटीपाटना
री ॥ नखंमेलाणिकानाथनेरीउचारी ॥ ३५
त्रिलोकीरिपुकैटभोकंटकाठं ॥ क
हेवक्रधाराकरेभूमिमाहें ॥ फरेजो
निकलकाभ्रजोहामनेतजे ॥ करेषीरसे
नेमसेजेममसेजे ॥ ३६ ॥ सदामेभ्रपिष्यारेम
ह्यानेनथारी ॥ भ्रमाहंउसंभ्रानिमेलंभ्रारी
मथषीरसिंधभ्रमेबाडपीने ॥ भषलाकनं
नाहिवीचेनवीने ॥ ३७ ॥ मुमोनीफलोहार
हारंसहाप ॥ प्रभाकंठमपेसकेकोवलाप

महामोहहकेटीटिजेबोधनथं

नमोदेवपादंटोऊजोरहाथं ॥१॰

३८ ॥दोहा॥ आदिनारायण

दीनवरमणश्रमनउदार॥बोधव

लीस्वतनहोइगोभूपतिभौंननिहा

र॥२॰॥३९॥दोहा॥ मंदरनिक॰

स्विविवेकप्रनिधिइमकीनप्र॰

काम॥यहनीकोश्रमयानहैइहां

करेनिवास॥१॰॥४॰॥कवोवाच

॥दोहा॥ सभासमेनसणहजब॰

देखीभूपतिरीति॥कीरतवरमा

वें· देवतनवभयोपकागरचीन १०
प्र·ना· ॥ ५१ ॥ दोहा ॥ उपजैगोविंद
११५ गमनयाइस्वरमतीदयाल ॥ बो
धकरैमनकोभलेहवैहैकथाविशा
115 साल ॥ १० ॥ ५२ ॥ ॥ १० ५२

इतिश्रीमतमानसिंचरणसेवत
गुलाबसिंघेनै
गोरीराइआत्म
जेनविरंचितै
प्रबोधचंद्रदेनै
नाटकंचतुर्थोध्यायः ॥ ४ ॥ ॥

दोहा॥ प्रदप्रमदरद्रुनाथकेलहेबोधमति-
मान हनेमोहबलवानकोतिहबेदोभग
वान १ दोहा॥ कीरतिवरमाभूपिकेदेषतस
भामफार॥ सरथाकीनप्रवेसतनबलागीक
रनउचार॥२॥ सरसैयोवाच॥ सवैया॥ प्रसिधस्त
पंथग्रहेजगमेंयहजातिकेबेरबडोउषदाई
क्रोधदवानलबडीषिनमेंसगलीजलजा-
हिषपाई॥ जोबनबासमेंघटनतेजनपावक
षहरलाई॥ तिमहीगहिबोधवक्रोधजलेउ
षभूरभेयांदिगतेजलजाई॥३॥ षदेषनप्रेक
लिषविधभालसुप्राज्ञपिषनहिजातमिटे
ए॥ ममसोदरबंधहतेरणमेतनभूमरुलेके

वै॰
प्र॰ ना॰
११६

116

है हारसि धाए ॥ इरवारणहारणसोकम
हाअतिपावकमेउरभ्रमजलाए ॥ हे बिबक
किमैहृध्रनेकपैरेछिनपावकसोकनल
टउकाए ॥ ४ ॥ मागरैमैलमहैसरनामभ
ध्रंनकध्रंतमैमैहृषपाए ॥ नाचिरणजीरण
मैतनमैजनकोविटकोभवमैपतिपाए
यरापियासुबिचारकैरेउनितटापिसोक
बिबकरेवाणे ॥ हीरयमैसाककीनालब
ढेविवघराउरध्रंतरमोहजलाए ॥ ५ ॥
यरापिकरसुभावकंतमसभातचलेसु
ऊपयनमाही ॥ कामसुकोधनथा।
मदमानउपमगालेरणमंडलमाही।

नदीपिहुबकेटेउरेको अहिदेहसकावनं
मेजगमाही ॥ सोकदवानलज्वाललगी
ममअंतरग्राम्मकाननमाही ॥ ६ ॥ चौपई
करैकेमनकेमाहिबिचार ॥ सरथाबऊ-
रोकीनउवार ॥ विस्मभगतिउरपरमदया
ला ॥ अैसेमाभाषनिकहैयाबिसाल ॥ ७ ॥ विस
भगतोंवाच ॥ सेंकरकेद ॥ इहैठारसंगरहे इ-
गाभटकेरकुलकोनास ॥ मैदेहसाकोपा
पुनहिमनभयोमाहउदास ॥ अबकोउकै
बानारसीमेंसालग्रामजोउ ॥ भगवानके
अस्थानबसकारकालनहिबितोउ ॥ ८ ॥
दोहा ॥ मनपेषषहतानसभकरीनिदेवन

वै॰
प्र॰ ना॰
११८

आइ॥ सोमैंसमगैलोनाहिंढिगाकेरनिवेदनआई॥५॥ भुजंगप्रयातछंद॥ नहीं
बेगासरथास्वनीकेसिधाई॥ पियेनीरथंगंडिकापावनाई॥ जहाँआपदेवोंसदावासधारे॥ स्वसंसारसिंधेजनंपारतारे॥९॥ करीबंदनौठारनीकेनिहारी॥ इहीविस्नभगतीजनेंमोषकारी॥ मिलीसोतिसंगंकछूसोबिचारे॥ चलेगयासमीपकहासरबसारे॥११॥

दोहरा॥

विस्नभगतिश्रद्धप्रीतिगुनबरीसमभामहिआइ

117

बिस्मभगतिकोकहेगीसोंतसकलसुना

ई ॥ १२ ॥ श्रोतावाच ॥ दोहा ॥ देवीताकोमेंपिषो

चिंताकुलउरमाहि ॥ बिस्मभगतिमोकोक

होकोनहेतमनमाहि ॥ १३ ॥ बिस्मभगतिंउ

वाचसवैया ॥ वनमेंसबनारसमाहिमहारण

होवनमाहबिबेकहकेरो ॥ जिहठोरसबी

रत्रेनकमेरेसुमनोयमराजकेरहोनिबे

रो ॥ तिहिमाहबलीसहबालबिबेकभि

रेरणमेंबहुभांतिघनेरो ॥ नजानतितोग

तिकोनभईयहकारणतेउरकंपतमेरो

१४

दोहा ॥ कहयासोंतिकहिचिंतेहेताहिकि

पानबहोइ ॥ नबबिबेकसोंतिमहीमेंजाने

वे
प्र॰ ना॰
११८

यहलाई॥१७ ॥दोहा॥यदपिव्रतनेमव
हैसंतनकोकलयान॥जापतीहैअगुमा
नेतनदपिमेकमहान॥१६॥दोहा॥अब
लासरथानहिआईसमाचारलेपाहि॥
यांतेपुत्रीमनबिषबडोसंदेहआहि॥१
नाहिसमेसरथाआईलागीकरनउचार
बिसभगतिमाकोमिलैपुत्रीभजापम
र॥१८॥बिसभगतिसरथाकहयोबुध
सोआईमाइ॥सरथाकहयोप्रमादित
वकहिकेलसजनपाइ॥१९॥कहयोसो
निकरनारकेश्रवनमोपरयार॥सरथा
कहयोसगालमिलैपुत्रीभजापमार॥२॰

118

सोतिमिलीगातमैंतेबभयोअनेदन्तंतान।
बिस्मभगानिबालीनेबसरथेकऊहंतान।
देवीनेप्रतिकूलकोजोककुलाइकहोइ।
सोहंतानउहाभयोअंबनजानेकोइ॥२२॥
बिस्मभगानिधुनितिहयोमाकोकऊबि-
स्याइ॥उलाबसिंघसरथानहोलागीकर
नउचार॥२३॥सरथाउवाच॥सवैया॥भागव
तीस्तननंजबहीनहिकेसबमंदरतेनिक
साई॥प्रानिभयोधुनितांहिसमेरसमीर
बिकोमलजोनिसराई॥उडभभेरिनिसा-
नबजेमृप्रलैघनकीधुनिजाहिलजाई॥
बीरमहासिंघसमानगजेबरतीउघकोन

वं
प्र॰ थ॰
नां॰
११९

119

रकैसेपियाराई॥२४॥उरबाजिनौऔरथैन
मिटलीथरंचरणभूरंभ्रकामउडाई॥थर
नानबिरंचसेलोकबलीनहिनाउपेर
बिलीनक्ष्वपाई॥ानकेंभसेथरसेथरस
नैतिनकोइहभांतिसेकोरबनाई॥जउर्स
फसमैरिगापक्षमतेयहलालघटाउम
डीअ्रथकाई॥२५॥कबित्त॥आपनीपराईस
लआईसैनदोऊजनबगाजेबीरैस्त्रसीजउप्र॰
लैचनआपपैहे॥भेदैकेसेबलमानेलोगान
केघरहितपक्षमसेप्रबकेसिंपउक्षला
पैहे॥राजिनकेराइसेबिबेकयांटरइमन
दरमनयाइकेकाहतकेपदापैहे॥नेमरा

मवंदस्तनबालिकेपठापतिनजाइमहा
मोहकास्त्रवाकयोसनापेहे॥२६॥सवैया॥
नजिकेद्विमंदरसंतविदेसरनानटपावन
काननमोर॥तमजाहिमलेछनमाहिब॥
सोइहबांतिसराइबिबेकउचार॥नहिंजो॥
पनिधारकृपणदेतेसभप्रगोगारेधरम
हितमोर॥तवजेतुकसोणनपानकेरप॥
लगीफलवेरणभूमिमफोर॥२७॥बिसम
गतोवाच॥दोहा॥मानपियारीससखीन
गनेनीबालिवार॥तिसतनबऊरोकाभयो॥
माकाकरोउचार॥२८॥मरथोवाच॥सवैया॥
सनिमाहमहीपमनेयाजबहीबिकटेभ

षं
प्र॰ ना॰
१२०

120

कटीथलनताहिवढाई॥ अतिकरसकोथम
ज्ञानभेयाहरगालालकोईहबोंनअलाई॥ स
बिबेककेहेतुज्ञानमताफलयाहिंपिषयम
हृतसुनाई॥ रणहीनपखंडकोआगमजोब
लेमोहवलीनबहीपढाई॥ २१॥ क्षेपे॥ यात्र
वसरउनिअपनीमैनअगारीआई॥ श्रीमव
हतीपदमहायसिकोंनसहाई॥ वेदवेदांग
इरणायरमउनिसामरनेते॥ भावतेलोंइत
हासंसंगमिलिखापनेते॥ पिबताअनतापत्र
रिसेनिबलगयानिषनसकवाइअनि॥ स
निजोंअतिपावनधारपिषदिविप्रनीजगा
पापगाति॥ ३॥ बिस्रभगतिउवाव॥ दोहा॥ मा

नण्यारीसमसमुषीश्रिगनेनीबलिहार नि
सेनबक्रोकिआभयोमाकाकरोउवार ॥२१॥
सवैयावाच ॥ नबदेवीआगामजिनेबेसनव
सरयआदि गापसदतीपमासभपूवसे
षपुनिनादि ॥२२॥ बिसभगौवाच ॥दोहा॥
मानण्यारीसमसमुषीश्रिगनेनीबलिहार ।
निसनेबक्रोकयाभयामाकाकरोउवार ॥२२॥
सवैयावाच ॥ कवित ॥ सोषैआनयाइकेकना
दिक्रैनभासमुनिआगामश्रनेकलासिसा
सीसंगालिआईहै ॥ पुंकनश्रपारमानोभुजा
कीफेरेदिसाकामिटाइतमनेगाऊलसाई
दे ॥ धरीमंदआननासबेदवईसंगमाना ।

वे
प्र॰ ना॰
१२१

121

तीनैनैनासोंकांतयानीसुहाईहै ॥ सरस
तीकेआगेअगटानीसुसहाईहैतबि॰
नरीअनेकजनुआइचमकाईहै ॥ २४ ॥
सोनैंवाव ॥ दोहा ॥ सोभावविरोधीआसमा
नवकनबाउनिजान ॥ मिलेकथंरणेह
तसभमानाकेरोबषान ॥ २५ ॥ सरथोवाव
दोहा ॥ समानवंसतेजेभपलेरेपरसर्वसे
इ ॥ जोंपरसोउनिरणपेरेसंगानिनाकी॰
तिमद्दसबेदपस्तनसभककुबिरोधुन
नमादि ॥ बेदसुरकनदेनउनिसभइक
रऊइनादि ॥ २७ ॥ नामनपंचनिषेधदिन
संगानिभईहमार ॥ आगामममादिविरोधी

नहिकीनेनतबिचार॥४८॥दोहा॥संति
अनेतसजोतिजोअहैअजबलटेक॥मा
याकेवहुसंगामिलभलेरुपअनेक॥४९
नानाआगमपंथबहुरुपकजनावतईस
मैंबहुनदीप्रवाहजलमिलेजाइवारी
स॥५०॥श्रीभगतोवाच॥मातण्यारीसस
रुखीप्रियानेनीबलिहार॥तिसतेबहुरो
कभयोमोकोकरोउचार॥५१॥सवैया
बा॥सवैया॥नबहुजपअरंभभयोइहते
रणआपसमेकरिक्रंभमिलाप॥सतरं
गमसंगनतरंगजेटरथसंगरथीसप्रहा
रलगाप॥सरउंजनपदोतिचलादिइसेज

वै
प्र॰ना
१२२

122

जैतो इदेनो षभैरे बरषा प॥ अतिभैयान
कैसे भैया रे कौन रवी में हाट
ति षाई ॥४२॥ सवैया ॥ नहिं सोणन की
हाभई नटनी बउ भृतिनि सा वहु कैकह
हाप॥ मरदार सुनै गम नैगा बडे मगा टीस
मनो नटमैं लबना प॥ सिन छुत्र महं सम
मान फिरै सिन पा गा सुफेन मनं च मका
प॥ अति बीर बलीन हिन कभ पाि षर्कं
नरताउ टमै टहला प॥४३॥ चौपई॥ या बिध
दाहण भैया मे आमा॥ पंडे आगाम ईक की
नसुकामा लोकायन कौनं बहुमेनाई॥ ॥
कीनो मैन आगा री मोई॥ ॥४४॥

परमपदं दोनो इलज्जेटे ॥ अपल्लकायतप्रा
णस्कुक्टे ॥ बकरघंडागामेंदेजोई ॥ भपविस्र
लसगलतिहिसोई ॥ ४४ ॥ सोमिंसियोति
कपालिकजोई ॥ सभआगामेंपिषभागेयो
सोई ॥ सतियागमंइदआइबषानी ॥ सेनो
नादिकीसाचीबानी ॥ ४५ ॥ मटमवंवंमेष
नगाकेंरबषानं ॥ तेमतिमंटस्मंमहाअज्ञानं
मतेसिंसिंत्रतेलोंआगामंजेते ॥ सेनेनमूढन
कानननेते ॥ ४६ ॥ तथा बसिंत्रिन ॥ सेवापीना
इजोमाहातअगनवरणेंसवापिवेतं ॥ नर्सर्व
कायेनिरंगधोअवेनेंकिलविषाननेतं ॥ ४७
सतयागमपरवाहवदाप ॥ सोगतिकांसी

वे
प्र॰ना॰
१२२

123

क्रोडपलाप॥परामीकसिंधगोधारेश्रंग
वंगअनिमगधपधारे॥४४॥मलेछपायक
कलिंगआदिकजेई॥तामेजाइबसेपनिते
ई॥औरपंचदशदेशबरनेते॥गणपंचालदेसके
तेते॥मालवैऔरअभीरनेश्रनरत॥सागरमा
हेदसत्रिगरता॥बिचरेतामेशूद्रहभाप मे
दरेसबकहारबनाए॥४५॥नामसततरकश्रेद
धनिजेती॥दलीमिमामापाइनेतेती॥श्रउप
धमेवहीसिधाई॥जहांपढंडेरजगाजाई॰
५१॥ विक्रमगतेोवाच ॥दोहा॥ मातपिया
रीमसिसुधीअगनेनोवलिहार॥तिम॰
नेबफलाकिश्रभयामाकाकेराउचार॥५१

सषेयोवाच॥चौपई॥बहुरोवसंतविचारउचा
रे॥कामबलीरणभीतरमारे॥षिमाक्रोध
गर्हिकेसपक्कावो॥हिंसादिककोमूलउ
षावो॥५३॥संतोषलाभकोयोंरणमार
यो॥जैंराजबदमकंठसंघारयो॥त्रिसना
चोरीमिथ्यायोंबेन॥प्रग्रहसहितउडायेगे
ने॥५४॥दोहा॥ज्ञानसहयातेमसरजितीनी
केसेषबजाइ॥परउतकरषटभावनाम
टकोदीनषपाइ॥५५॥विसमभगतौंवाच॥दोहा॥
भलाभयाश्रीगिनिरूपसंगारभूमिमर्क
रे॥महामोहहतौंतजोमाकोकेरोउचार ५९
सषेयोवाच॥दोहा॥योगउपसरगनसंगाग

वे
प्र॰ना॰
१२४

निमहामोहबलसेसोइ।। लीनभयोकोहि
कंथरेजोपनिनाहीसोइ।।५७।। बिज्ञमगतो
वाच।। चौपई।। मोहअनरथकोरणजोई।। र
हयोसोषपदलीनहोई।। प्रबषविवेकीजे
सुरज्ञान।। जोचोरेआपनीकल्यान।।५८।।
दोहा।। आगनीरिणअक्रमसबकोदेवमूलउ
धारकेदेसोषकोहंसमबजरेदहिउषमार ५८
चौपई।। मनोकमसमावारैदैजोई।। सबथाकहा
प्रगटसोहिसोई।। सबथालागीकरनबषा
न।। बिज्ञमगतिसुनयोदकांन।।६०।। आपसनअ
हंपानेसोर।। भयोहरुषमनचीतमफोर।। सोक
वेगोमनभूरबदोया।। जीवनमागमातिदृढहेयो।।

124

बिस्न भगति तु षै मे तुम स कानी ॥ बऊरे या या बि
थ की न बखानी ॥ जो मन मेरे सहज गत न मका
रे ॥ तो सम भकार य हो हि हमारे ॥ ६२ ॥ तु रषम
नातन नै है न ग नै जाई ॥ परमानंद सु पावै साई
पर हम सटा न मम न जाई ॥ जीवन माउ कहो
तिन है हाई ॥ ६३ ॥ सरा या या बऊ र सु कीन बषा
न ॥ बिस्न भगति भा षया मान ॥ बाय उदै दि
न नेह छिया हो ई ॥ बिग मरे मन र है न कोई ॥ ६४
बिस्न भगति की अंगीकार ॥ बऊरे लागी
करन उचार ॥ बैराग उन पति है न या कीने ॥
ब्यास सरस्वतीन हा पाठी ने ॥ ६५ ॥ दोहा ॥ भ
ई मस्त्र न र था उ बऊ प्रेम सु षा अलाई ॥ मन

वे
प्र॰ ना॰
१२५

125

संकल्प है रोग भनि बैर सभा महि रहिआइ ॥ ६६

सवैया ॥ मन नैन नतै श्रुति नीर बहै श्रुति मूढ
धुनेन सुछ पद्म चलाई ॥ कहि सत नाम न जिसा
हइ हांइ कबार सबै अपर फेर दिखाई ॥ ॥ क
हि नानां गोयाक हिं हैं खगयो मट मान सुक
कू साव न पाई ॥ मन संग नमेउ ब्रम्हा गावे ले
इक बार मिलो नाहि लिभीन रया ई ॥ ६७ ॥ सवै
या ॥ बिनै टार न बिरथ जहा ज कोउ समसा
क संग टेत गाहि तारे ॥ स्त्र स्वा ने ऋा टेम
भेउ हितां कि हटे ठाइ गाई यह है क कुम्मो रे ॥ त
स्मादि के ज मत ना रिझ्नी कि हम भाँति श्रुध
सभैला कम फारे ॥ ६८ ॥ सवैया ॥ सबका ।

कुलमेंउरभ्रमभयोविषुपावकज्ञानलगी
उरप्राण॥ प्रतिरूपभयोतनक्कीजतहैउष
माकरदवानलदेहजलाए॥ ममश्राज्ञविवे
कमैलाएभयोहतमोहमहाउरमाहिव
ढाए॥ अबजीवनमेंजगाहरभयोततनताप
बेडाउरमोहतपाप॥ २९ ॥ दोहा॥ योन्रुपसभा
मफारमनभईसुरक्काभार॥ आइसंकल्पह
निदहकेयाराजिनदेहसंभार॥ ३० ॥ सोवधा
नमनेहाइप्रतिबोलयोयाशुबमोंहि॥ कहां
प्रविरंभिह्वनारममदेतदिलासानाहि ३१
ह्वनसंकल्पद्विगानीरश्रतिलागोकरनउ
वारदेवप्रह्वतह्वकहाअबढोजगतम

वे॰
प्र॰ध
ना॰
१२६

126

कार॥ १२॥ कुटंब सोक कटे बड़ा सो दगा यधि रे
श्रतिहोइ॥ षट उठी तनन की सुने सोउ ई जगात
मैं सोइ॥ १३॥ मैनोवाच॥ चौपई॥ हाथ्या री [illegible]
कि दैटो रसि याई॥ भयो हर्ष मा को प्रायिक
ई॥ सुपने भी उहि संगा प्या री॥ हम ने हो तो
रं वन यारी॥ १४॥ आज भाग बिन हर सिदाई
जीवन माह भयो उ घटाई॥ न हो पजी बोपा
पी भार॥ सिर या सूर क्षा पर नमस्कार॥ १५॥
संकल्पोवाच॥ चौपई॥ राजिन सा वथा न श्र
ति हृते॥ होनी माहि विषाद न कीजे॥ भयो सु
प्रमत मन दे हृस भार॥ कहै संकल्प हृ को
सु विचार॥ १६॥ मैनोवाच॥ चौपई॥

सतग्रकंदारिवियोगाहजोई॥जोहिभाषे
उषजंानतसोई॥ग्रबजीवनकीचाहनमे
को॥मेवेबाइसभाषेतोको॥११॥दोहा॥वि
नांबनावेबाग्रबकोहमनलपेवेसा॥
सोकग्रनलउपदादेनामेटोसकलकेले
स॥१२॥याविपग्राक्रलमनभयोणयोब
जनकलेस॥नेबसरहलीग्राउगुनिकीनो
सभाग्रवेस॥१४॥सवैया॥सेतउकूलपेरेत
नमेउषसारदवेदसमानहदाप॥करप
कविषसभग्रागमुहेउनिपकविषमन॰
मालफिराप॥उनिदाइविषहग्रभेवरदा
नमहाभजनसुंदरवारहदाप॥षेनमयष

वं
प्र॰ यं॰
ना॰
१२२

127

नश्रातमकोनमहूरतकेउरनापमिटाय ८

सरस्वतीवाच॥चौपई॥बिसमभगतिसोकोम

पठाया॥सषीसरस्वतीमनदुषपाया॥सं

तानिबिजोगभयोदुषभारी॥करोजाइति

हबोधउदारी॥८०॥मनकोजिहसिबिबेहोइ

बैराग॥तेसयतनकरोबडभाग॥सोमेअब

मनकीछिमजावो॥नहाजाइबैरागउपावै

८१॥गाईसरस्वतीमनछिमआकुल॥कह

योसुनकैयाभयोआकुल॥सुरबहीनेन

षयाप्रबाव॥सभश्रानिनश्रहेजमाभाव

८२॥दोहा॥अथनकीयेतैनिषलइत

हास॥भारतलोसभकयाप्रकास॥

कलपमतावुश्रदेजगोजोई॥ मेरेंग्रतवत॰
गनतेमोई॥ ८४॥ इंडलोंमहरस्रमहरमेजेत
मेरेंग्रतकोमगलेतेत॥ मत्रुग्रादिकपृत
महोंसमुंदा॥ नहकेशेंषिनकोटिमुकेंदा
ग्रहोंमोहकोंतेतवभयो॥ जोतबडेमोक
उरहेयो॥ नहकरोंरनहजबदोई॥ कोवि
हिसोककेरंनहिकोई॥ ८५॥ भावग्रनित
मदोंउर्मोरो॥ नितग्रनितस्रवमतोरोवि
चारो॥ नितग्रनितविवेकीजोई॥ मोकवेग
निदेहहहेंनकोई॥ ८६॥ तथाचश्रुतिः॥ पकेम
वंपदोब्रह्ममन्नामनयतंविकल्पितं॥ को
मोदोकहनदोमोकहपतमनपमयतह

चं
प्र. घ.
ना.
१२८

128

मैनोवाच ॥ दोहा ॥ सोक के बेग हृदय तन भयो दे-
वी बीनत हमार ॥ लहे हि बिबेक सुठार न हि मे-
वैयीन मझार ॥ ८८ ॥ सरस्वतीवाच ॥ चौपई ॥
भृतमैन हरा सबै है भावी ॥ जाते होहि हि श्रनर-
घविकारी ॥ बिषवलीबीजन नसममानो
कोरकलेसश्रंतकोमानो ॥ ८९ ॥ सुतश्र-
रुनारिपिश्रारेजान ॥ कीनेताहिसनेह
महान ॥ वन्नश्रतान जाके गरभंतर ॥ उप-
जे बेग हृदय के श्रंकुर ॥ ९० ॥ दोहा ॥ सो ते-
सोक श्रनेक कंडमउपजे जनगात मझारा ।
हृष श्रनल तन दाहकर केरचित कोछा-
र ॥ ९१ ॥

॥ मैनोवाच ॥ ॥ दोहा ॥

देवींयुदरोपिपवैहैंतदरोपिमोकसुभाव॥मे
उरश्रेनरकोदेहेसकोनप्रानसुधाव॥४
सरसुतीनेपटकंनजोजीवनकोसुष
देन॥भलाभयाप्राणंतमैमोपषेनिजने
न॥५३॥सरसुतीवाच॥दोहा॥यहइकेश्रार
श्रकानसुतिवाहनहैवसमोह॥जोश्रा
मानिजहननकोकीनोनिद्दैवेनोह॥५४
चोपई॥कामसुलोभादिकसुतनेजेते॥श्र
तिश्रपकारीजानोतेते॥इनहितसेवाके
योजोई॥करैश्रनरथश्रंतकोसोई॥५५॥से
वेहितजनश्रतिदुषपाए॥कामलोभपाप
कमाए॥लोभजनेवेउरमैफलसोए॥नरीश्र
नेकसुगहतताप॥५६॥श्रतिउवेशनिसेल

वे
प्र. ४.
ना.
२२९

129

वछाण॥ कानननेवोरमाहिंभ्रमाण॥ यन
मदमलनकुंअरउभरोजे॥ घडोकराण
तिहदरवाजे॥ २७॥ मनेकुंअरभूपतिम
हमीने॥ दाघजुगाइकरावनदीने॥ खो
श्रपकावीनेसुतनेते॥ नादितलैहैका
लेमसुणते॥ २८॥ मनैनावाच॥ चौपई॥ दे
याहीनैसुखावछाने॥ तदपिमेउघडे
रनजाने॥ तिनकेललनबालारिदहा
री॥ विवंकालरिदमाहिंविनारी॥ २९
मनोप्राणकेहोइविछेदा॥ याविधमै
पावोउरघेदा॥ याविधसुतनमनकीउ
घवानी॥ कहेमरसुतीसुखाभवानी
सरसुतीवाच॥ दोहा॥ मातकीजन

वामनाप्रेमसहितरिछदेहाइ॥ तिहमूलक

प्रतिमोहवमरुषपावततनमोइ॥१०२॥प्र

हृक्षकटकोषाइमननबमेनारग्रहप्राहि

ममताकेवसदोइतबहुषघनाजनपाइ॥१०

ममताहूनग्रहबटकमूसाषाइबिडाल॥१०

बिजसनेहडषनाहिसतदोवतहरषबि०

माल॥१०३॥सरबखूनरयसबीजसनमम

ताहीजगजान॥ तोंछूटनकेमाहिगुनक०

गेयननसतिवान॥१०४॥मैनोवाच॥चौपई॥

मेननेनसनछेउपजाप॥ ऊकटमूसासम

किमगाप॥ताकोनासननेडषभाग॥कहि

सरसतीबऊरबिचार॥१०५॥सरसतीवाच॥

२

चौपई॥ यातननेंतेंसुकाउपजाए॥ओराबणिक
मनहिंजानीनीनाए॥यतनमांहितनाको
नरंघाए॥हमनंविकउरमेंपाए॥१६॥यु
काक्रिमसुनेदोहिंसमान॥एकनकोउर
मानसेंतान॥मदामोहएकनमैंधार॥शूप
शृछडमलेहेंअपार॥१७॥मैनोवाच॥चौपई
तमअतानेंश्रेयहैसोई॥उहहउक्षेदेसो
नोमैंसोई॥सरसुनीतेंसरबंगाउदार॥१
लोकनमैंजसअग्राहितमार॥१८॥
निरंतरकीनीरिछअभ्यास॥मैनेहसु
तजीवनकोफांस॥जानेंफांसमेंदेतसु
जाई॥देवीकेहोसुमाहउपाई॥१९॥

130

सरस्तीवाच॥चौपई॥भावश्रोनितस्हउरमैथा
रो॥प्रथमउपाइस्हीनिहारो॥बंधसमाग
मग्रहेस्हजाई॥बिजलीचमतकारसमदे
ई॥११॥दोहा॥प्रेमउरमैथारतकेरास्हादि
ढअभ्यास॥होइस्हबीसतनलोकमैकटै
मोहकीफास॥११॥मैनोवाच॥दोहा॥देवी
मोहिप्रमादतेनहभयोमममोह॥परउर
माहिसदेहइकपकतहोअबतोह॥१२॥
नवसुधबंदमरीचतेस्हयाकोरउपदेस॥
ध्यालनमैमोउरमलनप्रतिकेरस्हमाकक
लेस॥१३॥साकस्हमैलप्रहारकोगोबध
मोजगेहोइ॥नापतमैउरमलननकोमात

वं
प्र॰ षं॰
ना॰
१३१

131

बनावेसोइ॥ ११४ ॥सरस्वतीवाच॥ चौपई
कहेमुनीश्वरसरबबिचार॥ मरमभेद॰
नेसोकप्रहार॥ नाहिनिवारणजोबधपर
है॥ चिंताउरमेसूलनमोहे॥ ११५ ॥मैनावा
च॥ दोहा॥ कहेयातुमारोसतपरचिंता॰
तुरबार॥ चिंताचितडुलाइहेजोजलइंड
ध्यार॥ ११६ ॥सरस्वतीवाच॥ चिंताचितबि॰
कारस्तनदेवबऊनकलेस॥ काहूसोनि
स्तबिषमेकीनेनाहिनिवेस॥ ११७ ॥मैनावा
च॥ दोहा॥ तुमप्रसंनत्रातिदोइउरमोको॰
देऊबताइ॥ ताकोध्यानसमैयेगाहबषुंज
मिटजाइ॥ ११८ ॥सरस्वतीवाच॥ दोहा॥

है सुनत यह प्रीति गोपै है केते न बंधन मो-
ष ॥ पर प्रान रउपे दस मै मैं के है न आगम दा-
ष ॥ १४ ॥ सवैया ॥ नव नीरद स्याम सबि सा-
ल समद्रा उर हार भुजा सुकि पूर सहाय ॥ म-
कराक्रित कुंडल कानन मै युग नैनन सो
न मनो विग साप ॥ नउ माहि निदाघ सुसी-
त मनो वर भेद सदा जिह ब्रह्म नबनाप ॥ द-
रध्याव सदा मन तूं निज सूषल है उषपे
न सिटाप ॥ १५ ॥ सवैया ॥ सुनि कै मन दी
र घस वामल यौ कर जोर दाउ पद सीस
ककायो ॥ भव भेष जमान सुतो हि कह-
यो ॥ भव सिंध बहयो तब मोहि बचायो ॥

वे॰ प्र॰ प॰ ना॰ १३२

132

करुणारसमैनैनबिसालउबेणीनिसार
सनीगाहदाथउठाया॥हुतलाइकाहं
उपदेसदकीग्रबनीरभयाइमूमेमन
ग्रायो॥१२१॥चौपई॥हसतैगोरप्रकारहै
केहो॥तबमैसारमोहसभटहो॥जेजे।
मोहसनामैहोई॥अंतजेनेतेलाउघेसा
ई॥१२२॥पितातैनबोधवपतिभाई॥का
लनैबगाहिसीसलिजाई॥नबमूरघज
नग्रनिउघणाप॥बोहीसेगारहघउके।
लाबे॥१२३॥ताइउगदिगतेजलबहे॥प
षबिबकीयाउरकेहै॥पहसेमारबडो
उघटाई॥यामैबीतगाजोमनतराई॥१२४

हिंदै बैरागरूतांउ रहोइ ॥ समसुषलहे

आपै मैं सोइ ॥ सारसुती यमसै बैरालोय

ताहोषिनै बैरागसु आयो ॥ १२५ ॥ बैरागी

वाच ॥ सवैया ॥ होबिधपकबिडंबकया

जिहतेसभलोकसलोहिठगाए ॥ पनव

नीलसनीरजेपसलपातदलेसमदेह

बनाए ॥ सोणतमाससपमेदबसातनउ

परेततविश्वंबरछाए ॥ केकरूणाबसना

तरषाइसबीलबायरजातिसुषाए ॥ १२६

दोहा ॥ सरबउरसोणतमिलयामिषपिंउ

निहारि ॥ परसवाइसबीलबऊकोकनि

वार ॥ १२७ ॥ सवैया ॥ मलमूतकसूतनसभो

वे
प्र॰ प॰
ना॰
१३३

133

पतिश्रारसभेलेषसभभामननभारी ॥ नाक
कीमैलनैबानिकमैश्रकनार्इसभारस
पोवउनारी ॥ नाश्रुघबेदकैहैजिहकोव
हनाहिनिहारसकेनबनारी ॥ पिघबेव
कमैलमिलानकैरसहजाननाहिह
हैकक्कमारी ॥ १२८ ॥ चौपई ॥ लोलहोल
ससभागसहाप ॥ जौंराश्रणामसभपउघ
हाप ॥ विपदाकोयहमोहपक्कानो ॥ हन॰
कोनासपरसउहोनो ॥ १२४ ॥ जितेलोक॰
सभदेवहिमाको ॥ श्रबलाश्रहेश्रनरयैनै
क ॥ याहिह्यारसंकटिपाथिमाही ॥ हादा॰
नीवश्रगालपदाही ॥ १३॰ ॥ पोभाघनवेरा॰

गहिग्रायो॥ सारहितीनबेबनग्रलायो

हेहितग्रायोयहबेरागा॥ ग्रादरकेरीस

तिहबडभागा॥ १२१॥ कहासुनमनइहउ

वरयो॥ सेबेरागासमीपहितिहग्रनसर

यो॥ नानवरणग्रबेतदरसाप॥ यहबेरा

गहिलागानपाप॥ १२२॥ जन्मसमेतबट

रमनपाप॥ फेरसुनकऊकहोसिधाप॥ २२

मेरेकेहेमिलेसहितणारे॥ मिलेबेरागास

भ्रनपसारे॥ १२३॥ नबमनयाबिधबेनग्र

लायो॥ बेरागाबऊरमनकोयांकहे॥ कहा

साककोग्रबमरग्रहे॥ १२४॥ जोपातिभी

नरपयिकमिलाया॥ समाणाइउनिबीख

रनाई ॥ जैंतेंतिणकाठसंगनदीप्रवाहि ॥ क
बौमिलैकबिछोहाहिइवाह ॥ १३५ ॥ तैंसैंज
नबंदैसबकीधार्ई ॥ यथांनदोंनसंमिथ
मयारा ॥ पितामातसुतबंधसुदारा ॥
मिलबिछेरयानजानमयारा ॥ १३६ ॥
चौपई ॥ याकोहोइवियोगसुजनबही ॥
सोकनलेहविबेकीतबही ॥ इहाजग
तकीगतिहैजोई ॥ कोटिनमाहिलषैन
रकोई ॥ १३७ ॥ चौपई ॥ शरबज्ञतोंतान
नरजोई ॥ मनकरभयोशूनसुनसोई ॥
शूनतानहितिपिंडकराप ॥ तातशूनक
हेमाटबिलाप ॥ १३८ ॥ ॥ दोहरा ॥

तोहिपितामहद्विगुणकोभणबरषस्रतती

न॥हैमभूमंडलमैबसैवहभणेअमरा

लीन॥३४॥चौपई॥कबहूमरपरलोकसि

धावै॥कबहूग्रहमीतरउपजावै॥बिउगत

मोनसुरषैरावै॥बिबकीसाकनरंचिकबी

वै॥१४॥अमैबबनस्रतेमनतबहो॥भयो

अनेरचोतमैनबहो॥सारस्रतीजैसैयहक

है॥सोतिबानपबहोग्रहै॥१४॥अबमैनीके

लेयोनिहार॥कहेग्रहैमगलसंसारन

वैसोबननाथीहैजाई॥मयकरमाहितषि

रैडमतेई॥१४२॥फूलमालतीबहुतस्रगं

धा॥मयस्रगंधपवनसनबंधा॥भ्रिगातहांस्रा

वे
प्र.ग्रं.
ना.
१३५

135

साइरनलै जैसे ॥ भयो विवेक पिखो अव-
तैसे ॥ १४३ ॥ बज्र समर सती करुणावान
मन प्रीति लागी करन बखान ॥ यह पियो
नव भयो सम्भ्रांन ॥ नट पिव नसक हृयो म
समान ॥ १४४ ॥ चौपई ॥ गिर दीपक म-
हृवति वीर ॥ बिउ प्राण मन हि होवै धीर
तो तैं प्रेह निवरन स्नेगाई ॥ धरम चारणी
कीजै साई ॥ १४५ ॥ जैसे मंगल करइ स-
नान ॥ फूलमाल लीनी सिर परदान ॥ मलै
कपूर कुंकुम पट भीनें ॥ बाजे संग आग्रने
कस्तलीन ॥ १४६ ॥ आदीन व ग्रवरन स्वै
ति ॥ मांनि वरति क कर ग्रंगीकार ॥ ॥

सिषासत्र अबंतनो बिसाला ॥ होऊ दिगंबर
कै त्रिगा क्काला ॥ १४७ ॥ संतन संग सभे लेबि
वार ॥ बैसो इकंत सु बिपन में कार ॥ बननव
नील समे गोन सु लोचन ॥ गोहो निबनै हो इभ
बैमोचन ॥ १४८ ॥ लाज सहित मन के रउचार
देवी के हे सुश्रंगी कार ॥ बऊर सर सनीक
ऐश्रलाप ॥ मन के निषल मिटा पतताप ॥ १४९
दोहा ॥ सम मद म मत मत संतो षैलो उपजे सू
नत हार ॥ सबा तें रैबके रै मगालेउ षनिवार
चौपई ॥ यम अहने मा दिक है जेते ॥ ता दिव
नीर हो हिगे तेते ॥ ब्रह्मि वरजनो श्रहे महा
न ॥ मेरक हे मानें छिगा ग्यान ॥ १५० ॥ दोहा ॥

१५०

वे·
प्र· ध·
ना·
१३५

136

विवेकउपनिषदपसंगमिलैयोवराज·
सुषसार॥ तोहिहुतनयहतेलेहसोतिहुप
उरधार॥१५२॥ मैत्रीआदिकचारयहदेवादि
नमनेमलहार॥ विसमभगातितेपपटी·
आदेहेनेसुधार॥१५३॥ सबसुतोआइसु·
तोकेहेयरीसीममसेसाइ॥ याकहिमीस
ऊकाउगेदेवरणकरदोइ॥१५४॥ आउ·
दमनसादरपिछायहसंगातिसुषकार॥·
यमनेमआसनसहितप्राणायामसुधा
र॥१५५॥ दीरवआग्रइनसंगतमसुवेल
होसुषसार॥ राजसामातिजलोककेमेनी
केकारोउदार॥१५६॥ तोहिपकागरहे

भपजीवलेहिसुषसार॥नववंवलतासे
गवसपापवऊतविकार॥१५७॥सागरवी
चीभिदतेजोरविनानाहोइ॥अथवतवस
नीववऊभयेपरातमसोइ॥१५८॥बि
नासकलसंकोवकरवतसनीधार॥साहि
जोनेदसुआतलेहिसुषनिजसार॥१५९॥
चौपई॥आतीवंधजितरणमारे॥अतपती
केभंनसिधारे॥जलनिलेजलीनाकोदी
जे॥वेदनदीमेमजनकीजे॥१६०॥सुनिम
नेननलनीरवहायो॥वऊरयाविधवैनअ
लायो॥जोककुआइसुअहितिहारी क
रोमगालेमेसिरपरधारी॥१६१॥दोहा

बं
ग्रं थ
ना
१५८

मारग्रतीमनभाषेयातजीरंगपरबरत
कीरतबरमांदेवतबगाहींखितितिरबर
ततिरबत ॥१६२॥ ॥सोरठा॥ ॥जनहेपू
तग्रबोधृपतिषधतसंगाह्नविबेकमि
लि॥साधनबडोनिरोधजीवनशुक्तह्न
होइगी॥ १६३ ॥इतिश्रीमनमानसिं
बबरणसिषनगुला
बसिंघनेगोरीराप
श्रात्मजेनविर
चेतेप्रबो
धचंद्रो
देनाटकेवैरागनामपंचमोंऽकः॥५

137

दोहा ॥ याउपतिवंतसहोइगीजीवनम
कतिरसाल ॥ सभामाहिप्रवेसतनबकी
नोसांतिविसाल ॥१॥ सांतिउवाच ॥ चौपई
त्रिपविवेकइसमोहिप्रलायै ॥ समाचार
सांतितैपायो ॥ मनसुतकामादिकथेतेरे
मेरेमहारणभीतरतेरे ॥२॥ मोहविलीन
वैरागपाए ॥ पंचकलेससहरमिटाए
मनप्रसांतिकीसंगतिपाए ॥ ननबोधन
रकेरविचार ॥३॥ नमउपनिषतपासब्रब
जावै ॥ आदरकरमहममठिगालिआवे
योकहिशांतिसजबैपधारी ॥ सरपाश्र
वनमोहिनिहारी ॥४॥ हरखैरइसमसांति

वे॰
प्र॰ ना
१२८

138

उचारे ॥ यहसरयाकक्रमंतेविचारे ॥ इहीउ
रथावतयहनीकी ॥ सुनोभलोअबयांके
नीकी ५ ॥ दोहा ॥ सरयातेबप्रवेसकरकी
नोइहैविचार ॥ नैनसुथापरतनभपभ्रूपति
कलहनिहार ॥ ६ ॥ जहाउष्टनीकेहनेपूजें॰
संतसमाहि ॥ बसअतनीवीसेवहेस्वामी
देवअनाट ॥ ७ ॥ अंगनिकेहेंअंबासुनोकोन
सुमंत्रविचार ॥ करेवीनकहिहैवलीमा
कोकरोउचार ८ ॥ अथावाच ॥ मैविवेकके
ठिगावलीपढीपुरुषमतिवान ॥ पुरु
षविवेकमिलाउसीमंत्रइहैउरठांन
५ ॥ शांतउवाच ॥ ॥ दोहा ॥

कहौगुरुहमकौकौनविधमनसोबान
नआहि॥कामाग्रहबाधेत्रिउबरेनेनाहि
कहौगुरुहमहीकोरेगोसामग्रानजगामा
हि॥अहेग्यांनिरउहीह्वनोज्योसमसकेम
नमाहि॥११॥कैसोमायामाहिग्रवदेवग्र
नुग्रहआहि॥निग्रहयौकहहौरहियोक
हेअनुग्रहकाहि॥१२॥देवमाहिमायाग्रहे
मगवग्रनरथनबीज॥तांकोनिग्रहभले
करिकयोवाहेनिरबीज॥१३॥कामाग्रहमे
उगमनमायानिग्रहकीनकहोकामहिमे
शबाग्रहेभूपतिकोअरुलीन॥१४॥मत्स्य
उवाच॥दोहा॥नितअनितबिचारमैमनदौरे

वे
प्र॰ ना॰
१३९

139

नेपरवाह ॥ इहांश्रमुत्रवैरागजोवहीः
सहिरदसंश्राहि ॥ १४ ॥ मित्रश्रहैयमनेम
हीसमदमसंघासंज्ञान ॥ मैत्रीकरुणादि
कसभैयहश्रदासीमान ॥ १६ ॥ हैसुकते
कासहवरीभणपुहषबलवंत ॥ ममता
मोहिसंजलपसहहेनेक्रिपाभगवंत ॥ १७
शांतउवाच ॥ दोहा ॥ कहोतुह्मामीपुरुष
कीधर्मकर्मफलमाहि ॥ कहिविधिश्रेहै
प्रविनिश्रवैसंसकेमनमाहि ॥ श्रथावाचासे
रठा ॥ नादिनभयोवैरागपुत्रीलेदिनताहेते
इहश्रमुत्रफलसागसामीधारेनाहिते ॥ १९
पापनकेफलनरकतेजैसेदुरपेनीर ॥ ॥

तिउहीनेस्वरगुंनफलसरगभयोभयभी
न॥२०॥सुक्रिनकोफलभोगसुषमिटेकं
दाविनसोइ॥करैगिलानसउरविषैश्रोयि
कनमानेसोइ॥२१॥ग्रनयकथगावविष
पुरुषकोसफलस्वपनिरधार॥यरमश्रा
पहीहोइउमनेसिथलबयापार॥२२॥सोन
बाव॥दोहा॥जेजेउपसरगसंगलेभयो
लीनछलमोह॥कहोब्रितांनसंतांहिको
मननीपूकोनोहि॥२३॥श्रयाबाव॥मयुम
तिबियासहितपुनिपटेमोहउपसरर
लोभनिमनसपुरुषकोदिषलावेवड
सरर॥२४॥जोतिनमाहिस्रमकतिपरष

वे.
प्र.ना
१४०

140

कहावितनहोइ॥तौउपनिषतविवेकको
सिमरनकरैनकोइ॥२५॥शांतउवाच॥दो
हा॥मानविद्याविसमिसुधीसिरानेनीब
लिहार॥तिसतैबहुरोकहाभयोमोकोक
रोविकार२६॥श्रधाउवाच॥चौपई॥नवउप
सरगग्रहषडिगगणकौतिकपककरन
प्रनिभए॥इंद्रजालकीविद्याजाई॥लो
भहेनाटिषलाईसोई२७॥दोहा॥निबल
सिधिप्रगटीनहीविषीग्रहषमन
लाइ॥गुलाबसिंघप्रभावनहनी
केदेनसुनाइ॥॥॥सवैया॥॥
मनयोजगतेसभवातिसने

सनेपुनिनीरनमैविनुनावबलाप॥वि
नुपैनेकीपसभवेदपुराननसभारतलौ
इतहासमसुराप॥विनुकंदपठेसभकंट
नकैभुवमंडलमैसभकाबबनाप॥सुज
गउजोरसुरथानपेखसभलोकनकोरवे
प्रबलाप॥२४॥रिछभीननितनिकसे
छिनमैतनुमेकसमानसभूरबनाप॥न
नुकंटकपैसमतूलरहेछिनमैरविमंड
लमाहिसुजाप॥इहभांतिनिहारनदेव
नर्जाढिगाथ्यानभलेपदमौलिककाप
रहेहोरसुयामिनवासकरोउखडंदसभे
सबतोहिमिटाप॥२५॥दोहा॥ईहांजनसमन

वे
प्र॰ना॰
१४१

141

मिनहै यह श्रुतिमें दरदेस॥ ईहांबैठ॰
कलोलकरमनकोहेरोकलेस॥ ३१॥
दोहा॥ विद्याधरी श्रपछरा विविधम
गधरनारि॥ तेपदबंदनकरनहैं॰
हाथउपाइनधार॥ ३२॥ सवैया॥
याहिधिवोननहेंदरतामन॰
विलोवनदेपश्रपारे॥ दीरघवारि
जगोधामिलीश्रलिकेकविद्रुंच्चवं
नसकारे॥ पीनपयोधरबंभउहूक॰
मलाननश्रंजननैनसवारे॥ दाउ
मसीरदपातबनीसमरामिनहा
महरेनमभारे॥ ३३॥ सवैया॥

हाटककीसिकनायकनीगुनिइंद्रमनी

लमनीचनलाई॥ ईबनपानिलैनांतछ

रीबिझफूलसुगंधवहूंदिसकाई॥ रीज

नपमधुपावलिस्यामनोबोंवलिस्याम

मनोजवलाई॥ संगविलासनकेलकौ

नपमानवधुंनिफलसवयाई॥२४॥ सौत

उवाच॥ दोहा॥ मनांपियप्यारीसहितसुषीसि

ग्रनैनीवलिहार॥ तिसमेतेवडुरोकयाभ

योमोकोकरोउवाय॥२५॥ अथावावादोह

सुनिउपमसगनवाककोकीनोपुकरषउ

वाव॥ अतिसुंदरयहभोगसुषमोमनव

छोपिग्राव॥२६॥ संकलपाकियोउनमाह

वे
पु॰ना॰
१५२

152

मनसामीपुरुषउदार॥ योमतिमनेउर
धेदगाहिकरिमसोतिउचार॥३७॥ श्रोताउ
वाच॥ दोहा॥ हाथिगहादसमष्टशतिभई
बडीश्रबहानगुनितिपुजगफाहीबि
धिपरयोमपुरुषमहान॥३८॥ मातपिता
दीसमिमषीमिरानैनी॥ बलिहार॥ तिस
नेबड़ीकिआभयोमोकोकरोविचार

३९

श्रथाउवाच॥ चौपई॥ नवनाथपुरुषमीन
इकसार॥ सुनकरनामतिहकरेउचार
कोपभविद्धिगनाहिसलाल॥ मनोसमी
रमघामसविसाल॥४०॥ तिनउपसरमान
उरनिहार बड़ुरपुरुषकोकीनउचार

यहस्रस्यानीदेवसजेते॥विषनकेरेन॰

मकोसभनेते॥४५॥सयायावचनकमा

हीं॥मीनकदाचितकीजेनाही॥यानस्र॰

भिमानीदेवसजेते॥हेश्रतिधरतिवेवि

कनेते॥४६॥विषेवडसपिंडीकोडारे॥मी

नसमाननिषलजमारे॥भोगनकीचिंता

रुषयागा॥डारेनोहिनिलषेश्रभार॥४७॥स

वैया॥पश्रनिहंदरमारिजितीनरकागि

नकीसमिषापहिवानो॥नांहिकिसंगम

नेरुषजोबडुवारलयोकहितोहिमला

नो॥तिनपदीवनीतकेसभलोकबधा

ननतोहसियानो॥भोगनपावकतेदी

के

प्र॰ ना॰

१५५

153

सैद्दघनाहिंभरोसकहूयोममभानो॥४४
सवैया॥भवसागरनावरणजोगनहान
हैनेचिरकालहूतेअबपायो॥मदमत्तवे
लोचननारिदिखाइसुचाहतहैसुरमोहें
कडायो॥अबकोपिडजहानअंगारनदीसु
वहेकिमश्रानमश्रापवहायो॥इहसीष
सुनोममपीकमलीनसुभागनहेरकहीं
डूलसायो॥४५॥सवैया॥डारपटंवरश्रंब
रदीवरजोंबननासकपैहै॥माहिकर
नकेरनपदीरवभागमहाननलपारभपैहै
नाममहामनिजोंहिकहैश्ररकोंपनिश्र
पतिपाइपपैहै॥नाहिसुतेंमनचेरविछेप

रफेररसातलमांहिगएपैहे ॥ ४६ ॥ सवैया ॥ ब
हुबारिभयोनरनारितेंहीरकबारकहे
हमयाइरहेगो ॥ अबयाहिजहाजनेपाउ
षिसेभवसागरयारफेरबहेगो ॥ अब
हाथअलेमनमोअहेरहिओसरमीत
नरलहेगो ॥ कविसिंचगुलाबनमानत
तोनरकागिनमैबहुरूपमहेगो ॥ ४७ ॥ स
तिउवाच ॥ दोहा ॥ मातपियारीसखिसषी
सिगनैनीबलिहार ॥ तिसमनेबहुरोकथा
भयोमोकोकरोउचार ॥ ४८ ॥ अथाउवाच
दोहा ॥ नबनाववननकानधरविषयन
समनत्रोवार ॥ मथुमतिबियामोहतनैम

वै॰
प्र॰ना॰
१४४

144

योवैरागउदार ४५ ॥ सवैया ॥ भोगनतउब
रीतिविनारहसीसपुत्योमननताहिउठा
यो ॥ आजुमहांउइबसिंयविषेपरनोममसी
नसहतोहिबावायो ॥ फेरमजोनहिभोग॰
कबीइहमीनसनोनवसाचबनायो ॥ इम
भाषभयोहिगलाजबडीभंवग्यंकभले
समघागललायो ५० ॥ पांनिउवाच ॥ चौपई
भलाभयावहदुग्रघउदार ॥ भयोविरकत
केटउघभार ॥ नृप्रबमांनसकहांसिधाई
मोकोनीकेटहबनाई ५१ ॥ श्रथावाच ॥ दोहा
पुरुहबपठाईमैवलीहैलनस्रजविवेक ॥ ना
वोप्रपतिविवेकढिगमेटहविघनअनेक

श्रांतोवाच॥चौपई॥मोकोभीपुनिराइविवे
क॥पठयोसुकाजभाषोएक॥उपनिषत
लिख्यावनहेतपठाई॥चलेसुवेगाबिलेबं
मिटाई॥५२॥कविवाच॥दोहा॥विवेकउपनि
षतसुमीपवहसुरथामोतिउदार॥गाईज
वैवहपुरुषपुनिय्याथोसुभामकार॥५४॥
करविचारउरहरषपुनिलागोकरनउ
चार॥गुलाबसिंघवहवाकपुनिसुनोसा
वउरयार॥५५॥पुरुषोवाच॥दोहा॥ग्रहोसद
नमेंहैंवडेविसमभगतिकेलोइ॥नांपुसार
वेपनमिटैमुकतिजीवजगाहोइ॥५६॥सवै
या॥जिहमाहिकलेसवडीलहरीसुभया

वे
प्र॰ना॰
१४५

145

नकनाहिकेपंथग्रथाना॥सुनमीनकल
ग्रसेबंधसघामकरागहग्रेयखडेसुविका
ना॥निजक्रोधमहावडवानलहै॥तिसना
तिजनामिनिरूपसकाना॥हरिकोभग
तीपदकेजप्रसाधनरयोभवसागरमेश्र
नभाना ५८ ॥दोहा॥नरकवडोसममीन
हैहोइगोसहिसहाई पावकभोगकरालनेली
नोमोहविचार॥कविवाच॥उपनिषदसोनेदोनो
नवेकीसमभावेस॥कीनेवरमामोलिमनिवेरो
नहांनेस॥परसंतोवाच॥चलोसमसोविवेक
कोवरननिहानोग्रानं॥भागनमोरेजामोहो
हिसमेनवकाज॥६०॥उपनिषदवाच॥दोहा

सषीस्वामीनिरदईजाहिन्यागयेमोहि
नाकोसषकिहिबिधिपिछानेंमनभीन
रजोइ ६१ ॥श्रोतिउवाच॥दोहा॥देवीस्वामीप
रोवोपरमविपरिकेमाहि॥किहिबिधिप
हचानहिनोतैंभाषनहैनांहि॥उपनिषउवा
च॥सषीनदेषीउरदसामोपरिवीनीजोइ
जोंकरथैमेतेंकहिसनोवषानोसोइ॥६२
चित्रपदाछंद॥भुजदंडनोरऊपीडेनासमनि
कटकीबहुफोर।करकाउकंकणलीत
याकररहीमैबहुसोर।चुगमणीममसी
सतेकटदीनबहुतकलेस॥समदोपनी
केमानमेरेछेविश्रांतिनकेस।स्य।ककुश्र

वे॰
प्रना॰
१५६

146

यमेरोअरयोवहकहैऔरप्रकार॥नीवि
काकेहैनसूरषलोरफाउवार॥अथको
हस्नरयभाषेहैबहुसंताप॥बहुभांति
मैदुषपायोनहिदेरेतेमरटपाप॥१५॥इवि
दगायअनेकमोकोवाहेदासीकीन॥वि
वेकपतिबिनुज्ञानमोकोवाहेदासीकी
न॥कैविनकहैगनमनतहमषकरोपहश
स॥९९॥इककहेजीवपरेसकोहैभेदुपहव
बान॥इककहेभेदाभेदकोउपनिषतन्दं
उरमान॥इहभांतिविद्याफलमैकहीन
हिलेषसूरषबान॥निरउमरटकैरव
सभामैभईद्रोपतीबिषयात॥१७॥

शांतउवाच॥ महामोहकेअपराधतेंनैलह
याहैउषसोइ॥ देवकोअपराधनाहीहोन
हारीहोइ॥ मोहमनउपजाइकामसहुराव
कोगहलीनमडारविषैअंनमैमहाविवेक
हूहकीन॥१८॥ जलनारिकोयहथामदे
वीरवयोहैभगवान॥ संपादिआपादिमैमहा
वहवाहैनिजपतिप्रान॥ अबयाउरमेंमन
देरुनीकेमिसटप्रियपतिबोल॥ अबफले
मोहिमनोरथासभहतेहैपीरोल॥१९॥उ
पनिषदउवाच॥ दोहा॥ पुत्रीगीतायोकहयो
मोहिइकंतबिठाइ॥ स्वामीभरतापुरुषको
करोतोमसुबजाइ॥२०॥ प्रबोधपुत्रतवहोइ

वे
प्र॰ना॰
१५८

147

गोबंधनरूपनिवार॥ परस्वामीप्रतिहन
नेश्रावनलाजसभार॥४॥ **सांतिबाच॥** बि
सनभगतिम्ह विवेककोकीनोइहैउबा
वेषोस्वामीप्रकृषश्रविकाहेकरेविवार॥ २
उपनिषतकहीजिउकहतनहैसोइकरो
बडभाग॥ गुलाबसिंघहोनोनवीगाईश्र
षाहेनपाग॥ नबविवेकराजासनेसुयासह
नसहार॥ मोहपटलकोहरकरवयोसभा
सहिश्राइ॥५॥ **विवेकोबाच॥** सखेसोतिस
गईहेउपनिषतनिहारानकाज॥ केहिबिधपा
रीकोविधमोहबषानोश्राज॥५॥ देवसुश्राइ
सवामीश्राबाईसीसपरमान॥ बिसनभग

तिपुनिसंतानिकोकीनोपदुहवषान॥७६॥मे
हरनामसहेलमेहैहनिकोश्रस्थान॥त
हिगीनाकेनिकटबकुवसननरउसमान
नरकविघातेकहोकेसनिहिडरभाव॥
देवउपनिषदसहकरीगीनोकोपदुउवार
श्रवणमवलोसमीपश्रमलेवोपुरषनिहा
र॥वैठइकेनसुधियहैनोहिश्रमामनउय
र॥७९॥नवविवेकढिगजाइकैकीनीपुर
षुनाम॥कहोपुरषतवपदुहतिकीनोम
लोनकाम॥८०॥ज्ञानविधनमहोवडेसम
कोपितासमान॥यहीपुरसथविषदेवना
सरवकीनवषान॥८१॥चौपई॥एकसमै

ब.
पृ. ना.
१५८

148

आपहिकेमारे ॥ भुलेनिगमदेवनासारे
तिनकोएकबालथोजोई ॥ नीरसरस्वती
वस्योसोई ॥ ८२ ॥ दोहा ॥ दधीचरषीसुत ए
नबड़जनम्योसरस्वतीमाहि ॥ नामसार
स्वतनाहिकोधर्योजगतकेमाहि ॥ ८३ ॥ चौ
पई ॥ मातसरस्वतीतिहप्रतिपाल ॥ रहेकं
हतिहवेदबिसाल ॥ तबतेसमापाइबिध
सेते ॥ सबकेपरमपरबेदसनेते ॥ ८४ ॥ जबति
नकेदनकिनेनिहारे ॥ तबतेबालकपा
सपधारे ॥ कलोबालकोबेदपढ्यो ॥ कह
योबालपूतनसुनिलयो ॥ ८५ ॥ मेरेसिंघहो
डुगेजबही ॥ बेदपढावोतमकोतबही

कतगुरुसबबिचार ॥ ९५ ॥ कहोश्रेवपते
हिवसकहिकहिंकरिंबिनीन ॥ उपनि
षतवषानेगुरुसबकोसुनोइकागरवी
न ॥ ९६ ॥ चौपई ॥ मनमकारगुनिहेनिश्च
गार ॥ सुरसजनकीसंगतिपार ॥ श्रापरि
हिनइहधंतिबिनाप ॥ कहांकहेमैश्र
निउसपाप ॥ ९७ ॥ दोहा ॥ कहोगुरुसबह
नतककुजाननथेगुनितोह ॥ उपनिष
नकहोकहिजानहैसगलव्यापेमोह
चौपई ॥ तिनिजइछाकेअनुसार मेगोश्र
षसकोउवार श्रथविचारबिनाइउक
लेप हूवढागगतजिउबानीजतलेप ९९ प

वे॰
प्र॰ ना॰
१४५

149

रकोदागाद्रवतिहहवे ॥ याहितमोहिवि
वारणाकरै ॥ मैउपनिषनमोषकोकारन
पेटहेतसटकरेसुथावरणा ॥ १० ॥ दोहा ॥ पु
रषकहोसुनिमानपुनिमोप्रतिकरोउ
चार ॥ किहविधिवाससरनेविनेभाषोसग
लविचार ॥ ११ ॥ पुरुषप्रसउपनिषनसुति
लागीकहनेवषान ॥ अलाबसिंचवहवाक
पुनिसाथयवेनिजकान ॥ १२ ॥ उपनिषनउ
वाच ॥ चौपई ॥ नवमैसवलोवझेपषजहां देषो
पगाविष्यानववहां ॥ इनकिसलोनिश्रग्रजला
ई ॥ इनसमिथाविनसुहृसहारै ॥ १३ ॥ होग्रालो
सभभाजनहाथा ॥ इसटपसुसषभोसमसंथा

कोपमेरउरमैमिषमावे ॥ नबब्रह्मलोकेपा
सपावे ॥ ८६ ॥ देवदधीचसूतहैजोई ॥ हम
श्रुतिश्रियबालहैसोई ॥ बेदपडनश्रिहद
मछिगगप ॥ सूतसूतकरिमझोभलप ॥ ८
दोहा ॥ मवेदोबोमिषजबबनबीपढावे
बेद ॥ योसुनिबालकबेनभ्रममनमैबढ
योमुषेद ॥ ८८ ॥ चौपई ॥ नबबबत्रयाननबै
नबषाने ॥ बियाबियश्रियमुरमाने ॥ तुम
श्रुतिबलश्रयमोकहयो ॥ होइमिषबिया
कोलहयो ८९ ॥ दोहा ॥ योबबत्रयाननबै
नसुनिगापरषीमरसब ॥ दधीचसूतके
मिषबडभपमिटाइसुगावब ॥ ९० ॥ चौपई ॥

तांतेतुमसोपितासमान ॥ योविवेकपु
तिपुरुषबखान ॥ यांश्रवमरपुनिसांति
सुपाई ॥ उपनिषतसुनोकेसंगसुहाई ॥
सांतिपुरुषकोकीनउचार ॥ उपनिषतक
रेपदबंदनधार ॥ पुरुषसांनकोकहोसु
नाइ ॥ सोतिनपेसेवचनप्रलाई ॥ ५७ ॥ यां
ननपेसेकरेविखान ॥ उपनिषतश्रेष्ठसमा
नसमान ॥ ततबोधकोरुपउपाइ ॥ तातेहमरन
लोसोपाइ ॥ दोहा ॥ मानाऊँरउपनिषतमैव
रेश्रेनमजान ॥ वहरिउबंदनकोकरेइहकेवे
बेदसमहान ॥ ५८ ॥ पुनिउपनिषतविवेकपिख
श्रीबंदनतिहधार ॥ वैठीकिंचनतउत्तिहष

150

कर्मकांडकीपद्दतिजोहै॥नीकेमगोपाल
पदमोहै॥१०४॥लवमैमनमैकीनविचार॥प
डुधेरवडुपसतकभार॥पकडुनेतप०
ढानेमेरा॥कोदिनहैहांकरीवमेरा॥१०५॥प
लवमैनाडिगसीमककाया॥तिहमोको
पुनिहैडुमलायो॥कडुकसोगोबोढत०
मार॥लवमैतिनकोकीनउचार॥१०६॥मैस
नाथहदममनाहि॥तोहिसमीपबसनकी
चाहि॥लवतिनमोकोपडुबधानी॥कौका
लन्हेंकारिकसानी॥१०७॥लवमैकसोजो०
पुरपउचार॥लांकोदपसकरेउचार॥लां
नेविमउदेयरहोहै॥जामीरहेलीनपुनिसो

वे
प्र॰ ना
१५१

151

है॥८०॥ जोकेभासनघलनजगाभासे सहज
नंदसजोतिप्रकासे॥ मोनिनिरंजनब्रह्मकैरू
पा॥ निराधेवस्वसंगायब्रह्मपा॥८१॥ हैतस्ये
मेहृदसमिटाइ॥ जामेमिलेसमवीजाइ॥ न
तमध्यानलेणावेमोष॥ प्रकषप्रगाननहैनिर
दोष॥८२॥ यहीप्रकषवउरस्वहलापक्षानो॥ ब्र
ह्मलनयानेभिंनसहमानो॥ विनाध्यानभासे
प्रनिभेद॥ ध्याननज्ञनावेब्रह्मस्वभेद॥८३॥ प्र
मेवचनसनोउरधार॥ यमाविध्याकीनउर्व
र॥ निषलक्रियाकोकनीजोई॥ कहैप्रख
व्रलप्रनिहोई॥८४॥ क्रियाभवफासेपरहरे
सानन प्रक्रमसकाहूकरे॥ वेदकहैनिजकर

मम्हकरै।। जोलोजीवैनहियरहै।।१४।। दोहा

नांनेतेयिहिराषलोम्हेनमेरोकाम।।परन

द्यपनहं पववकरजौंममभाषौग्राम।।१५।।क

रनांछेपुनिभोगाननापुरषग्रहेम्हविमाल।।

ष्टैमेनिम्हवामरकहोवमाम्हकिंचनकाल

याभैकहोम्हकोननवलागानयनगाहोष।।

यौम्हनिराइविवेकपुनिम्योधारम्हरोष।।१६।।

चौपई।। ग्रहोमषनकोथमम्हकारा।।योगावि

याभैनमकारा।।तांकवमलननाइछिबरूमई

योऊनरकनानेनिरमई।।१७।।यगाविघाहै

निरबुधा।।ईश्वरपुरुषग्रकरनाम्हधा।।वंब

कमाणिजोनिहचवलग्रहे।।तांसमीपलोहा

११५

वें
प्र ना॰
१५२

152

क्रितगहे ॥१८॥ नौ ई स्वर की संग नि पाई ॥
माया लेवे निषल उपाई ॥ अज्ञान जनन तबं
धन है जोई ॥ कैसे कर्म निवरे सोई ॥१९॥ त
मंजित नमको हूरन कौ ॥ तउ न हि कमें स्तु बं
धन है ॥ तांते यगा विद्या है जोई ॥ संमक ग्रंथे
माने सोई ॥२०॥ दोहा ॥ तीन ग्रंथे भवन
स्त भकरै स्तन व प्रकास ॥ तब विनु ज्ञान स
कर्म ते होवै बंदन नास ॥२१॥ विनु ग्यान मके
ज्ञान ते सुक निपंश्चन हि ग्यान ॥ ग्रैसे बंदन स
रो जन ते करे स्त्र बेद वषान ॥२२॥ कही पु
रुषउपनिषत को वहु को करो विचार ॥
पंग निषा नो हि को कैसे कीन उचार ॥२३॥

लोअपर विचार ॥ त्यौं है त्यौं मम करो विचार

ग्रहबंदोइ जग भीन रगाप ॥ एक जीव स्फकरई

सबताप ॥ मोह अंधेरे जीव दबायो ॥ ईसरस

गलसमाधी गायो ॥ १२४ ॥ वांछे कर्म फलजी

वसजते ॥ ईस्वर देवे ताको तेते ॥ जीव कर्म मे

है अधिकारी ॥ ईसघकली वेदउचारी ॥ १२५ ॥

कलपनवंदजीव सैअहै ॥ नित शुकनपमे

सरकहै ॥ सनि विवेक अपहरवाने ॥ साधुसा

धुअधिमाहि वषाने ॥ १२६ ॥ होवे भले सदीर

वधायो ॥ जाने या विध अरथ अलायो ॥ होनस

परागावेदमैगाई ॥ रहे एक टेमभावनाप ॥ १२७ ॥

समानत्रिषमेकीन सवास ॥ एक षाइ फलप

कउदास॥ बहुरगुनषंउपनिषनषुलायो
कहेमाननहिबहुरसभयो॥ सुनिसिष
नकेपहुविचार॥ मीमांसामोश्रुतिकीनउ
वार॥ नहिइश्कानहिकीनेमोन॥ लाइकर्न
हिहमारेमोन॥२४॥ मीमासानेमैवलीष्ठ
गारी॥ नरकविघाउेरनिहारी॥ बहुतेसि
षसंगासहाई॥ सेवननाहिनिंदनरपाप॥२५॥
धनकोइश्काउमैधाम॥ बैठीभूपनसभाम
फार॥ ननलपविनेउावारहविमान॥ कलनि
ग्रहबहुकरेकराल॥ सांषविघाबहुतनिई
गवैठीलांबीभ्रजापमारी॥ उाषनकोबहुमे
हवषाने॥ नैननकीगागानाउरमाने॥२६॥

उपनिषद उवाच ॥ चौपई ॥ यग्य विद्या की नौब
रु विचार ॥ मो को या विधि कीन उचार ॥
सभी सुतेरी संगति जोई ॥ हम दे सिष विद्या
वैसाई ॥ १२४ ॥ दोहा ॥ फलयुत नित सुजान के
करे नमादरक रम ॥ तेरी संगति पाइ के जा
ने निबल सुभरम ॥ १२५ ॥ तो ने वाक्य नदेस
को ककरे गामन ननकाल ॥ नब मै तो को क्र
इकरवाली बहु उनाल ॥ नब मै तो को ॥ १२६
कर्मकांड की महिर वीपिषी मिमामा जाइ
बहु प्रकार भाषे कर्म बहु अधिकारी पाइ ॥
नब मै कहयो समीपत वव मो सुकिंचन के
ल ॥ नब उन कहयो सुकर्म सम भायो सभी वि

वै.
१०ना
१५४

154

साल १२८ ॥ चौपई ॥ नवमैक हौ पुरषको
रूप ॥ मै भाषौं गी परम स्वरूप । निज मिभ्र
केवटनानिहार । बहुरमी मामकी नउवा
र । १२९ फल उपभोग जोई । पुरषवषाने गी
यह सोई । करे कर्म इम नोहि उवासौ । नव
नामिषय मोहन थासौ । १३० नवनो मिष
इक थो जोई । मीमांसाको दिढ गम सोई । नाम
कुमारल स्वामी वाको । कर्म विचार तिन भाषो
ताको । कर्मनि फल उपभाता जोई । उपनि
षतके दिह श्राम सोई । किंतो करै यश्र कती सो
ई । भगता नाहि करता विहोई ॥ पिमश्राम स्वरूपम
नोई । कर्म उपजो ताके वेनहि मोई । बहुरो व

कहे प्रकृति न सृजगति उपाय ॥ महदादिक
क्रम भाव्ह नाय ॥ वहु रूप नेत्तल विपाएषी
पुरुष भेउ वह कहे विशेषी ॥ १४२ ॥ मैं सम मह
न के निकट सुगई ॥ भाषे यो इहां वा सहित
ग्रुई ॥ न बातिन कसोम्ह कमे ग्लाई ॥ मै पुनि
वही सहयो बलाई ॥ १४४ ॥ ईश्वर निश्चल सग
गन उपाय ॥ पुरुष नाम पुन वही करायके
यपुकति नामै इक भई ॥ फरे होद यो बात
ग्रलई ॥ १४५ ॥ कोन तुलाइ कहा ते याई ॥ जाने
पमे बाति ग्लाई ॥ प्रभु उपन माया जाने ते ॥ य
के षान फिरन दै नाते ॥ १४६ ॥ हाणपु निईश
रहे जोई ॥ कहि विधि जगत उपावै सोई ॥ पक

वे
प्र॰ना॰
१५५

155

केहे प्रधान उपायो ॥ औरु केहे प्रमाण जायो
योसु निराइ विवेकसु जोई ॥ लागो करन उ
वारै सोई ॥ नरक विद्या लो सम भजेनी ॥ दुष्ट
धजानी सम भनेनी ॥ ५५ ॥ कारय श्रोहि निष
लनगाजैनोई ॥ सम सगल उपायो नेनो पती
बानिन मानजेई ॥ हे श्रनि शुर्ध जगमैनेई
परधान प्रमाण लो सम भनेने ॥ कलपन श्र
हे सगल ध्रुनिनेने ॥ भ्रमिनी ह श्रपावक
पैना ॥ कलपन सगल सुपन प्रभौना ॥ १ ॥
गंधर्व नगर ध्रुनिं इहि सनाला ॥ नो सम जाव
श्रमत विमाला ॥ सीपरुप निउरजो मुजेगा
वल श्रपान जनयो जन श्रंगा ॥ ५ ॥ दोहा ॥

ब्रह्मज्ञानकेउदैतेहोवतहैपुनिलीन॥ जोउ

जागेतेहोतहैसपनसगलभ्रमछीन॥१५२॥

चौपई॥ विकारसंकातिहभीतरजोई॥ सुक

मनीउवकस्मीसोई॥ संतिसदावडुजोनिस

कामी॥ नितप्रकाससदाअबिनासी॥१५३

जगतनगेवर्वनगरउपावै॥ रंचकनाहिबि

कारसपावै॥ नीलमेघअकथलअपारा॥ न

भमेकरेनरविविकारा॥१५४॥ पुरषोवाच॥

संदेहदवानलबीनसकारी॥ ओदितसिव

विवेकनिहारी॥ मेरोबीनसुनितिहरषयो

भलोविचारविवेकसुलयो॥१५५॥ दोहा॥ १

रषकहैउपनिषदनकोबहुलोकरोप्रकार

वे॰
पु॰ना
१५६

156

नरकविघाबामसनेकेसेभई३राम॥१५६॥उ
पनिषनवाच॥ सारबभईनेक्रोधमनश्चेसकीन
वषान॥कहेसीवशक्रिरहसकलविसका
रहान॥तोनेनासकनपंथकोईसकथकरे
उवार॥केसननेयाकोगहेकरेभलीविधि
मार॥१५८॥चौपइ॥ शुकषनगायणाईस्वसनाई
नवमैसीनविनारयोसोई॥कसैशुकषवई
स्परहैकोई॥नवकरणाकरनानेसोई॥१५९
उपनिषनकसोनोस्रापनजाने॥नाकोउ
नरकोनवषाने॥हरषवकनिशुकषवुधि
कहै॥किहिविधमैपरमेसरग्रहे॥१६०॥उ
पनिषनकसोपरमेसरजाई॥ ॥

तोतें बिन नहीं पुनि सोई ॥ तूं परमेसुर ते
न हि निआरो ॥ ऐसे सदा बीत निरधारो ॥ ९६ ॥
दोहा ॥ माया ग्रहे अनाद जो तां की संगति
पाइ ॥ जल हूरय पुनि बिंब ज्यौं भदेक्कै न हि
षलाइ ॥ ९७ ॥ बहुरो पुरुष बिवेक पुनि क
हौ जो रक कदोइ ॥ भगवन अरथ उपनिषद
को कहौ न निश्चै होइ ॥ ९८ ॥ चौपई ॥ मैं अ
निछिंन भिंन पुनि जोई ॥ जरामरण धर्मी
पुनि सोई ॥ नित अनंद बिदान मगाई ॥ परं
ब्रह्म मम रूप वनाई ॥ ९९ ॥ कह्यो बिवेक प
दारथ ज्ञाना ॥ अबलग तो हि भयो न हि भा
ना ॥ पदारथ ज्ञान उपाइ सु जोई ॥ कह्यो पुरु

वे
प्र॰ना॰
१५२

157

षद्रब भाषो सोई ॥ १५ ॥ कह्यो विवेक सु
नो मन लाई ॥ तो को इह वउपाइ बताई ॥ ते हूं
परके शरण भनी से ॥ एक बार वृनि लषक
हो से ॥ १६ ॥ वार व श्रमिं न करो चित नाहीं ॥ ल
षमा हि विरोध मन नाहीं ॥ लेष विरा न्म हृये
नोई ॥ १७ ॥ निष्ठ ल उपाय महर निवारो ॥ बहु
रो न न श्रद्धा निधारो ॥ न न म सीयो भाषवेदु
नाते निष्ठ ल मिटावो भेदु ॥ १८ ॥ निष्ठ ल दैष
को हर निवारो ॥ विदाने हउ श्रान्म धारो ॥
बहुर पुरहषे उपनिषद न श्रलयो ॥ नि
हेउ परं न कहो किश्रा भयो ॥ १९ ॥
उपनिषद उवाच ॥ दोहा ॥

तवतेसरवसहुइहमतिमोहफरनकेका

ने ॥ दोरीवावैउोरनेमैनबवालीभाया ॥ १९

सीनापनिरजुवंसमणिएमसीलज्ज

सभोन ॥ तिहदंडकवनमैगए तिहमैं

कीनौगौन ॥ २१ ॥ तहमंदरपरबनविषे

सथहटनस्थान ॥ ताहिनिकटजोदसा

सैभपसुकरोवखान ॥ २२ ॥ चौपई ॥ कि

तहमैभुजदंडप्रहारे ॥ तोरमणीकरकं

कनतारे ॥ सुंदरमणीसीसनेलीनो ॥ षैवे

केसबकुनडषदीनो ॥ २३ ॥ डरविदब

कुतोबनमाही ॥ दासीकरनसमेउवं

ही ॥ विकुटीममविवेकनेजान वहुविध

मेउभटयोअग्यान॥१४॥कहतोउकहषबकु
रोभयोजोई॥मोकोमगलमहनाबोमोई॥क
हिउपनिषनमहनोमननलाई॥नबमेरेहहिम
पमहाई॥१५॥नबमयमहधनकेअग्यान॥
निकसेअरषपरमबलबान॥लेकरगदाम
गलनेडानी॥नबमोकोबहरूकाइपलानी
रामोवाच॥दोहा॥ भागबिहीनबिमूढ
मेकरेमहनेअपमान॥मरेहनउरमेबबढ
मगमालीभगवान॥१६॥उकषोवाच॥दो
हा॥बेउहादिसिदसिगईदेउकबिपनमर्क
॥नबनेकौन [illegible] बिबिधिमईमोकोकरोउबा
र॥१७॥उपनिषनउवाच॥ चौपाई ॥

मीनाके ग्राहमकीओरा ॥ दोरी मैं उबर
ओममोरा ॥ नूपरट्टपरेपथिमाही ॥ ब
मीनाइ ग्राम रेमाही ॥ १९ ॥ तबमी
नाइहिनाममपिग्रावी ॥ ठेषकसोग्रारे-
महनारी ॥ मानमानयोमषोग्रलयो ॥ म
पटपंकजसीसफुकायो ॥ १८ ॥ भलीभां
तिमहिग्रंक मिलाइ ॥ हेमपीठमेलयो
विठाइ ॥ भयो बिनातनिषलतिनजा
नयो ॥ बकुरममोकोपकुवषानयो ॥ १९ ॥
दोहा ॥ मानइरोनिहवीनमैंनरोकरय
पमान ॥ उष्टयथमटरमजेनाहिइने
भगवान ॥ २० ॥ चौपई ॥ श्रीपनयोमष-

वे॰
प्र ना॰
१५२

159

आपबखाने॥ इहसूजे उपनिषदनमाने
कृवनरायपयाजगजेने॥ श्रमुरजोनिमे
रोतेनेते॥ १८३॥ मुनिकरगुरुघश्रनेदंतिमे
यो॥ योमघमहिमवैनअलयो॥ मुनमोय
थीमैसरवनोई॥ उपनिषदूकरावतनिश्चै
सोई॥ कविवाच॥ दोहा॥ श्रवणमननन्हस्य
नभयोनिघलसंदेहनिवार॥ निदिध्यास
नकीचाहउरभईमुगुरुघउदार॥ १८५॥ चौपई
याश्रोमरनिदिध्यासनआयो॥ वेदसभाम
हिपकृषनायो॥ विस्मभगानेमोहिपदयो
नोनैमैहावलआयो॥ १८६॥ गुरुहमारयश्रा
मयनोई॥ उपनिषदनविवेकपतिभाखोसोई

देनोको यहबातिप्रकास ॥ प्रथमाहि
तेकरी सेवास ॥ १७ ॥ बहुरविलोकस
पहुबषानी ॥ यहवेदी उपनिषतसानी
प्रकषविवेकसुसंगसहाय ॥ वलोनत्ती
कसदेउसनाय ॥ १८ ॥ देसवषाननिक
टवहुगायो ॥ उपनिषतसमेपवाकप्रल
यो ॥ देवीविसभगतिहैजाई ॥ नाहिवषा
नयोसनयसई ॥ १९ ॥ संकलपयोनदेव
नासारी ॥ यहनीकेसेश्रापनिहारी ॥ उप
निषतसवारनंस्रवभई ॥ कंनियानेउ
मैनिवमई ॥ २० ॥ औरप्रबोधचंद्रसजान
मेरोकहेसमंतपकान ॥ कुरसभावकें

वे॰
प्र॰ना
१६०

माग्रहे॥ उपनीनिषलसंबंधीदहे॥२१
ब्रह्मविद्याकेंमांजोहै॥ मननसैकरोसंबा
रणाम्होहै॥ संकरषणाविद्याउरधारा॥ मनके
उदरसंकन्याडारा॥२२॥ प्रबोधचंद्रहतनउ
निजाहै॥ उकहसमसपरणाकीजोम्होहै॥ विवे
कसहितनेमेरपासा॥ उपनिषनकरोश्रव
सहजनिवास॥२३॥ दोहा॥ विभ्रमभाति
नोभाखोम्होहैकरौनश्रौर॥ थोकहिसंगवि
वेककेगाहैरकेंनसहौरा॥२४॥ नियपयास
नउनिउकहवकेकीनोज्ञानप्रवेस॥ पको
सउकहवउरध्याननतवजाकरहेहैकलेस
नेपथमाहिप्रवेसकरहोनोनेनमिलाहै॥

यहसुननृपसुधिआइउरबोलयोसहज
सुभाय ॥ १९६ ॥ मनवषससथलफोरकैकं
याभईप्रकास ॥ सहसमयश्रीमोहकोकी
नोपकयास ॥ १९७ ॥ नदितासससहस
कीमहाहिमकोतिमरमिटाइ ॥ श्रेनधो
नभिनमैभईश्रेमोनूपदिषाइ ॥ १९८ ॥ य
हप्रबोधससिउपजियोनांकोबानबि
लास ॥ सभाप्रवेसप्रबोधनबकीनोबा
हूकाल ॥ १९९ ॥ कहांगयोकिनभयोव
हलीनभयोननकाल ॥ जोउपजेभयो
योसोमैबोधविलास ॥ २०० ॥ प्रकरमैदी
सभासयोयहहैपुरषउदार ॥ बलोससीप

मयाहिकेककोसुणाटजहोव ॥२-१॥ जाइस
मीपसुपुरुषकेंभगवानसुणोउवाव ॥ है
प्रवोधउपनिषतसुनवेंदोपाटनिहोव ॥
२-२ ॥ पुरुषविलोकप्रनेंदउवहेसुनपव
मस्वरूप ॥ मिलोसुमेरेअंकमेकीजेमीन
लस्वरूप ॥ २-३ ॥ मिल्योप्रवोधसुपुरुषको ।
मीनलवेंदउदोव ॥ पुरुषप्रनेंदसुहोइउव
लागोकवनउवाव ॥ २-४ ॥ प्रहोतिमवपट
फाव्योभयोप्रभातस्वरूप ॥ निषत्लकले
सविनासिप्रापायोपवमसुरूप ॥ मोहसुं
पंचविनासकवनीटविकल्पसुमाव ॥ वो
पसमीइहउपज्योजाकोप्रभाप्रणाव ॥ २-६

सवैया॥ आनंपगानमइसूणीजोवहसूणी

रूपसदेतनदिषाई॥ बियनजोसभसुहाभई

बिसीउकथेनराउबलनाई॥ आनंकिना

नाथथ्रूभपसुमिटीनिजआनमकी

कलषाई॥ बोधकेसभकाजसुषणाघ

नसहूनभपसुषथाई॥२०७॥ दोहा॥ सर्वा

मनीविवेकपनिधांनियमादिकपार

सवीनपभविसजोसोहमभपउदार

हरिकीभगतिप्रमाधनेभपकिनारथ

रूप॥ बियनसगललमिटायापार्श्योध्या

नसुरूप॥२०९॥ बेद्दकेनसुमोनगाहिस

निकरिकीनोध्यान

वं॰
प्र॰ना॰
१६२

162

॥दोहा॥ जाहिंत्तानहि
नभवननितित्तिभणभवारननमाहि॥ना॰
कोणाइसमनिभयोमैनिजभौनसमाहि
विस्मभातिश्राईनैवेउरमैहरखश्रापार॥
श्राइसमीपसुकरखकेकीनेपरउवार॥२२॥
वरुनकालकरफलेजगमोहमनोरथ॰
श्राज॥सोतिश्रातिसनवपिछोभणसरा
लमसकाज॥२३॥पुरखकहोनवक्रि॰
पानेकोफलउहिकरश्राहि॥पिमोसखो
श्रलाइकरपरयोसवरननमाहि॥२४॥
विस्मभातिसउठाइतिसकीनोरहैउवा
र॥हनकहोशिग्याकाजनककुपनिमैकरौ

तिहाव॥२१५॥पुरुषएकसोम्रबयाहिनेववे
नण्यारेकाज॥जीनम्रगंननविवेकत्रिपभ
योक्रिनारथम्राज॥२१६॥रजिविहीनम्रनं
दपदथाण्योनांहिसमोह॥विसभगाति
पदवंदनाकरेकाजसभनोहि॥२१७॥सवै
या॥यदपिपुरीम्राहिमनारथनदपिमा
नासपडुवरे॥हविकैम्रनुमानकैरेवरषा
वनम्रपनिभ्रूमसपलकरे॥नेकरणाक
रलोकमहानमम्रन्मकोनमहरहवे॥भ
वसागरथारविषैनामननागाहिवोपज
हाजसणारपवे॥२१८॥दोहा॥प्रनकतनन
जानमाकीरतिवरमाभूप॥मानोछिनम

वं॰
प्र॰ना॰
१६३

163

भनाटहैकोविटलषेंप्रनूप॥२१॥सवैया

याहिनाटकेहेरसभूपतिकेउरमाहिस॰

भासभसानभयो।नजियाजगमाहिकंप

सबडेसभपंथमहीपतिचीतिलयो॥ब

डुनाटककैहैभवमंडलमैनरनाहनकोय

हनाटमयो॥विसमाइरहोउरभीतरसो

सिलषनकोबडुदानदयो॥२२॥दोहा॥

कहिबेकोयहनाटहैदरपनग्रहेसचार

पाबेपावनमोषकोकीनेयारबिचार॥२३

गौरीजननीलोकमैराइप्रजनकमहान

गुलाबसिंघसुतताहिकेनाटककोनब

खान॥२४॥कीरतिसरनलोकमैसुरनपर

मानैद ....

जिह अज्ञान निवारयो दीनी मोष अपार
मान सिंघ गुरचरण को बंदो बारंबार २२४

संकरछंद ॥ इमवेदशास्त्र बहुवेद संवत लो
कभीरज्ञान ॥ नभमासमश्रिगुणि निवासेरद
समीवदीपहिचान ॥ गुरमान सिंघपदार
विंदअलंबन उरठान ॥ कहषेत प्रावीकुल
नटयहु कीन ग्रिंथ बषान ॥ २२५ ॥ ॥

इति श्रीमत मान सिंघ चरण सिषत गुलाब
सिंघेन गोरीराइ आत्मजेन विरचते प्रबोध
चंद्रनाटक की जीवन मुक्ति को नाम षष्टोऽ
ध्यायः ६ ॥ संपूर्णम् समाप्तम् संवत १९५.

नं० ५४०६-घ
प्रबोधचन्द्रोदय भाषाटीका (नाटकम्)
पत्राणि १६४ (सम्पूर्णम्)

१६४

164

४≡) सहस्र १॥००

२॥≡॥) ४४७ ११७

६॥॥॥)

२२



